



1059



ISSUE : VII, Vol. I
IARR

**IMPACT FACTOR
6.10**

ISSN 2454-3106
June 2019 To May 2020

INDEX

| Sr. No | Title for Research Paper | Page No. |
|--------|---|----------|
| 1 | Emerging Indian Banking : It & Virtual Banking Dr. P. T. Pawar | 1 |
| 2 | Changing Perspectives of Human Right In India Rajesh P. Kuchekar | 6 |
| 3 | The Lower And Uppeer Solutions Method For First Order Differential Inclusions With Nonlinear Boundary Conditions S. B. Biradar | 13 |
| 4 | Dr. Ambedkar's Quest For Women Empowerment In India Prof. Prashantkumar Wananje | 25 |
| 5 ✓ | 'घार' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन एवं समस्याएँ डॉ. रमाकांत मोहनराव विडवे | 32 |
| 6 | इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में छात्र जीवन हनुमंत दत्त शेवाळे | 37 |
| 7 | १९९१ के नवीन औद्योगिक धोरण आणि आर्थिक सुधारणा डॉ. मधुकर श्रीराम ताकतोडे | 41 |
| 8 | मराठवाड्यातील दुष्काळ : कारणे व उपाय डॉ. राजकुमार जोशी | 45 |
| 9 | जल प्रदुषण समस्या व उपाययोजना एक अभ्यास डॉ. जे. के. वाघमारे | 49 |
| 10 | सिंधु संस्कृतीकालीन सामाजिक जीवनाचा अभ्यास योगेश मधुकर चव्हाण | 53 |
| 11 | लातूर जिल्ह्यातील पारंपारिक महाविद्यालयीन संस्थांमधील माहिती तंत्रज्ञानाच्या उपयोजना संदर्भातील संशोधनाचा दृष्टीकोन : एक अभ्यास मारुती एस. विडवे, डॉ. बालाजी एन. टाकणे | 57 |

PRINCIPAL
Swami Vivekananda Mahavidyalaya
Mukramabad Te. Mukhed, Dist. Nanded



'घार' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन एवं समस्याएँ

डॉ. रमाकांत मोहनराव विजये

हिन्दी विभाग,

स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,

मुकामबाद, वि. नांदेड

पृष्ठभूमि

कथाकार संजीव ने आधुनिक मानव सभ्यता की अत्यन्त गंभीर और समग्र भौतिक सुविधाओं से कोसेरी दूर रहनेवाले आदिवासियों का चित्रण कर हिन्दी कथा साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाई है। संजीव कलात्मकता की अपेक्षा सीधे-साधे ढंग से उपन्यासों की कथावस्तु का निर्माण कर पाठक के हृदय को स्पर्श करते हैं। संजीव ने आदिवासी समाज को आदर, मान-सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान करने का कार्य किया है। संजीव ने हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन कर हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है।

संजीव का साहित्यिक परिचय

आदिवासी साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए संजीव का साहित्यिक परिचय निम्न रूप में दिया जा सकता है। तीस साल का

सागरनामा', 'आप यहाँ है', 'दुनिया की सबसे हमीन औरत', 'प्रेत मुक्ति', 'ब्लैक होल', 'खोज', 'गलों के मोड़ पर मून-सा कोई दरवाजा' आदि संजीव के कथा संग्रह हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में आदिवासी जीवन की वासना और संघर्ष का वास्तविक चित्रण किया है। किसनगढ़ के अहेरी, 'भार', 'सर्कस', 'सावधान! नीचे आगू है', 'पवि तले की दूध', 'जंगल जहाँ से शुरू होता है', 'सुबहार' और 'आकाश' आदि उपन्यास हैं। उपन्यासकार संजीव अपनी विभिन्न साहित्यिक विधाओं द्वारा आदिवासियों की समस्याओं को देश और दुनिया के सामने प्रस्तुत करते हैं। 'भार' उपन्यास बिहार के संथाल परगना के कोयला खदानों में काम करनेवाले श्रमिक आदिवासियों का मार्मिक और सूक्ष्म चित्रण करता है। आदिवासी जीवन, संघर्ष और घेतना को अभिव्यक्त करनेवाले इस उपन्यास के केंद्र में संथाल परगना का परिचय



Indo Asian Research Reporter (IARR)

अंचल और संथाल आदिवासी विद्रोही चेतना का प्रतीक नारी 'मैना' है। संजीव के उपन्यास मात्र संख्यात्मक ही नहीं तो गुणात्मक दृष्टि से भी आदिवासी कथा साहित्य में महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय है।

आदिवासी जीवन :-

आदिवासी समाज सभी सुविधाओं से दूर जंगलों में अपनी एक अलग जनबोली का प्रयोग करता हुआ जीवन यापन करता है। शिकार और जड़ी-बुटी बेचना ये उनके उदरनिर्वाह के साधन हैं। 'धार' उपन्यास में संजीव ने बिहार राज्य के संथाल परगना के बोंसगडा गाँव का परिवेश के साथ आदिवासी जीवन और संस्कृति का यथार्थ चित्रण किया है प्रस्तुत शोधलेख में 'धार' उपन्यास का आदिवासी जीवन और समस्याओं की दृष्टि से अनुसंधानात्मक विश्लेषण किया गया है।

जात पंचायत:-

आज भी आदिवासी समाज में जात पंचायत का निर्णय अंतिम माना जाता है अगर कोई इस निर्णय को नहीं मानता तो उन्हें जाति से बहिष्कृत करवाकर कड़े से कड़ा दंड दिया जाता है। उपन्यास में मैना जेल से ही एक बच्चा और मंगर के साथ आती है। तो जात पंचायत मंगर पर सौ रुपये का दंड लगाकर मैना को पुनर्विवाह करने की अनुमति देती है। जब कोकड और टेंगर पंचायत के निर्णय की उपेक्षा करते हैं तो उन्हें जातिच्युत किया जाता है। 'कोकड किस्कु, टेंगर दुडू और जिन सौतालों ने लॉबिर की उपेक्षा कर बिना हमारी राय लिये मैना का श्राध किया है, उन्हें लॉबीर इसी दम से जातिच्युत करती है।'

परिवार और स्त्री-पुरुष संबंध:-

संथाल आदिवासीयों में स्त्री-पुरुष संबंध दो स्तर पर अलग-अलग दिखाई देते हैं। एक ओर वे सक्त हैं तो व्यक्तिगत स्तर पर स्वच्छन्द भी दिखाई देते हैं। आदिवासी समाज में पारिवारिक संबंध भी किसी भी कारणवश बनते बिघडते दिखाई देते हैं। मैना और अन्य स्त्रियों का पौन शोषण करना पुलिस, सरकारी अधिकारी और ठेकेदार अपना हक्क समझते हैं। बसंती, तुरिया और शोभा अपने परिवार पालन के लिए अपना शरीर बेचकर रुपए कमाती हैं। मैना कहती है, 'पर एक बात जान ले, मैना का जब मन चाहा मरद किया, मन से उतर गया, छोड दिया, मरजी से किया, मजबूरी से नई।' 'कृकृ' वह फोकल की परित्यक्ता है, मंगर को बीवी है, अविनाश से नरम संबंध रखती है सब एक साथ और इसके साथ बस्ती की सरदार है।'

धर्म एवं देवी देवता:-

आदिवासी लोग प्रकृति पूजक, देवताओं के उपासक और दैववादी होते हैं। उनका देवता ही उनका रक्षक, रोगमुक्त करनेवाला, फसल रोजी-रोटी दिलानेवाला होता है। उत्सव, यात्रा, सार्वजनिक भोज, मंत्र पाठ आदि पारंपारिक परंपराओं का वे पालन करते हैं। उनके देवता मारांबुरु पर उनकी अत्याधिक आस्था होती है, साथ ही बधना देवी, कालीमाई, हनुमान, सर्वमंगला देवी आदि देवताओं को भी सौताल आदिवासी मानते हैं।

अंधविश्वास:-

संथाल आदिवासी कई अंधविश्वासों को मानते हैं। जैसे देवी-देवता, भूत-प्रेत, डायन, बलि प्रथा आदि बातों में विश्वास रखते हैं। यहाँ



Indo Asian Research Reporter (IARR)

तक की पैना जहाँ रहती है उसे लोग भुतिगा डिब्बा मानते हैं। भूत-पैतों को खूब करने के लिए पशु-पक्षियों के बलि दिये जाते हैं। शंकर की भीमार पत्नी का भूत उतारने के लिए ओझा को बुलाया जाता है। सब लोग पैना की भाँ को डायन और पैना को डायन की बेटी मानते हैं। यहाँ तक पैना की भाँ को डायन समझकर भिन्नाले मार-पिटकर गाँव से खदेड़ देते हैं। "इधर गाँव में जब तेजाब को बहा हुआ पानी भी के ब्याग का पैरा घर गया तो उसका बाप ओझा का पास गया। ऊँ शाल का पत्ता में तेल लगा के मत्तर पड़ा, बोला पैना का भाँ डायन है, उसका चलते-ई से सब होता। उसको जब मारा तो वो खेत में गिर पड़ा भीत बिन्ती किया, हम डायन नहीं है, इतना पैसा कर्जा से देगा। लेकिन कोई माना नहीं।"

लोकसंस्कृति :-

बरसगडा के आदिवासी धार्मिक पर्व और मोसम और ऋतु के अनुसार उत्सव मनाते हुए दिखाई देते हैं। उत्सवों में नाचना-गाना, भोजन भोजन और भराव की भी व्यवस्था होती है। उपन्यास में पैना द्वारा दिया गया, भोज, दुमर का आयोजन, जनखदान की आमसभ का आयोजन और ब्राह्म भोज, सीताली गीत 'लेयाड माहा भारे रे' गया जाना, सांस्कृतिक दल द्वारा जंगल संभाल जागरण गीत नृत्य प्रस्तुत करना आदि प्रसंगों में संभाल आदिवासियों की लोकसंस्कृति का चित्रण हुआ है।

व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति :-

'भार' उपन्यास की कथा कौरयला खदानों में मजदूरी करनेवाले संभाल आदिवासी समाज का टेकेंदारी द्वारा किया गया आर्थिक भ्रंश पर

आधारित है। आदिवासियों की आर्थिक स्थिति और दुःखदशा का चित्रण उपन्यास में हुआ है। यहाँ तक कि बसंती, तुरिया और भोभा जैसी महिलाएँ पैत की आम मित्रों के लिए सत को एक डार्कने को अपना भीत बेचती हैं। 'भार' उपन्यास, कौरयला विकास, भेड़ बकरियाँ पालना-बेचना, मुर्गी-मुर्गियाँ बेचना, कपड़े धोना आदि। काम से ही मजदूर बनना ही उनकी विवर्ती है। सीतामण छोटे-छोटे बच्चों से मालगाड़ी से भीनी बजोरों का काम चंद पैसे देकर करताता है। ये लोग काम न मिलने पर चोरी भी करते हैं। जैसे कौरयला चोरी करके बाजार में बेचा जाता है। कभी-कभी गिनत कर और मछली पकड़कर भी अपना उदरनिर्वाह करते हैं।"

समस्याएँ:-

भौतिक सुविधाओं से दूर, अविद्या और अज्ञान के तले दबे आदिवासियों के विकास के लिए सरकार कई योजनाएँ लाती है। लेकिन सरकार की नीति से आदिवासियों के विकास कागम विनाश की कहानी लिखि जा रही है। परिणामतः विस्थापन, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, प्रदूषण, बेरोजगारी, अवैध संबंध, लैंगिक भ्रंश आदि समस्याएँ आदिवासी आँचलों में दिखाई देने लगी है।

अभिविश्वास की समस्या: -

संभाल परगना के बरसगडा गाँव के आदिवासियों में कई प्रकार के अभिविश्वास दिखाई देते हैं जो उनके विकास को बाधा पहुँचाते हैं। सफलता के लिए सामदेवता से प्रीतिया रखना, भूत-पैत, डायन आदि पर विश्वास करना, पशु-पक्षियों के बलि देना आदि अभिविश्वास



Indo-Asian Research Reporter (IARR)

संथालों में दिखाई देते हैं। मैना की माँ को दायन समझकर गाँव से भगाना, शंकर की पत्नी की विमारी के लिए ओझा को बुलाना, शंकर के मुँह को भूत छ्दाय उठाना, मंत्र से शापमुक्ती मिलना और मृत अंगर का फलेजा खाने दायन का आना आदि अंधविश्वासों का चित्रण उपन्यास में हुआ है।

शोराण की समस्या :-

धार उपन्यास की मुख्य समस्या आदिवासियों के शोषण की समस्या है। संथालों का चारों तरफ से शोराण ही शोराण होता है। कभी धार्मिक शोषण, कभी आर्थिक शोषण तो कभी लैंगिक शोषण का उन्हें सामना करना पड़ता है। पाप—पुण्य, स्वर्ग—नरक और पितरों की बात करके ओझा और पंडित धर्म के आधार पर शोराण करते हैं। संथाल महिलाओं का यौन शोषण भी एक भयानक समस्या है। बसंती, तुरिया और मैना जैसी कई स्त्रियां ट्रक ड्राइवर, सरदार और अमियों की हवस का शिकार बनती हैं। "मैना को भी उन भूखे भेड़ियों ने नहीं छोड़ा। अपने पति फोकल के अलावा, मंगर, जेलर, पंडित सांतायम जाने कितने मर्दों ने उसे नोचा है।"

प्रस्तुत उपन्यास आदिवासी लोगों के जीवन संघर्ष और शोराण की यथार्थ कहानी है। जिसमें पूंजीवाद टेकंदार, माफिया, दलाल, कारखानेदार, पुलिस और बड़े-बड़े अधिकारी उनका शोराण करते हैं।

जातीय भेदाभेद की समस्या :-

उपन्यास में आदिवासियों की जातीय भावनाओं का चित्रण भी हुआ है। जब फोकल किम्कू, टेंगर दूहू संथालों की जातपंचायत की

अपेक्षा करते हैं तब उन्हें जाति से निकालकर दिया जाता है। मोडल भी ईसाई बनने पर संथाल उसे अपनी जाति से बाहर करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि संथाल आदिवासी समाज भी जातीय भेदाभेद की भावना से प्रभावित है।

धर्मतरण की समस्या :-

आदिवासियों की धर्मतरण की समस्या का चित्रण 'धार' उपन्यास में हुआ है। गरीब, अज्ञानी आदिवासियों को जीवनावश्यक सुविधाएँ देकर ईसाईयों ने ईसाई बनाया। डॉ.विश्व पट्टेजाज के अनुसार, "आदिवासियों के अशिक्षित, सीधे-सरल, भावुक और एक तरह से डरपोक होने के कारण उनके भोलेपण का फायदा बाहर के लोगों ने समय-समय पर उठाया है।" ऐसे ही उपन्यास में मोडल लालन में ईसाई बनता है। साहब लोग ईसाई बनने पर ही मर्द करते हैं अन्यथा कोई बचाने नहीं आता। मैना की फुफ्फेरी बहन मेरी इंद्रम क्रिश्चियन बनती है। "जब से मेरी क्रिश्चियन हुई थी, मैना का आना-जाना लगभग रूट नूतन था। बाप की अन्वेषित में भी ये लोग बाँसपट्ट नहीं गए थे और उसकी दुमरी पादी और लाँचिर में भी नहीं? एक जाति, और रिश्ते से इतने अन्तरण लोग-यह धरम कितना भयंकर साँप है जो सूँघ जाता है उन्हें।"

विस्थापन की समस्या :-

विकास के नाम पर विजली, बांध और कारखानों के निर्माण से हजारों गाँवों के करोड़ों आदिवासी विस्थापन करने को मजबूर हुए हैं। संथाल परगना के बाँसपट्ट गाँव में राजाव का कारखाना आने से भयानक जल और जमीन के प्रदूषण के कारण जमीन बरत बन गई है। गाँव में



Indo Asian Research Reporter (IARR)

पेट पानी की समस्या न मिलने पर संशाल दूर-दूर तक सजदुमी की तलाश में निकल पड़ते हैं। "नयी अभिनगी महादियाँ जहाँ-तहाँ खड़े साल, महूय, खजूर और ताड़ के पेड़, छेर की झाडियाँ, बसुई वंजर भग्नी, सुखती नदियाँ, सुखते कुय-तालाब, भयंकर पोखरिया खाते, जहाँ-तहाँ सोय, पड़े मुँहे-से लोसा। मन्वकीकृत पुर इलाका। इनसानो की तवेरियाँ के रूप में होकते ले जा रहे हैं देकेदार रामपुर हाट, चित्तवन, जामताडा, वही से इन पकडकर असम, बंगाल, बिहार या कहीं और? है कोई जानगुल (ओडा) जो इन्हे मन्व से शापमुक्त कर दे ?"

उपन्यासकार संजीव लिखित आदिवासी उपन्यास 'भार' में उपर्युक्त समस्याओं के साथ अन्य कई समस्याओं का चित्रण हुआ है। जो संशाल आदिवासियों की विकास से कोसो दूर रखती है। जैसे अशिक्षा और अज्ञान, जल-जंगल का विनाश, जल-जंगल और जमीन का भयानक प्रदूषण, बढ़ता औद्योगिकरण, गेजगर और श्रम की समस्या, मुलभूत आवश्यकताओं की अपूर्ती से निर्मित भूख-चोरी-दकैती, अज्ञानता, सामाजिक उगेक्षा, भाषा की समस्या, पारिवारिक समस्या और छिरियाँ पर होनेवाले कई अन्याय-अन्याचार आदि समस्याओं का चित्रण उपन्यास में हुआ है।

अतः कुलमिलाकर उपन्यासकार संजीव का उपन्यास 'भार' संशाल परगना के बीसमहा गाँव के आदिवासी जीवन का यथार्थ चित्रण करता है। साथ ही इस क्षेत्र की आदिवासी शोषण की समस्या और उसके विरोध में आदिवासियों का विद्रोह भी गैना के माध्यम से पाठकों के

साथ में संकेत हुआ है।

संदर्भ संकेत :-

- ०१, भार, संजीव, सभाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, २०११, पृष्ठ = ५३
- ०२, वही, पृष्ठ = ६४, ७१
- ०३, वही, पृष्ठ = ३७
- ०४, हिंदी साहित्य विविध विमर्ष, दूर शिक्षण संसलनालय खासगी.स.वि.जद्वि, २०१७ पृष्ठ = १०९
- ०५, हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्ष, डॉ.संजित बने, अमन प्रकाशन कामपुर, २०१४, पृष्ठ = १५९
- ०६, आदिवासी साहित्य स्वल्प एवं विश्लेषण, डॉ.शैल अहंताज बेगम अहमद, समता प्रकाशन कामपुर, २०१४, पृष्ठ = १०६
- ०७, भार, संजीव, सभाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, २०११, पृष्ठ = ७७
- ०८, वही, पृष्ठ = ३९

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education for all Subjects



INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

UGC Approved, Refereed & Peer Reviewed Research Journal

Year - X, Issue - XX, Vol. - III

**Impact Factor 6.20
(GRIPI)**

July 2019 To Dec. 2019

**JAIKRANTI ARTS AND COMMERCE SENIOR COLLEGE
ICSSR SPONSORED**

TWO DAY NATIONAL SEMINAR

ON

**"Recent Economic Reforms & Its Impact on
Industrial Development in India"**

(20th - 21st Sept. 2019)

**Editor In Chief
Dr. Avinash V. Pawar**

**PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded**

| Sr. No | Title for Research Paper | Page No. |
|--------|--|----------|
| 14 | अलीकडील आर्थिक सुधारणांपुढील आव्हाने व संघी डॉ. दिपक एम. भारती, डॉ. मेघराज जे. मोरे | 76 |
| 15 | भारताची विदेशी मांडवल गुंतवणूक आणि नवीन आर्थिक घोरण डॉ. जितेंद्र काळे | 81 |
| 16 | भारतातील अलीकडील आर्थिक सुधारणा व त्याचा उद्योगावर परिणाम शिवशक्ती शिवानंद अंबुलगे | 84 |
| 17 | आर्थिक सुधारणांचे भारतीय औद्योगिक क्षेत्रावरील परिणामांचा अभ्यास डॉ. सुर्यकांत पवार | 88 |
| 18 | मेकइन्डिंडिया आणि भारतीय उद्योगजगत डॉ. वालाजी आचार्य | 94 |
| 19 | भारतातील आर्थिक सुधारणा : घोरणात्मक बदल संतोष वालाजी पाटील, डॉ. एस.ए. मुळे | 98 |
| 20 | 1991 चे नवीन औद्योगिक घोरण आणि आर्थिक सुधारणा डॉ. मिनाक्षी निवृत्तीराव कोंगे | 103 |
| 21 | स्वच्छ भारत अभियान आणि आर्थिक विकास डॉ. सुदाम पवार | 107 |
| 22 | आर्थिक सुधारणा नंतर भारतीय अर्थव्यवस्थेवर झालेले परिणाम डॉ. आर. डी. जाधव | 112 |
| 23 | भारतातील आर्थिक सुधारणा - दशा आणि दिशा शरण शिवरुद्र निलंगेकर | 116 |
| 24 | जागतिकीकरण आणि मराठीतील अलीकडील कादंबरी डॉ. केशव आलगुले | 120 |
| 25 | औद्योगिकीकरण आणि मराठी कादंबरी डॉ. गणेश लहाने | 124 |
| 26 | जागतिकीकरण आणि मराठी भाषेवरील परिणाम डॉ. जयद्रथ जाधव | 128 |
| 27 | जागतिकीकरण आणि मराठी साहित्य राजकुमार मोरे | 131 |



भारताची विदेशी भांडवल गुंतवणूक आणि नवीन आर्थिक धोरण

डॉ. जितेंद्र काळे

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,
मुक्रमाबाद, जि. नांदेड

15

Research Paper - Economics

प्रस्तावना

सन १९९१ ला भारतीय अर्थव्यवस्था विकसित करण्यासाठी जागतिकीकरण, उदारीकरण, खाजगीकरण या त्रिसूत्रीच्या आधारावर नवीन आर्थिक धोरण स्वीकारले गेले. भारत सरकारने धोरणात्मक पातळीवर बदल करून काही निवडक क्षेत्रात गुंतवणूकीस प्रतिबंध करून इतर सर्व क्षेत्रात गुंतवणूक मर्यादा वाढवून दिल्याचे दिसून येते.

भारताची विदेशी भांडवल गुंतवणूक वाढविण्यासाठी आर्थिक धोरणांनी महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावलेली दिसून येते. कोणत्याही देशाचा आर्थिक विकास हा त्या देशातील भांडवली उपलब्धतेवर अवलंबून असतो. ज्या देशात भांडवली उपलब्धता अधिक असते ते राष्ट्र विकसित राष्ट्र म्हणून ओळखले जाते. भारतासारख्या विकसनशील देशामध्ये भांडवलाची समस्या महत्त्वाची आहे. कारण विकसनशील देश असल्यामुळे या देशाचे राष्ट्रीय उत्पन्न, उपभोग आणि बचत विकसीत देशाच्या तुलनेत फारच कमी आहे. अर्थात भारतामध्ये भांडवल निर्मितीचा दर कमी आढळतो. विकसनशील राष्ट्राला विकसीत राष्ट्राच्या बरोबरीने आणण्यासाठी परकीय भांडवलाचा पर्याय स्वीकारण्यात येत आहे.

आर्थिक विकास साध्य करण्याच्या हेतूने विदेशातून कर्ज, यंत्रसामग्री, तंत्रज्ञान, पैसा इत्यादींची केलेली आयात म्हणजे विदेशी भांडवल होय.

अविकसित आणि विकसनशील देशांचा औद्योगिक आणि आर्थिक विकास साध्य करण्याच्या दृष्टीने विदेशी भांडवलाची आवश्यकता असते. देशांतर्गत बचतींना पूरक करण्यासाठी पायाभूत सुविधा निर्माण करण्यासाठी, तांत्रिक मागासलेपणा दूर करण्यासाठी, मूलभूत आणि अवजड उद्योगांच्या निर्मितीसाठी, साधन सामुग्रीच्या पर्याप्त वापरासाठी, व्यवहारातोलातील असमतोल दूर करण्यासाठी, उत्पादन, रोजगार आणि उत्पन्न वाढविण्यासाठी, भाववाढीचा दाब कमी करण्यासाठी, सरकारी महसूलात वाढ करण्यासाठी इत्यादी दृष्टिकोनातून विदेशी भांडवलाची आवश्यकता आहे.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded



विदेशी प्रत्यक्ष गुंतवणूक आकर्षित करण्यासाठी या गुंतवणूकीची मर्यादा वाढविण्यात आली आहे. कारण गुंतवणूक ही प्रत्येक देशाच्या आर्थिक वृद्धी आणि विकासाची किल्ली आहे. विदेशी भांडवल गुंतवणूकीचे दोन प्रकार आहेत. १) थेट विदेशी गुंतवणूक २) पोर्टफोलिओ किंवा रोखा रुपी भांडवल गुंतवणूक

१) थेट विदेशी गुंतवणूक

जेव्हा विकसीत देशातील बड्या व बहुराष्ट्रीय कंपन्या अविकसित देशातील कंपन्यातील भाग भांडवल खरेदी करून व्यवस्थापनाचा ताबा मिळवितात किंवा नव्याने कंपनी सुरु करून दिर्घकालीन भांडवल गुंतवणूक करतात तेव्हा तिला थेट किंवा प्रत्यक्ष विदेशी भांडवल गुंतवणूक असे म्हणतात.

जगातील कोणत्याही देशात जेव्हा एखादी नव्याने कंपनी स्थापन होते, कंपनीचा विस्तार करते, कंपनीचे आधुनिकीकरण करते, उत्पादनात विविधीकरण करते. तेव्हा भांडवल उभारणेसाठी नव्याने शेअर्स, डिबेंचर्सची प्राथमिक रोखे बाजारात खुली विक्री करते तेव्हा विदेशी बड्या व बहुराष्ट्रीय कंपन्या नवीन शेअर्स, डिबेंचर्सची खरेदी करून थेट भांडवल गुंतवणूक करतात. या गुंतवणूकीतून मालकी हक्काचे दिर्घकालीन हस्तांतरण होते. देशातील भांडवली मालमत्तेत दिर्घकालीन वाढ होते. ही गुंतवणूक खाजगी असते तसेच स्थिर, दिर्घकालीन स्वरूपाची आणि नफ्याने प्रेरित झालेली असते.

२) पोर्टफोलिओ किंवा रोखा रुपी भांडवल गुंतवणूक

जेव्हा विदेशी भांडवल गुंतवणूकदार व गुंतवणूक संस्था देशाच्या दुय्यम भांडवल बाजारात शेअर्स, डिबेंचर्स, कर्जरोखे इत्यादी रोख्यांची व्याज, लाभांश आणि सट्टेबाजारातील नफा मिळविण्याच्या हेतूने दुय्यम खरेदी करतात तेव्हा तिला पोर्टफोलिओ किंवा रोखा रुपी भांडवल गुंतवणूक असे म्हणतात. रोखा रुपी भांडवल गुंतवणूकीतून रोख्यांच्या मालकी हक्कांचे व दाव्यांचे हस्तांतरण होते. ही गुंतवणूक सट्टेबाजीच्या हेतूने प्रेरित होवून केली जाते. या गुंतवणूकीचा हेतू कंपनीची मालकी मिळविणे, व्यवस्थापन ताब्यात घेणे हा नसतो. या गुंतवणूकीतून देशाच्या मालमत्तेत वाढ होत नाही. ही गुंतवणूक अल्पकालीन आणि अस्थिर स्वरूपाची असते.

अर्थव्यवस्थेतील देशांतर्गत भांडवल टंचाई, मागास तंत्रज्ञान, विदेशी चलनाची टंचाई इत्यादींवर मात करण्यासाठी विदेशी भांडवल गुंतवणूकीला प्रोत्साहन देण्याचे धोरण स्वीकारले गेले. मात्र जगातील एकूण गुंतवणूकीच्या मानाने भारतातील विदेशी गुंतवणूकीचे प्रमाण अल्प आहे.

आर्थिक सुधारणांच्या कालखंडात पोर्टफोलिओ गुंतवणूकीचे स्वरूप अस्थिर असलेले दिसून येते. कारण ही गुंतवणूक सट्टेबाजीच्या हेतूने अल्पकाळासाठी केली जाते. ही गुंतवणूक देशातून केव्हाही बाहेर जावू शकते. याउलट प्रत्यक्ष विदेशी गुंतवणूक ही नफ्याने प्रेरित असून

(Signature)



विद्यकातीन स्वरूपाची असते यामुळे या गुंतवणूकीला विकासयोग्य गुंतवणूक म्हटले तरी अतिशयोक्ती होणार नाही.

निष्कर्ष

भारताची लोकसंख्या आणि भूभागाच्या मानाने इतर देशांच्या तुलनेत भारतातील गुंतवणूकीचे प्रमाण फार कमी असलेले दिसून येते. मात्र नवीन आर्थिक घोरणातील सुधारणांमुळे झालेल्या विदेशी प्रत्यक्ष गुंतवणूकीमुळे महाराष्ट्र राज्य सकल अंतर्गत उत्पादनात वाढ झालेली दिसून येते. विदेशी भांडवल गुंतवणूक भारतात आल्यामुळे पायाभूत सुविधांचा विकास होण्यास मदत झाली आहे.

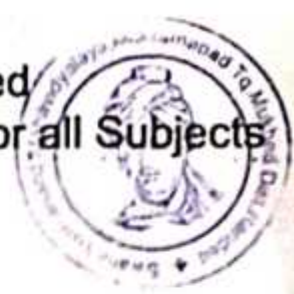
संदर्भ सूची :-

- १) महाजन घनश्री, आंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र, विद्या बुक्स पब्लिशर्स, औरंगपुरा, औरंगाबाद, २००५
- २) दत्तरुद्र सुंदरम के.पी.एम., भारतीय अर्थव्यवस्था, एस. चन्द एन्ड कंपनी लि. रामनगर, नवी दिल्ली
- ३) प्रा.एन.एल. चव्हाण - आंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र
- ४) www.fdi.gov.in
- ५) www.dipp.nic.in

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Te. Mukhed. Dist. Nanded

Kale J.P.
International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education for all Subjects



INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

UGC Approved, Refereed & Peer Reviewed Research Journal

Year - X, Issue - XX, Vol. - III

Impact Factor 6.20
(GRIF)

July 2019 To Dec. 2019

**JAIKRANTI ARTS AND COMMERCE SENIOR COLLEGE
ICSSR SPONSORED**


TWO DAY NATIONAL SEMINAR

ON

**“Recent Economic Reforms & Its Impact on
Industrial Development in India”**

(20th - 21st Sept. 2019)

**Editor In Chief
Dr. Avinash V. Pawar**


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed Dist. Nanded

| Sr. No | Title for Research Paper | Page No |
|--------|--|---------|
| 14 | अलीकडील आर्थिक सुधारणांपुढील आव्हाने व संधी डॉ. दिपक एम. भारती, डॉ. मेघराज जे. मोरे | 76 |
| 15 | भारताची विदेशी भांडवल गुंतवणूक आणि नवीन आर्थिक घोरण डॉ. जितेंद्र काळे | 81 |
| 16 | भारतातील अलीकडील आर्थिक सुधारणा व त्याचा उद्योगावर परिणाम शिवशक्ती शिवानंद अंबुलगे | 84 |
| 17 | आर्थिक सुधारणांचे भारतीय औद्योगिक क्षेत्रावरील परिणामांचा अभ्यास डॉ. सुर्यकांत पवार | 88 |
| 18 | मेकइन्डिआ आणि भारतीय उद्योगजगत डॉ. बालाजी आचार्य | 94 |
| 19 | भारतातील आर्थिक सुधारणा : घोरणात्मक बदल संतोष बालाजी पाटील, डॉ. एस.ए. मुळे | 98 |
| 20 | 1991 चे नवीन औद्योगिक घोरण आणि आर्थिक सुधारणा डॉ. मिनाक्षी निवृत्तीराव कोंगे | 103 |
| 21 | स्वच्छ भारत अभियान आणि आर्थिक विकास डॉ. सुदाम पवार | 107 |
| 22 | आर्थिक सुधारणा नंतर भारतीय अर्थव्यवस्थेवर झालेले परिणाम डॉ. आर. डी. जाधव | 112 |
| 23 | भारतातील आर्थिक सुधारणा - दशा आणि दिशा शरण शिवरुद्र निलंगेकर | 116 |
| 24 | जागतिकीकरण आणि मराठीतील अलीकडील कादंबरी डॉ. केशव आलगुले | 120 |
| 25 | औद्योगिकीकरण आणि मराठी कादंबरी डॉ. गणेश लहाने | 124 |
| 26 | जागतिकीकरण आणि मराठी भाषेवरील परिणाम डॉ. जयद्रथ जाधव | 128 |
| 27 | जागतिकीकरण आणि मराठी साहित्य राजकुमार मोरे | 131 |

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukambhid Tal. Mukhad Dist. Nanded



भारताची विदेशी भांडवल गुंतवणूक आणि नवीन आर्थिक घोरण

डॉ. जितेंद्र काळे

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,
मुळामनाद, जि. नांदेड

15

Research Paper - Economics

प्रस्तावना

सन १९९१ ला भारतीय अर्थव्यवस्था विकसित करण्यासाठी जागतिकीकरण, उदारीकरण, खाजगीकरण या त्रिसूत्रीच्या आधारावर नवीन आर्थिक घोरण स्वीकारले गेले. भारत सरकारने घोरणात्मक पातळीवर बदल करून काही निवडक क्षेत्रात गुंतवणूकीस प्रतिबंध करून इतर सर्व क्षेत्रात गुंतवणूक मर्यादा वाढवून दिल्याचे दिसून येते.

भारताची विदेशी भांडवल गुंतवणूक वाढविण्यासाठी आर्थिक घोरणांनी महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावलेली दिसून येते. कोणत्याही देशाचा आर्थिक विकास हा त्या देशातील भांडवली उपलब्धतेवर अवलंबून असतो. ज्या देशात भांडवली उपलब्धता अधिक असते ते राष्ट्र विकसित राष्ट्र म्हणून ओळखले जाते. भारतासारख्या विकसनशील देशामध्ये भांडवलाची समस्या महत्त्वाची आहे. कारण विकसनशील देश असल्यामुळे या देशाचे राष्ट्रीय उत्पन्न, उपभोग आणि वचत विकसित देशाच्या तुलनेत फारच कमी आहे. अर्थात भारतामध्ये भांडवल निर्मितीचा दर कमी आढळतो. विकसनशील राष्ट्रांला विकसित राष्ट्रांच्या बरोबरीने आणण्यासाठी परकीय भांडवलाचा पर्याय स्वीकारण्यात येत आहे.

आर्थिक विकास साध्य करण्याच्या हेतूने विदेशातून कर्ज, यंत्रसामग्री, तंत्रज्ञान, पैसा इत्यादींची केलेली आयात म्हणजे विदेशी भांडवल होय.

अविकसित आणि विकसनशील देशांचा औद्योगिक आणि आर्थिक विकास साध्य करण्याच्या दृष्टीने विदेशी भांडवलाची आवश्यकता असते. देशांतर्गत वचतींना पूरक करण्यासाठी पायाभूत सुविधा निर्माण करण्यासाठी, तांत्रिक मागासलेपणा दूर करण्यासाठी, मूलभूत आणि अवजड उद्योगांच्या निर्मितीसाठी, साधन सामुग्रीच्या पर्याप्त वापरासाठी, व्यवहारातोलातील असमतोल दूर करण्यासाठी, उत्पादन, रोजगार आणि उत्पन्न वाढविण्यासाठी, भाववाढीचा दाब कमी करण्यासाठी, सरकारी महसूलात वाढ करण्यासाठी इत्यादी दृष्टिकोनातून विदेशी भांडवलाची आवश्यकता आहे.

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Nanded



विदेशी प्रत्यक्ष गुंतवणूक आकर्षित करण्यासाठी या गुंतवणूकीची मर्यादा वाढविण्यात आली आहे. कारण गुंतवणूक ही प्रत्येक देशाच्या आर्थिक वृद्धी आणि विकासाची किल्ली आहे. विदेशी भांडवल गुंतवणूकीचे दोन प्रकार आहेत. १) थेट विदेशी गुंतवणूक २) पोर्टफोलिओ किंवा रोखा रुपी भांडवल गुंतवणूक

१) थेट विदेशी गुंतवणूक

जेव्हा विकसीत देशातील बड्या व बहुराष्ट्रीय कंपन्या अविकसित देशातील कंपन्यातील भाग भांडवल खरेदी करून व्यवस्थापनाचा ताबा मिळवितात किंवा नव्याने कंपनी सुरु करून दिर्घकालीन भांडवल गुंतवणूक करतात तेव्हा तिला थेट किंवा प्रत्यक्ष विदेशी भांडवल गुंतवणूक असे म्हणतात.

जगातील कोणत्याही देशात जेव्हा एखादी नव्याने कंपनी स्थापन होते, कंपनीचा विस्तार करते, कंपनीचे आधुनिकीकरण करते, उत्पादनात विविधीकरण करते. तेव्हा भांडवल उभारणेसाठी नव्याने शेअर्स, डिव्हेन्सची प्राथमिक रोखे बाजारात खुली विक्री करते तेव्हा विदेशी बड्या व बहुराष्ट्रीय कंपन्या नवीन शेअर्स, डिव्हेन्सची खरेदी करून थेट भांडवल गुंतवणूक करतात. या गुंतवणूकीतून मालकी हक्काचे दिर्घकालीन हस्तांतरण होते. देशातील भांडवली मालमत्तेत दिर्घकालीन वाढ होते. ही गुंतवणूक खाजगी असते तसेच स्थिर, दिर्घकालीन स्वरूपाची आणि नफ्याने प्रेरित झालेली असते.

२) पोर्टफोलिओ किंवा रोखा रुपी भांडवल गुंतवणूक

जेव्हा विदेशी भांडवल गुंतवणूकदार व गुंतवणूक संस्था देशाच्या दुय्यम भांडवल बाजारात शेअर्स, डिव्हेन्स, कर्जरोखे इत्यादी रोख्यांची व्याज, लाभांश आणि सट्टेबाजारातील नफा मिळविण्याच्या हेतूने दुय्यम खरेदी करतात तेव्हा तिला पोर्टफोलिओ किंवा रोखा रुपी भांडवल गुंतवणूक असे म्हणतात. रोखा रुपी भांडवल गुंतवणूकीतून रोख्यांच्या मालकी हक्कांचे व दाव्यांचे हस्तांतरण होते. ही गुंतवणूक सट्टेबाजीच्या हेतूने प्रेरित होवून केली जाते. या गुंतवणूकीचा हेतू कंपनीची मालकी मिळविणे, व्यवस्थापन ताब्यात घेणे हा नसतो. या गुंतवणूकीतून देशाच्या मालमत्तेत वाढ होत नाही. ही गुंतवणूक अल्पकालीन आणि अस्थिर स्वरूपाची असते.

अर्थव्यवस्थेतील देशांतर्गत भांडवल टंचाई, मागास तंत्रज्ञान, विदेशी चलनाची टंचाई इत्यादींवर मात करण्यासाठी विदेशी भांडवल गुंतवणूकीला प्रोत्साहन देण्याचे धोरण स्वीकारले गेले. मात्र जगातील एकूण गुंतवणूकीच्या मानाने भारतातील विदेशी गुंतवणूकीचे प्रमाण अल्प आहे.

आर्थिक सुधारणांच्या कालखंडात पोर्टफोलिओ गुंतवणूकीचे स्वरूप अस्थिर असलेले दिसून येते. कारण ही गुंतवणूक सट्टेबाजीच्या हेतूने अल्पकाळासाठी केली जाते. ही गुंतवणूक देशातून केव्हाही बाहेर जावू शकते. याउलट प्रत्यक्ष विदेशी गुंतवणूक ही नफ्याने प्रेरित असून

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tal. Mukhed. Dist. Nanded




दिर्घकालीन स्वरूपाची असते यामुळे या गुंतवणूकीला विकासयोग्य गुंतवणूक म्हटले तरी अतिशयोक्ती होणार नाही.

निष्कर्ष

भारताची लोकसंख्या आणि भूमागाच्या मानाने इतर देशांच्या तुलनेत भारतातील गुंतवणूकीचे प्रमाण फार कमी असलेले दिसून येते. मात्र नवीन आर्थिक घोरणातील सुधारणांमुळे झालेल्या विदेशी प्रत्यक्ष गुंतवणूकीमुळे महाराष्ट्र राज्य सकल अंतर्गत उत्पादनात वाढ झालेली दिसून येते. विदेशी भांडवल गुंतवणूक भारतात आल्यामुळे पायामूत सुविधांचा विकास होण्यास मदत झाली आहे.

संदर्भ सूची :-

- १) महाजन घनश्री, आंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र, विद्या बुक्स पब्लिशर्स, औरंगपुरा, औरंगाबाद, २००५
- २) दत्तरुद्र सुंदरम के.पी.एम., भारतीय अर्थव्यवस्था, एस. चन्द एण्ड कंपनी लि. रामनगर, नवी दिल्ली
- ३) प्रा.एन.एल. चव्हाण - आंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र
- ४) www.fdi.gov.in
- ५) www.dipp.nic.in


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Nanded

MAH/MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta[®]
Peer-Reviewed International Publication

September 2019
Special Issue 02



MAH/MUL/03051/2012

ISSN :2319 9318



Special Issue-02, September 2019



Impress

Impactful Policy Research in Social Science



One Day Interdisciplinary National Level Seminar
on
**SELF HELP GROUPS AND SOCIO-ECONOMIC
EMPOWERMENT OF WOMEN**
Friday, 27th September, 2019



Organized By

Department of Economics

Shri Balaji Sansthan, Deulgaon Raja's

SHRI VYANKATESH ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE

Deulgaon Raja, Dist. Buldhana- 443 204.

NAAC Re-accredited at 'B' Level

Editor

Dr. Dnyaneshwar Gore



Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta.Mukhed.Dist.Nanded

Advisory Committee

Prof. Dr. Avinash Mohril
Dean, Faculty of Humanities,
Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati.

Prof. Dr. Dinesh Nichit
Dean, Faculty of Commerce & Management,
Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati.

Prof. Dr. Ramdas Kahore
President, Marathi Arthadhastra Parishad and
Former Head, R. T. M. N. University, Nagpur.

Prof. Dr. Vinayak Bhise
Former President, Marathi Arthadhastra Parishad and
Former Head, Dept. of Economics, Dr. B. A. M. University, Aurangabad.

Prof. Dr. R. S. Solunke
Former Head and U. G. C. Emeritus Professor,
Dr. B. A. M. University, Aurangabad.

Prof. Dr. Prakas Pawar
Executives President, Marathi Arthadhastra Parishad and,
Head, Dept. of Economics, Late Sow. Kamlati Jankar Mahila Mahavidyalaya, Parbhani.

Dr. Dhanashri Mahajan
Professor & Head, Dept. of Economics,
Dr. B. A. M. University, Aurangabad.

Dr. Sneha Deshpande
Professor & Head, Dept. of Economics,
Head, R. T. M. N. University, Nagpur.

Organizing Committee

Prin. Dr. Gajanan B. Jadhav (Convener)
Prof. Dr. Dnyaneshwar V. Gore (Coordinator)
Prof. Dr. Narendra H. Shegokar (Member)
Prof. Dr. Sudhir D. Chavan (Member)
Prof. Dr. Rajendrasing H. Devare (Member)
Prof. Dr. Anant M. Awati (Member)
Prof. Sandip B. Jagtap (Member)
Prof. Dr. Vinod R. Bansile (Member)



www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

| | |
|---|-----|
| 36) वसुधै कुर्वन् भद्रं महीष्यन् स्वर्गमीकरोति पुरुषोत्तम रंगराज काटे, सोलापूर | 136 |
| 37) जागत्य शिक्षणक्षेत्रातील व्यावसायिका वसुधै कुर्वन् भद्रं डॉ. शिवाजी टण्डू आमारे, बुलढाणा | 138 |
| 38) महिला स्वयंसेविकांनी काढलेली एक अभ्यास म. डॉ. माधुरी अश्विनी देगमुख, बुलढाणा | 142 |
| 39) व्यावसायिका वसुधै कुर्वन् भद्रं — एक अभ्यास डॉ. विष्णू एकनाथ गुमटकर, सोलापूर | 146 |
| 40) प्रयोग एवं गरीब महिलाओं के आर्थिक विकास में स्वर्ग करती अन्न क्रम ... डॉ. रवेदा रानी, इन्दौर | 151 |
| 41) महिला स्वयंसेविकांनी काढलेली एक अभ्यास म. वाय. एम. राजगुरू, बुलढाणा | 155 |
| 42) महिला स्वयंसेविकांनी काढलेली एक अभ्यास म. डॉ. जिवेंद्र पांडुरंगराव काळे, ता.मुखेंड वि.नाटिड | 157 |

Vidya Varta
Educational
YouTube Channel

SHARE

LIKE

COMMENT

SUBSCRIBE

PRINCIPAL
Savitri Virekhand Mahavidyalaya
Mukambur, Tal. Mukambur, Dist. Solapur

Dr. M. M. Gaikwad

2019-20

sociology



IMPACT FACTOR
6.20

ISSN 2250-169X

International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects




VISION

RESEARCH REVIEW

UGC APPROVED, REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

| | | |
|---|--|---|
| <p>Issue - XVII, Vol. - V Year-IX, Bi-Annual(Half Yearly) (June 2019 To Nov. 2019).</p> | <p>CHIEF EDITOR Dr. Bajaji G. Kamble Professor & Head, Dept. of Economics, Dr. Babasaheb Ambedkar College, Latur, Dist. Latur. (M.S.)India.</p> | <p>SPECIAL EDITOR Dr. E. Sivanagi Reddy "Sihapath" Dept. of Archaeology & Museums, Hyderabad (A.P.)</p> |
| <p>Editorial Office : 'Gyandev-Parvati', R-9/139/6-A-1, Near Vishal School, LIC Colony, Pragati Nagar, Latur Dist. Latur - 413531. (Maharashtra), India.</p> | EXECUTIVE EDITORS | |
| <p>Contact : 02382 -241913 9423346913 / 7276301000 9637935252 / 9503814000</p> | <p>Dr. Sachin Napate Pune, Dist. Pune M.S.</p> <p>Michael Strayss, Director, International Relation & Diplomacy, Schiller International University, Paris, (France)</p> <p>Dr. Nilam Chhanganli Dept. of Economics, S.K.N.G. College, Karanja Lad, Dist. Sashim(M.S.)</p> | <p>Verena Blechinger Talcott Director, Dept. of History & Cultural Studies, University of Berlin, Berlin (Germany)</p> <p>Dr. Deelip S. Arjune Professor, Head, Dept. of History J. E. S. Mahavidyalaya, Jaina, Dist. Jaina (M.S.)</p> <p>Dr. Rajendra R. Gawhale Head, Dept. of Economics, G. S. College, Khangaon, Dist. Buldana (M.S.)</p> |
| <p>E-mail : interlinkresearch@rediffmail.com visiongroup1994@gmail.com mbkamble2010@gmail.com</p> | DEPUTY EDITORS | |
| <p>Published By : Jyotichandra Publication Latur, Dist. Latur - 413531. (M.S.)</p> | <p>Dr. Rajendra Ganapure Professor, Head, Dept. of Economics, S. M. P. Mahavidyalaya, Murum, Dist. Osmanabad (M.S.)</p> <p>Dr. Vijay R. Gawhale Head, Dept. of Commerce, G. S. Mahavidyalaya, Khangaon, Dist. Buldana (M.S.)</p> <p>Dr. Mahadeo S. Kamble Dept. of History Vasant Mahavidyalaya, Kaj, Dist. Beed (M.S.)</p> | <p>Dr. B. K. Shinde Professor, Head, Dept. of Economics, D. S. M. Mahavidyalaya, Jintur, Dist. Parbhani (M.S.)</p> <p>Bhujang R. Bobade Director, Manuscript Dept., Deccan Archaeological and Cultural Research Institute, Hyderabad (A.P.)</p> <p>Dr. S. R. Patil Professor, Dept. of Economics, Swami Vivekanand Mahavidyalaya, Shirur Talband, Dist. Latur (M.S.)</p> |
| <p>Price : ₹ 200/-</p> | CO - EDITORS | |
| | <p>Dr. Allabaksha Jamadar Professor, Head, Dept. of Hindi, B.K.D. College, Chakur, Dist. Latur (M.S.)</p> <p>Dr. Shyam Khandare Dept. of Sociology, Gandhinagar University, Gadhchiroli, Dist. Gadchiroli (M.S.)</p> | <p>Dr. Murlidhar Lahade Dept. of Hindi, Janki Mahavidyalaya, Bansarola, Dist. Beed (M.S.)</p> <p>Dr. M. Veeraprasad Dept. of Political Science, S. K. University, Anantpur, Dist. Anantpur (A.P.)</p> |


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tal. Mukhed Dist. Nanded

INDEX

| Sr. No | Title for Research Paper | Page No. |
|--------|---|----------|
| 1 | Multiculturalism in Karnataka's The Importance of Loss O. S. Pawar | 1 |
| 2 | Johannes Kepler : An Astronomer Dr. Premdas Manohar Kattinod | 2 |
| 3 | Effect Of Practicing Sports Among People with Various Heart Diseases Khan Nihal Akhmat | 10 |
| 4 | विद्यार्थी की सामाजिक उत्तरदायिता डॉ. विलास नर्मोत्तम कांबळे | 11 |
| 5 | मराठी लिखाणातील अक्षर- एक अन्वय डॉ. मंगल गवई | 11 |
| 6 | सा साहित्य : ऐतिहासिक अन्वयसाध्य विद्या डॉ. मंडिर बी. तटोड | 11 |
| 7 | मराठी विनोदात्मक लेखन साहित्याचे एक उदात्त नमूने सादर अशोक भगत गणेश काकडे | 17 |
| 8 | मराठीय अक्षरव्यवहार मूळीन अक्षरव्यवहार डॉ. इमाकन अशोको मंडिर | 18 |
| 9 | डॉ. अशोकभगतच्या कार्याचा समावेशात्मक अन्वय डॉ. मा. म. गायकवाड | 19 |



Issue : XVII, Vol. V
VISION RESEARCH REVIEW

IMPACT FACTOR
6.20

ISSN 2250-169X
June 2019 To Nov. 2019

INDEX

| Sr. No | Title for Research Paper | Page No. |
|--------|---|----------|
| 1 | Multiculturalism in Kiran Desai's 'The Inheritance of Loss' O. S. Pawar | 1 |
| 2 | Johannes Kepler : An Astronomer Dr. Premdas Manohar Rathod | 8 |
| 3 | Effect Of Practicing Sports Among People with Various Heart Diseases Khan Nehal Ahemad | 17 |
| 4 | किन्नरो की सामाजिक अवहेलना डॉ. विलास नागोराव कांबळे | 22 |
| 5 | गरोदर स्त्रियांसाठी आहार- एक अभ्यास डॉ. मिनल गावंडे | 27 |
| 6 | संत साहित्य : तौलनिक अभ्यासाच्या दिशा डॉ. पंडित जी. राठोड | 33 |
| 7 | भटक्या विमुक्तांच्या जीवन जाणिवांचा वेध घेणारा समर्थ लेखक : अशोक पवार गणेश काकडे | 42 |
| 8 | भारतीय ब्रीडाप्रकारात मुस्लीम खेळांडुचे योगदान डॉ. प्रभाकर आवाजी पंडित | 48 |
| 9 | डॉ. आंबेडकरांच्या कार्याचा समाजशास्त्रीय अभ्यास डॉ. मा. म. गायकवाड | 53 |


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed, Dist. Nanded



डॉ. आंबेडकरांच्या कार्याचा समाजशास्त्रीय अभ्यास

डॉ. मा. म. गायकवाड
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख,
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,
मुक्रमाबाद, जि. नांदेड

Research Paper - Sociology

दलित चहवळ व्यापक होणे आवश्यक नव्हे तर काळाची गरज आहे. आज दलित चळवळीपुढे उभे असलेले अत्यंत महत्वाचे व मुलगामी असे आव्हान उभे आहे. ते आव्हान पेलण्याची क्षमता त्यांच्यात किती आहे किंवा कितपत आहे यासंबंधी निश्चितपणे सांगणे अवघड आहे, परंतु तमाम अस्पृश्य जातींनी राजकीय स्वार्थाची लक्ष्मरे बाजूला ठेवून अंतर्मुख विचार केल्यास हे शक्य होईल. परंतु त्यासाठी कोणीतरी पुढाकार घ्यावयास हवा. कोणी प्रतिसाद घ्यायला वा. त्यातूनच काही निष्पन्न होऊ शकेल. त्यासाठी परस्परांनी आपल्या मनाची दारे अधिक मोठी करणे आवश्यक आहे.

स्वधर्म, स्वजात, श्रेष्ठत्व ही गुहा मानवांची लक्षणे बाळगणाऱ्या संस्कृतीने येथील फार मोठा वर्ग गुलामीच्या खाईत लोटून दिला होता. सापांना दूध आणि मुग्यांना साखर घालणाऱ्या या संस्कृतीने येथील अस्पृश्य मानल्या गेलेल्या माणसांच्या माणसाला पशूहूनही दत्तर अशी वागणूक दिली. या देशातील पायामूत माणूस येथल दगळ देव आणि देवळांच्या संस्कृतीच्या पायात पार गाडून गेला होता. अशा प्रकारच्या माणूसपण हरवलेल्या माणसांना माणूसकी मिळवून देण्यासाठी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी अहोरात्र कष्ट सोसले. अस्पृश्य सारा एक. त्यांचे दुःख, त्यांची वेदना, त्यांच्या जागिवा एक आहेत हे त्यांनी जाणले होते आणि त्यानुसार त्यांनी तमाम अस्पृश्यांना एकत्रित करून प्रचंड लढा उभारण्याचा प्रयत्न केला. परंतु याचे भान नसलेली काही माणसे मात्र डॉ. बाबासाहेबांच्या कार्याला व त्यांना एका चौकटीत बंद करू पाहतात. त्यांच्यासंबंधी असा गैरसमज करून दिला जातो. यासंबंधी दलित साहित्यिक शंकरराव खरात म्हणतात, 'डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर एका विशिष्ट जातीचे पुढारी आहेत अशी टीकेसाठी टीका, म्हणूनच कुत्सित व द्वेषबुद्धीचे टीकाकार करतात. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर महार जातीत जन्माला आले हा काही त्यांचा दोष नव्हता. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या अनुयायांत मातंग, चांभार, महार, मेहत्तर इ. सर्व जातींचा भरणा होता आणि सर्व जातींवर त्यांचे फारच मोठे प्रेम होते. ते अस्पृश्य म्हणून समभावने पाहत

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded



Issue : XVII, Vol. V
VISION RESEARCH REVIEW

IMPACT FACTOR
0.20

ISSN 2260-169X
June 2019 To Nov. 2019 [54]

होते.' एवढेच नव्हे तर वेसा फाळणीनंतर पाकिस्तानातील अस्पृश्य जातींनी आपली गैशून सुटका व्हावी यासाठी डॉ. आंबेडकरांना एक निवेदन पाठवून दिले. तेव्हा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी १८-१२-१९४७ रोजी भारताचे पंतप्रधान नेहरु यांना असे निवेदन लिहिले होते, 'विम पंडित जवाहरलाल नेहरु, पाकिस्तानातून भारतात आलेल्या अस्पृश्य निर्वासितांकडून अनेक तक्रारी माझ्याकडे येत आहेत. आणि त्याचबरोबर पाकिस्तानातून भारतात येण्यास प्रतिबंध करून जावून देवलेल्या अस्पृश्यांकडूनही माझ्याकडे तक्रारी येत आहेत. त्यामुळे या प्रश्नांकडे आपले लक्ष वेधले पाहिजे, आज भारतात आलेल्या अस्पृश्य निर्वासितांचे व पाकिस्तानात अडवून पाडलेल्या अस्पृश्यांचे काम हाल होत आहेत, यासाठी काय केले पाहिजे हे माझ्या निवेदनात पाठवीत आहे.' आणि यामध्ये त्यांनी महत्त्वपूर्ण उपाय सुचविले होते. त्यावर पंडित नेहरु यांनी त्यांना पुढीलप्रमाणे पत्र लिहिले होते, 'विम डॉ. आंबेडकर, आपले १८ डिसेंबर, आपले १८ डिसेंबरचे पत्र मिळाले. या प्रश्नांकडे मी व्यक्तिशः आनंदाने लक्ष पुरवीन व त्याबरोबर मारांबंधीच्या खात्याच्या मंत्र्यांनाही या प्रश्नात काळजीपूर्वक लक्ष घालण्यास सांगेन.'

वास्तविक पाहता डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या नेतृत्वाचा उगम होण्याअगोदर महार, चांभार, भांग इ. जातींमध्ये कमी-अधिक चळवळी सुरू होऊन त्या-त्या जातीत जागृती निर्माण करण्याचा प्रयत्न सुरू होता. याच दरम्यान डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आपला अपुरा अभ्यास पूर्ण करण्यासाठी म्हणजे ५ जुलै, १९२० रोजी लंडनला गेले होते व ते परत आल्यानंतर त्यांनी आपल्या कार्याची सुरुवात सर्वसाधारणपणे १९२३ मध्ये केली. यातूनच २० जुलै १९२४ रोजी 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' स्थापन करून त्यांनी आपल्या कार्याची सुरुवात केली.' त्याचप्रमाणे, 'असा अस्पृश्य समाजाला त्यांचे दुःख जाणवारा भेता मिळाला आणि आता या समाजाचे भवितव्य उज्वल आहे.' अशा प्रकारचे भावित्वादी या दरम्यानचा राजर्षी शाहू महाराज यांनी केले आणि त्यानुसार त्यांच्या कार्याला प्रारंभ झाल्याचे लक्षात येते.

आंबेडकरांच्या नेतृत्वापुढी विविध जातीय जागृती निर्माण होऊ पाहत असली तरी सर्व जातींना सामावून घेणाऱ्या नेतृत्वाचा मात्र अभाव होता. प्रत्येक जातीतील भेते आपल्या जातीसाठी काही तरी करू पाहत होते. तेव्हा डॉ. बाबासाहेबांना या जाती नेतृत्वाच्या झेंड्याखाली ओढण्याचा प्रयत्न झाला. परंतु त्यांच्या व्यक्तिमत्त्वास हे पटणारे नव्हते कारण १९२० पासून या सर्व चळवळींचा अभ्यास, सूक्ष्म निरीक्षण करूनच ते चळवळीत उतरले होते. तरी पण त्यांना आपल्या जातीय मटात ओढण्याचा प्रयत्न महार जातीतून झाला. त्यापैकी काही घटनांचा उल्लेख करता येईल.

- १) २२.२३ ऑक्टोबर १९२३ रोजी फलटण संस्थानात महार परिषदेचे अधिवेशन भरले व या परिषदेला डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हजर राहणार अशी जाहिरात केली होती परंतु ते या वेळी हजर राहिले नाहीत. २) मारांबंधात पुण्याचे शि.जा. कांबळे यांनी अ.भा. ऑक्टोबर

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded



- १९२३ रोजी फलटण संस्थानात महार परिषदेचे अधिवेशन भरले व या परिषदेला डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हजर राहणार अशी जाहिरात केली होती परंतु ते या वेळी हजर राहिले नाहीत.
- २) यासंदर्भात पुण्याचे शि.जा. कांबळे यांनी अ.भा. अस्पृश्य परिषदेचे अधिवेशन डॉ. आंबेडकरांच्या अध्यक्षतेखाली होणार व त्यावेळी त्यांना मानपत्र व बैली देण्याचे जाहीर केले होते. यावेळी ही डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हजर राहिले नाहीत. तेव्हा त्यांनी ते पैसे परत केल्याचा उल्लेख आढळतो.
- ३) यानंतर अस्पृश्य निवारण परिषदेचे चौथे अधिवेशन २९.३० डिसेंबर १९३० रोजी भरविण्यात आले. यावेळी आंबेडकर हजर राहणार असे सांगण्यात आले. पण ते प्रत्यक्ष येथेही हजर झाले नाहीत.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि चांभार समाज :

स्वातंत्र्यपूर्व काळात महार समाजाप्रमाणेच चांभार समाजातही सामाजिक चढवळीचे कार्य काही कार्यकर्ते करीत होते. चांभार समाजात रोहिदास ज्ञानदेव समाज नावाची संघटना कार्य करीत होती. या संघटनेच्यामार्फत चांभार समाजाच्या अनेक समा बोलावण्यात आल्या होत्या व त्याद्वारे चांभार समाजात जागृती निर्माण करण्याचा प्रयत्न केला गेला. २९ एप्रिल १९२३ रोजी रोहिदास समाजामार्फत आग्नीपाडा येथे एक प्रचंड सभा आयोजित केली होती. यामध्ये प्रामुख्याने चांभार समाजातील वार्डट प्रथांचा त्याग करावा व समाजात शिक्षणाचा प्रसार व्हावा, यासंबंधीचा विचार मांडण्यात आला. यानंतर म्हणजे १३ मे, १९२३ रोजी रोहिदास समाजाद्वारे कल्याण येथे एक सभा भरविण्यात आली होती. या सभेच्या अध्यक्षस्थानी व.मु. काळमोरे हे होते. यावेळी प्रामुख्याने चांभार समाजातील विद्यार्थ्यांना मोफत शिक्षण मिळावे, त्यांच्यासाठी वसतिगृहाची सोय करण्यात यावी यासंबंधी चर्चा करण्यात आली.

या समाजाद्वारेच ७ जुलै १९२३ रोजी हरीश बुन्हाडकर यांच्या अध्यक्षतेखाली नालासोपारा येथे या समाजाची सभा बोलावण्यात आली होती. यावेळी रोघोबा वनमाळी यांनी अतिशय प्रभावी विचार मांडले होते व चांभार समाजाने कॉंग्रेसपासून सावध राहावे असा इशाराही दिला होता. यानंतर शी.के. बोले यांच्या अध्यक्षतेखालीही प्रचंड सभा बोलावण्यात आली होती. यावेळी चांदोरकर, शिरोडकर, वनमाळी यांची भाषणे झाली व या सभेतच सोलापूर येथे गणपती मिरवणुकीत चांभार समाजाचा गणपती मिरवण्यात अडथळा निर्माण व्हेल्याबद्दल निषेध नोंदवण्यात आला होता. यावरून हे स्पष्ट होते की, स्वातंत्र्यपूर्व काळात चांभार समाजातही सामाजिक चढवळीचा उगम झालेला होता. यामध्ये प्रामुख्याने शी.के. बोले, व.मु. काळमोरे, सीताराम नामदेव शिवतकर, राघोबा वनमाळी, शिरोडकर, चांदोरकर, हरीश बुन्हाडकर, ना.क. कागराळकर इ. कार्यकर्ते कार्य करीत

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed, Dist. Nanded



होते. यापैकी बहुतांशी कार्यकर्ते डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या नेतृत्वाने भारावून गेले व ते त्यांच्या चळवळीत सहभागी झाले. त्यामध्ये प्रामुख्याने श्री.ना. शिवतकर, रामोबा वनगाळी, नाशिकचे पा.न. राजभोज, ना.क. काजरोळकर इत्यादींचा उल्लेख करता येईल.

हे काही गेले आंबेडकर चळवळीत सहभागी झाले असले तरी शंपूर्ण चांगार समाज मात्र त्यांच्या मागे उभा राहिला नाही. याची खंत डॉ. आंबेडकरांना होती. म्हणूनच त्यांनी अनेक वेळा आपल्या चळवळीत सामील होण्याचे आवाहन सर्व अस्पृश्य जातींना केले होते, तेच चांगार समाजालाही केले होते. २७ डिसेंबर, १९२७ रोजी महाड येथील चांगारवाड्यात बोलाविलेल्या राभेत बोलतानाही त्यांनी ती खंत व्यक्त केली होती. त्याचप्रमाणे त्यातून त्यांनी आपला चांगार समाजाविषयीचा दृष्टिकोनही व्यक्त केला होता. यावेळी ते असे म्हणाले होते की, २४ चांगार कार्यकर्ते सोडून बाकीचे कोणीच लोक सत्याग्रहाच्या कार्यात भाग घेत नाहीत, ही मोठी आश्चर्याची बाब आहे. पण मला त्याचे कारण समजत नाही. महार लोकांत गिराळल्याने तुमची जात वाटेल अशी भीती बाळगण्याचे कारण नाही. खरे पाहता सत्याग्रहाचा कंपू हा धीरांचा कंपू आहे. धीरांच्या कंपूत जातीपाताला थारा नसतो. ही गोष्ट ब्राह्मणी राज्यातही मान्य होती. तसे जर नसले तर सिद्धनाथ महाराजांचा तंबू मराठे सरदारांच्या छावणीत राहू दिला नसता. 'जोडे न देण्याचा सत्याग्रह' आपणारा करता येईल, असे सामर्थ्य या समाजात असूनही त्याचा उपयोग तुम्ही करीत नाही. त्याला तुमची बेफिकिरी म्हणावी की आळस हेच मला कळत नाही. तुम्हास सुख पाहिजे की माणुसकी ते तुम्ही प्रथम ठरवा. मला वाटते माणुसकीशिवाय तुमचे वैभव व्यर्थ आहे. तुंच्यासारख्या लोकांनी अस्पृश्य बांधवांना माणुसकी परत आणून देण्याच्या कामात आतुरतेने भाग घेतला पाहिजे. हे पुण्य थोडे पदरात घ्या. ह्यात तुम्ही भाग घेतला तर तुमचे नाव इतिहासात अजरामर राहील. नाहीतर तुमची पिढी तुम्हाला, तुम्ही नागद होता, म्हणून दोष देईल.

डॉ. बाबासाहेबांनी नुसते विचार मांडले नाहीत तर त्यानुसार आचारही केला आहे. जे चांगार समाजातील कार्यकर्ते त्यांच्यासोबत कार्य करीत होते, त्यांच्यावरही त्यांची सारखीच निष्ठा होती व त्यांना या चळवळीत सामावून घेण्याचा प्रयत्न केला आहे. उदा. पा.नं. राजभोज हे बाबासाहेबांचे निकटचे सहकारी तर होते, पण १९२० जुलै, १९४२ रोजी नागपूर येथे आयोजित केलेल्या अधिवेशन कमिटीचे ते सेक्रेटरी म्हणून निवडले होते. यानंतर चांगार समाजातील दुसरे कार्यकर्ते सीताराम नामदेव शिवतकर हेदेखील आंबेडकरांचे निकटवर्तीय सहकारी होते. त्याचबरोबर बहिष्कृत हितकारणी सभेचे ते जनरल सेक्रेटरी होते. काळाराम मंदिर सत्याग्रहाच्या वेळी ते सक्रीय सहभागी झाले होते. चांगार समाजातील दुसरे कार्यकर्ते ना.क. काजरोळकर हेही बहिष्कृत हितकारणी सभेचे विश्वस्त सदस्य होते. अशा प्रकारे अनेक चांगार कार्यकर्तेही त्यांच्या चळवळीत सामावून गेले होते. डॉ. आंबेडकरांच्या नेतृत्वाचा आणखी एक महत्वाचा गुण म्हणजे जे कार्यकर्ते




त्यांच्यासमवेत असत, त्यांच्यावर विश्वास टाकत, त्यांच्याविषयी वेगळी निष्ठा बाळगून, त्यांच्यासाठी
मागे कोणता समाज असतो वा नसतो, असुर्य म्हणून कोणी असत व त्यांच्यावर अन्याय झाला असेल
तर ते त्यांच्या अन्यायाला वाचा फोडण्याचे काम करील असते, हे पुढील उदाहरणावरून स्पष्ट होते.

चांदोरकर व राधोबा वनमाळी हे श्री. बाळासाहेब आंबेडकरांच्या चळवळीविषयी कायदा
बाळगणारे कार्यकर्ते होते. गोलमेज परिषदेच्या वेळी त्यांनी आंबेडकरांच्या फौजदारीतून दख्खन
त्यांची ही निष्ठा आंबेडकरांनी विसरायला तयार नव्हते ते पुढील उदाहरणावरून स्पष्ट होते. गोलमेज
परिषदेच्या वेळी महात्मा गांधींचे म्हणणे असे होते की, मीच असुर्य आणि सूर्य यांचा प्रतिनिधी
आंबेडकरांच्या मागे असुर्य समाज मुळीत नाही. त्यातच काँग्रेस व हिंदू महासभेच्या कार्यकर्त्यांकडून
असुर्यात फुट पाडण्याचे प्रयत्न चालू होते. त्यात पुन्हा चांभार समाजाच्या काही नेतृत्वांनी
माझ्याविरुद्ध होत्या. त्यामुळे खोट्या सभा, तारा दगैरेचा नुसला दर्पोद चालू होता. त्याचवेळी इतर
चांभार जातींकडून होत असलेला विरोध हा चुकीचा आहे, हे श्री. दयमाळी व चांदोरकर यांच्या
लक्षात आले. मला विरोध करण्यात चांभार समाजाचे हित नाही हे पूर्णपणे ओळखून घ्यायला
मागण्यास पाठिंब्या देण्यासंबंधीच्या तारा त्यांनी केल्या. त्यात चांभार समाजाकडे दयमाळी व
चांदोरकर यांच्याही तारा होत्या, हे मी कधीच विसरणार नाही. दयमाळी कार्यकर्त्यांकडे दयमाळी
त्यांचा दृष्टिकोन लक्षात येतो. त्याचबरोबर चांभार समाज त्यांच्या पाठीशी नव्हता, ही खंडही होती.
परंतु चांभार समाजावर अन्याय झाल्यास त्याला वाचा फोडण्याचे काम त्यांनी केले, ते महत्त्वाचे आहे
हे पुढील उदाहरणावरून सांगता येईल.

मध्य प्रांतातील एका गावात चांभार व्यक्तींनी जाणवते घातले म्हणून तेथील ब्राह्मण व्यक्तींनी
कट करून त्याचा निर्मूण खून केला. तेव्हा त्यांनीच सर्वप्रथम या अन्यायास वाचा फोडली. यासंबंधी
'बहिष्कृत भारता'त पुढील मजूर निषेधाच्या स्वरूपात मांडला होता. 'अशा प्रकारच्या मनोनाशनांचे
घोषले किती पुरनायचे? यांचा धर्माभिमान असुर्यांपुरताच आहे. हे लोक दुराविद्यन लोकांचे दुट
घाटतील, मुसलमानांचे नाव ऐकल्याबरोबर पाय लावून पळतील, परंतु महार, चांभार आणि मांग
जातींवर हक्क गाजवणे बापजाद्यांचा हक्क समजतात. या लोकांना 'स्वराज्य' शब्द उच्चारावयासही
खरे तर शरम वाटली पाहिजे. गुलामाची जात आणि पुन्हा वर नाक अशी रीत आहे.' अशा शब्दात
त्यांनी निषेध नोंदवला होता.

अशा प्रकारची प्रांजळ भूमिका त्यांनी केली असली तरी संपूर्ण चांभार समाज त्यांच्यामागे
उभा राहिला नाही. त्याचप्रमाणे राजकीय व सामाजिक लढ्यात सहभागी होणारे काही कार्यकर्तेही
धर्मातराच्या भूमिकेपासून दूर झाले, पण आंबेडकरांनी त्यांची पर्वा केली नाही. या उलट काही
कार्यकर्त्यांनाच परघाताप होऊन पुन्हा ते आंबेडकर चळवळीत सहभागी झाले, यापैकीच राजभोज
एक होते. धर्मातराच्या प्रश्नावर त्यांनी आंबेडकरांची साथ सोडली होती. वास्तविक पाहता हिंदू

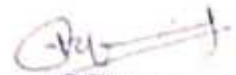

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed Dist. Nanded



महासभा व सनातनी लोकांच्या कृतीला हे कार्यकर्ते बळी पडल्याचे दिसून येते. राजभोज यांच्या बाबतीतही हे झाले. ज्यावेळी राजभोज यांनी धर्मातरासंबंधी बाबासाहेबांसोबत विचार मांडले. त्यावेळी अनेक हिंदू महासभेच्या कार्यकर्त्यांनी यापासून त्यांना परावृत्त करण्याचा प्रयत्न केला. यासंबंधी वि.दा. सावरकर यांनी तर त्यांच्या भावनेला आव्हान करणारे लांबलचक पत्र दिले होते. त्यातील काही मजकूर पुढीलप्रमाणे होता, 'राजभोज, राहून राहून तुझ्यासारख्या तरुण, सदाकांक्षी, परोपकारी, जीव जावो अथवा राहो' अशा निर्धाराने एका जातीचे दुःख आपले समजून गुंजणाऱ्या आत्म्यास धर्मवीर म्हणावेसे वाटते. पण असे न झाले तर हिंदू धर्माचा त्याग करू अशा भाषेने आपली जिह्वा थोडी कलंकित झाली नसती तर ना राजभोज, आपणास मीही तुम्हाला धर्मवीरच म्हटले असते. पण तरीही तो दोष तुमचा नाहीतर रुदयाचा नव्हता..... आपण रक्ताचे, बीजाचे नाहीतर रुदयाचे हिंदूच आहोत. त्यामुळे राजभोज धर्मातर विचारापासून दूर गेले, पण नंतर आंबेडकर चळवळीत सहभागी झाले, एवढेच नव्हे तर या चळवळीपासून दूर गेल्याचा परघातापही त्यांना झाला होता, हे त्यांच्या ३१-१२-१९४० च्या भाषणातून स्पष्ट होते. या भाषणात ते म्हणलो, 'मी आजपर्यंत समाज सोडून हिंदू सभा इ. संस्थात कार्य करीत होतो. मी डॉ. बाबासाहेबांचा विरोधक बनलो होते व आपल्या समाजाचा खून करण्याचे पातक माझ्या हातून घडले. काँग्रेस किंवा हिंदू महासभा ह्या टोंगी आमिषांनी कशा फसवतात ते मला प्रत्यक्ष अनुभवांनी कळलेच आहे. आता मी आपल्यात आलो. आपण मला निभावून न्या. हिंदू महासभेचे व काँग्रेसचे बगलबच्चे अस्पृश्य समाजाची घूळघाण करतात. यापुढे जर मी वेईमान झालो तर माझे रक्त सांडणे तुमचे कर्तव्य आहे. आज आमचे पुण्य की आम्हास अत्यंत विद्वान, मुत्सद्दी, थोर पुरुष लाभले. ते पुण्यपुरुष डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी आम्हांस सत्याची, स्वाभिमानाची शिकवण दिली. आपण कुणीही, कोणत्या पक्षात न जाता आपल्या सर्व समाजात दुफळी माजवण्यास निघालेल्या लोकांना मुळीच महत्व देऊ नका. अस्पृश्य लोकांनी कोणास सहकार्य करावे हे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ठरवतील.'

चांभार समाजाला दलित चळवळीविषयी काय वाटते? :

डॉ. आंबेडकरांच्या चळवळीनंतर चांभार समाजही दलित चळवळीपासून दुरावला. त्याला दलित चळवळी कारणीभूत ठरली असेल, परंतु तीच एकमेव कारणीभूत आहे असे म्हणता येणार नाही. परंतु डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्यानंतर चांभार समाजाचा दलित चळवळीविषयीचा दृष्टिकोन हा काहीसा संभ्रमात्मक स्वरूपाचा आढळून येतो. त्याची कारणे पुढीलप्रमाणे सांगता येतील. चांभार समाजाची दलित चळवळीत न मिसळण्याची मानसिकता थोडीसी वेगळी असलेली दिसून येते. कारण आपणास दलित चळवळीत सहभागी करून घेतले नाही अशी तक्रार मातंग समाज व त्यांच्या नेत्यांची आहे, परंतु अशी तक्रार चांभार समाजाला करण्याची आवश्यकता वाटली नाही, यासाठी देखील खालील कारणे सांगता येतील.



PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Nanded



- १) चांभार समाज हा इतर अस्पृश्यांच्या तुलनेत स्वतःला श्रेष्ठ मानतो, कारण घडणुकात त्याला इतर अस्पृश्यांच्या तुलनेत जवळचे स्थान असल्याने त्याची ही मानसिकता टप्पर झाली असावी.
- २) या समाजाची आर्थिक स्थिती ही इतर अस्पृश्य जातींच्या तुलनेत खालची आहे. बहिष्कार हिंदू संस्कृतीविरुद्ध, वर्णव्यवस्थेविरुद्ध बोलण्याचे तो धडस कर इच्छित नाही किंवा विचलित परिस्थितीवर दिनातकार राहण्याची त्याची मानसिकता आहे असे म्हटल्यास वाचणे ठरणार नाही.
- ३) औरंगाबाद येथील मिलिंद महाविद्यालयातून किंवा मुंबईतील काही महाविद्यालयातून काही कार्यकर्ते बाहेर पडले असता. उदा. राम दुतांडे वगैरे काही कार्यकर्ते बाहेर आले, परंतु त्यांचा प्रभाव संपूर्ण समाजावर पडलेला आहे, असे म्हणणे घडसावे ठरेल.
- ४) हिंदू समाजाच्या गुलामीचे, नाळ न तुटण्याचे कारण म्हणजे आजही चांभार समाज आपल्या पारंपारिक व्यवसायापासून अलग झालेला नाही. यासंबंधी डॉ. सुनंदा फटकेन यांनी केलेल्या पाहणीत त्यांना असे आढळून आले आहे की, आजही चांभार समाजाला ६९ टक्के लोक पारंपारिक व्यवसायात गुंतलेले आहेत. या उलट महार समाजाला हे प्रमाण ० टक्के आहे. यावरून हे स्पष्ट होते की, पारंपारिक व्यवसायातून त्याला गळवळ घडवून राहावे लागते. कदाचित त्यामुळेही तो त्यांच्या विरोधात जाण्याची नुनिका घेत नाही. त्यामुळेही त्याला दलित घळवळीत सहभागी होण्याची आवश्यकता वाटत नसावी.
- ६) यासंबंधीचे आणखी एक कारण सांगता येईल की, एकंदर अस्पृश्यांमध्ये चांभार समाज हा अधिक मळावळीचे धोरण स्वीकारणारा म्हणून भारतीय राजकारणातही राखीव जाण्याचे काँग्रेस व इतर राजकीय पक्ष त्यांना प्राधान्य देतात. त्यामुळे एक वेगळे नेतृत्व बने राहते. त्यामुळेही त्यांना दलित घळवळीची ओढ लागत नसावी. या दृष्टिकोनातून बाबू जयजीवनराम यांच्या राजकीय नेतृत्वाचा उगम झाला असे म्हटले तरी वाचणे ठरणार नाही.
- ७) चांभार समाजाने हिंदू देवदेवतांवर हल्ला करण्याचे कट्टरपणे टाळलेले आहे. वास्तविक पाहता धर्मांतराच्या घळवळीच्या वेळी हा चांभार समाज व इतर अस्पृश्य आंबेडकरांच्या घळवळीत उतरायला हवे होते. परंतु दुर्दैवाने तसे घडले नाही. परंतु यानंतर जयजीवनराम बाबूंनी आपले राजकीय अस्तित्व भक्कम करावे या दृष्टिकोनातून आपण बर्बात करणार व मुस्लिम धर्म स्वीकारणार अशी धमकीही काँग्रेसला दिली होती. तथा प्रकारची पोस्टर्सही काढली होती. त्याचा मजकूर ऊर्दू आणि इंग्रजीत असा होता, 'बाबू जयजीवनराम मुसलमान बनेगे । २१ अगस्त को जागा मस्जिद में समारोह होगा । अहमद बुखारी उनको कलमा देगे ।' या पोस्टर्सवर बाबूजींचा एक फोटोही छापलेला होता. १५ परंतु वास्तविक



आवाज त्यांना बुलंद करता येणार नाही. जातिव्यवस्थेने घालून दिलेले गुलाभीचे आणि लाचारीचे साखळवर्दळ तोडण्याची चीज त्यांच्यात निर्माण होऊन त्यांची कानशिले तापणार नाहीत. तोपर्यंत त्यांना या दारयातून मुक्त होता येणार नाही.

त्याचप्रमाणे या दारयातून आपणारा कोणीतरी दुराच्या वर्गातील व्यक्ती घेऊन मुक्तता करील या कल्पनेतून बाहेर आले पाहिजे. कारण ही कळाची गरज आहे आणि सुदैवाने तसे घडलेच तर दलित चळवळीत रावण रागीत होण्यासंबंधी त्यांना कोणी सांगण्याची आवश्यकता राहणार नाही. हे खरे असले तरी दलित नेत्यांनीही त्यांना जागृत करण्याचा प्रागाधिक प्रयत्न करणे आवश्यक आहे. त्यातूनच दलित चळवळीला उभारी येणार आहे, यश येणार आहे. हे कोणालाही नाकारता येणार नाही.

संदर्भ सूची :-

- १) खरात शंकरराव : डॉ. बाबासाहेबांची पत्रे, पृ. १९८
- २) कांबळे बी.सी. : रामग आंबेडकर, परिच. पृ. १७
- ३) गून वरात : माध्य महाराष्ट्रातील डॉ. आंबेडकरपूर्व दलित चळवळी पृ. १२०
- ४) गांजरे मा.फ. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची भाषणे खंड २, पृ. ४५
- ५) गणवीर रत्नाकर : महिष्कृत भारतातील डॉ. आंबेडकरांचे स्फुट लेख, पृ. २७
- ६) सावरकर रामग वाङ्मय
- ७) राजभोज यांचे एक भाषण
- ८) डॉ. पटवर्धन सुनंदा : सेंट जॉन इंडियाज हरिजन, पृ. ६८
- ९) वागळे निखील : सा. दिनांक, ६ सप्टेंबर, १९८१, पृ. २५
- १०) दै. नवशक्ती, मुंबई : १७ जुलै, १९७७

(Signature)

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Nanded



RNI. MAHMUL02805/2010/33461

IMPACT FACTOR
6.20

ISSN 0976-0377



International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

UGC APPROVED, REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XX, Vol. IV
Year - 10 (Half Yearly)
(July 2019 To Dec. 2019)

Editorial Office :
'Gyandeept',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 - 241913
09423346913, 09637935252,
09503814000, 07276301000

Website

www.irasg.com

E-mail :

interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com
drkamblebg@rediffmail.com

Publisher :

Jyotichandra Publication,
Latur, Dist. Latur.-415331
(M.S.) India

Price: ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamblo

Research Guide & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya, Latur, Dist. Latur (M.S.)
Mob. 09423346913, 9503814000

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Aloka Parasher Son

Professor, Dept. of History & Classics,
University of Alberta, Edmonton,
(CANADA).

Dr. Huen Yen

Dept. of Inter Cultural
International Relation
Central South University,
Changsha City, (CHINA)

Dr. Omshiva V. Ligado

Head, Dept. of History,
Shivajiraj College,
Nalegaon, Dist. Latur. (M.S.)

Dr. G.V. Menkudale

Dept. of Dairy Science,
Mahatma Basawshwar College,
Latur, Dist. Latur.(M.S.)

Dr. Laxman Satya

Professor, Dept. of History,
Lokhevan University, Lohevan,
PENSULVIYA (USA)

Bhujang R. Bobade

Director, Manuscript Dept.,
Deccan Archaeological and Cultural
Research Institute,
Malakpet, Hyderabad. (A.P.)

Dr. Sadanand H. Gone

Principal,
Ujwal Gramin Mahavidyalaya,
Ghonsi, Dist. Latur. (M.S.)

Dr. Balaji S. Bhure

Dept. of Hindi,
Shivajiraj College,
Nalegaon, Dist. Latur.(M.S.)

DEPUTY-EDITORS

Dr. S.D. Sindkhedkar

Vice Principal
PSGVP's Mandals College,
Shahada, Dist. Nandurbar (M.S.)

Dr. C.J. Kadam

Head, Dept. of Physics
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga, Dist. Latur.(M.S.)

Veera Prasad

Dept. of Political Science,
S.K. University,
Anantpur, (A.P.)

Johrabhai B. Patel,

Dept. of Hindi,
S.P. Patel College,
Simaliya (Gujrat)

CO-EDITORS

Sandipan K. Galke

Dept. of Sociology,
Vasant College,
Kej, Dist. Beed (M.S.)

Ambuja N. Malkhedkar

Dept. of Hindi
Gulbarga, Dist. Gulbarga,
(Karnataka State)

Dr. Shivaji Vaidya

Dept. of Hindi,
B. Raghunath College,
Parbhani, Dist. Parbhani. (M.S.)

Dr. Shivanand M. Giri

Dept. of Marathi,
B.K. Deshmukh College,
Chakur Dist. Latur (M.S.)

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded



INDEX

| Sr. No | Title for Research Paper | Page No |
|--------|--|---------|
| 1 | Artist Couple of my Study Period - Mr. & Mrs. Bhadra Dr. Jyoti Agnihotri | 1 |
| 2 | A Study of Eugene O Nill's Female Psyche in The Iceman Cometh O. S. Pawar | 8 |
| 3 | Multiculturalism in the Selected Novels of Geetanjali Shree & Tony Morrison Sushilkumar S. Raut | 13 |
| 4 | Effect of Doping in Sports Khan Nehal Ahemad | 18 |
| 5 | आधुनिकतेच्या प्रश्नांचा वेध घेणाऱ्या ग्रामीण कादंबऱ्या गणेश काकडे | 25 |
| 6 | आदिवासी संस्कृती : नैतिक व सामाजिक परिमाण डॉ. पंडित जी. राठोड | 29 |
| 7 | भारतातील बदलती बलुतेदारी व्यवस्था - एक अभ्यास डॉ. मा. म. गायकवाड | 36 |
| 8 | बीड तालुक्यातील आत्महत्याग्रस्त शेतकरी कुटूंबाच्या शैक्षणिक स्थितीचा समाजशास्त्रीय अभ्यास डॉ. यादव घोडके | 43 |
| 9 | शिक्षण आणि महिला सबलीकरण प्रदिप लक्ष्मण अंबोरे | 52 |

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded



भारतातील बदलती बलुतेदारी व्यवस्था - एक अभ्यास

डॉ. ए. ए. पावसाळकर
सामाजिक विभाग प्रमुख,
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,
मुद्रामबाद, वि. मंडळ

7

Research Paper - Sociology

प्रस्तावना

भारतीय समाजात जातीव्यवस्थेला महत्त्वाचे स्थान दिलेले आहे. जातीव्यवस्थेवर अवलंबित बलुतेदारी व्यवस्था ही भारतीय ग्रामीण समुदायाचे महत्त्वाचे वैशिष्ट्य आहे. पूर्वी ग्रामीण भागात वस्तु-विनिमयाची फळत अस्तित्वात होती. शेतकरी हा या बलुतेदारीव्यवस्थेचा केंद्रबिंदू होता. शेतकरी हा धान्य विकवित असे आणि जे शेतकरी भळते त्यांना त्यांच्या मोबदल्यात अन्नधान्य पुरविले असत. यामध्ये जे शेतकऱ्यांच्या नैमित्तिक स्वरूपाच्या गरजा भागवत होते त्यांना बलुतेदार (नाक) तर जे महत्त्वाच्या गरजा भागवित असत त्यांना बलुतेदार (कारक) असे म्हटले जात होते. बलुतेदार व बलुतेदार हे गावचे यतनदार असत आणि विविधानियंत्रणे ते दरादिक काम करित असत. प्राचीन भारतात दळणवळणाच्या साधनांचा अभाव असल्याने गावातील गरजा साकारत पूर्ण करण्याच्या गरजेतून बलुतेदारी पध्दती उदयास आली. या पध्दतीमुळेच ग्रामीण समाजात स्वयंपूर्ण स्वरूप प्राप्त झालेले होते. ग्रामीण समाजातील निरनिराळ्या वर्गांची नाळ कार्यात्मक दृष्टीने परस्परची जोडली गेली होती. बलुतेदारी ही ग्रामीण समाज जीवनातील विविध वर्गांमधील कार्यात्मक संबंधाची व्यवस्था बनली होती.

बलुतेदारी व्यवस्थेचे स्पष्टीकरण करताना अक्सर लोडिस यांनी असे म्हटले होते की, या व्यवस्थेमध्ये गावातील प्रत्येक जातीसमूहाकडून अशी अपेक्षा केली जाते की, ते दुसऱ्या जाती कुटुंबाची नियोजित सेवा करतील. या प्रथेनुसार एका विशिष्ट समुदायात राहणाऱ्या विभिन्न जातीच्या लोकांनी इतर जातीची प्रामाणिकपणे सेवा करावी व या सेवेच्या मोबदल्यात इतर जातींनी त्यांच्या उदरनिर्वाहाची व्यवस्था करावी. उदा. सोनाराने दागिने तयार करावे, लोहाराने शेंतीसाठी अवजारे तयार करावीत, सुताराने लाकडी अवजारे तयार करावीत व त्यांच्या मोबदल्यात यजमानाकडून रचवून एकदा किंवा दोनदा धान्याच्या स्वरूपात नियोजित मोबदला घ्यावा असा नियम होता. सेवा करणाऱ्यांना बलुतेदार असे म्हटले जात होते तर सेवा घेणाऱ्याला यजमान असे म्हटले जात होते.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed Dist. Pandh



भारतातील वनलती बलुतेवारी व्यवस्था - एक अभ्यास

डॉ. मा. म. गामकवाड
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख,
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,
मुकामबाद, जि. कोल्हापूर

7

Research Paper - Zoology

प्रस्तावना

भारतीय समाजात जातीव्यवस्थेला महत्त्वाचे स्थान राहिले आहे. जातीव्यवस्थेवर आधारित बलुतेवारी व्यवस्था ही भारतीय सामाजिक समुदायाचे महत्त्वाचे वैशिष्ट्य आहे. पूर्वी सामाजिक भागात वस्तु-विनिमयाची फक्त अस्तित्वात होती शेतकरी हा या बलुतेवारीव्यवस्थेच्या केंद्रस्थानी होता शेतकरी हा भाव्य विक्रित असे आणि जे शेतकरी मळते त्यांनासोबेच्या मोबदल्यात अल्पसंख्ये मुरवीत असत. गामक्ये जे शेतकर्याच्या वैशिक स्वरूपाच्या गरजा भागवत होते त्यांना अलुतेदार (गारू) तर जे महत्त्वाच्या गरजा भागवत असत त्यांना बलुतेदार (कारू) असे म्हटले जात होते. अलुतेदार व बलुतेदार हे गावचे वतनदार असत आणि शिक्षणभिक्षा ते ठराविक काम करीत असत' प्राचीन भारतात वळणवळणाच्या साधनांचा अभाव असल्याने गावातील गरजा गावातच पूर्ण करण्याच्या गरजेतून बलुतेवारी फक्तती उदयास आली. या फक्ततीमुळेच सामाजिक समाजाला स्वयंपूर्ण स्वरूप प्राप्त झालेले होते. सामाजिक समाजातील निरनिराळ्या वर्गांची माल कार्यात्मक दृष्टीने परस्परांशी जोडली गेली होती. बलुतेवारी ही सामाजिक समाज जीवनातील विविध वर्गांमधील कार्यात्मक संबंधांची व्यवस्था बनली होती.

बलुतेवारी व्यवस्थेचे स्फुटीकरण करताना अविस्तर लेविस यांनी असे म्हटले होते की, या व्यवस्थेमध्ये गावातील प्रत्येक जातीसमूहाकडून अशी अपेक्षा केली जाते की, ते दुसऱ्या जाती कुटुंबाची नियोजित सेवा करतील. या प्रजेनुसार एका विशिष्ट समुदायात सहकार्या विविध जातीच्या लोकांनी इतर जातीची प्रामाणिकपणे सेवा करावी व या सेवेच्या मोबदल्यात इतर जातींनी त्यांच्या उदरनिर्वाहाची व्यवस्था करावी. उदा. सोनाराने चांगिने तयार करावे, लोहाराने शेतीसाठी अवजारे तयार करावीत, सुताराने लाकडी अवजारे तयार करावीत व त्यांच्या मोबदल्यात मजगानाकडून वर्षातून एकदा किंवा दोनदा भाव्याच्या स्वरूपात नियोजित मोबदला घ्यावा असा नियम होता. सेवा करणाऱ्यांना बलुतेदार असे म्हटले जात होते तर सेवा घेणाऱ्याला मजगान असे म्हटले जात होते.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tu Mukhad Dist.anded



बलुतेदारी फवतीचा संज्ञम

भारतीय भारतातील विविध भागात बलुतेदारी फवती अस्तित्वात असून तिलागारसपर वेगवेगळ्या नावाने ओळखली जाते. उदा. उत्तर भारतात तिला 'जजमानी फवती', सामिलगद्दत 'गिराती' तर महाराष्ट्रात तिला बलुतेदारी फवती असे म्हटले जाते.

बलुतेदारी फवतीची बीजे भारतात नवाश्मयुगात रोवली गेली असली पाहिजेत. नवाश्मयुगातील शेती आणि गावसमाहती ही भारतीय गाणसाच्या जीवनातील फार मोठी उत्क्रांती होय. गाणून समूहाने वसती करणे, राहू लागला त्यामुळे आणि शेतीमुळे त्याच्या गरजा वाढल्या. गरजा पूर्ण होण्यासाठी गाणसाला काही वीशल्ये आपसात करून घ्यावी लागली. त्यावर आधारित गिरगिराळ्या व्यवसायाची निर्मिती झाली. ती व्यवसायिक कामे कुशल गाणसांवर सोपवली गेली. उदा. दैनंदिन गाणसासाठी मातीची भांडी तयार करणे, शेतीसाठी लोखंडी अक्जारे तयार करणे यासारख्या अनेक कामांसाठी वस्तू तयार करण्यासाठी कारागीर तयार झाले. या कारागीरांना त्यांच्या कार्याचा मोबदला अन्घ्याग्याच्या किंवा वस्तूच्या स्वरूपात दिला जात होता आणि तेजूनग विनिमयाची फवत रूढ झाली. गरजेनुसार वस्तुनिर्मिती करणारे कुशल कारागीर आणि निर्माण केलेल्या वस्तूची देवाणघेवाण धान्याच्या किंवा इतर वस्तूच्या रूपात करण्याची फवत असल्याबाबतगा चळलेख नवाश्मयुगाच्या परासर्घात आढळतो. कालांतराने वेगवेगळ्या कुशल कारागीरांमा तो व्यवसाय झाला व वंशपरंपरेने तो पिढ्यान् पिढ्या चालत आलेला विसातो' प्राचीण भागात लोकांमा मुख्य व्यवसाय हा शेती आहे. शेती हा व्यवसाय व्यवस्थित पार पाडण्याकरीता इतर व्यक्तींच्या सेवा व वीशल्यांची गरज असते. जातीप्रथेतील श्रमविभाजनाची व व्यवसाय विभाजनाच्याव्यवस्थेतूनच बलुतेदारी फवतीची सुरुवात झाली असे आपणास म्हणता येईल.

बलुतेदारीचा अर्थ

संस्कृत भाषेतील 'यजमान' या शब्दाचा हिंदी भाषेतील 'जजमान' हा अपभ्रंश आहे. यज्ञकिची करा करावा? कोणते मंत्र म्हणावेत? हे सांगणार्या ब्राह्मणाच्या सांगण्यावरून यज्ञकिची संपन्न करण्याचे कार्य करणारा तो 'यजमान' होय. म्हणून जो सेवा घेतो त्याला 'जजमान' असे संबोधले जाते.' बलुतेदारी फवतीत सेवा देण्याघेण्याचे काम असते. त्यावरून तिला जजमानी किंवा बलुतेदारी फवती असे म्हटले जाते. या बलुतेदारी फवतीचा अर्थ व स्वरूप स्पष्ट होण्यासाठी तिच्या काही व्याख्या पाहता येतील.

बलुतेदारी - व्याख्या

1. अरिस्कर लेखीरा यांच्या मते, 'खेड्यातील काही विशिष्ट जातींच्या प्रत्येक जाती समूहाने त्यांच्या विशिष्ट दर्जानुरूप इतर जातींच्या कुटुंबांची सेवा करणे म्हणजेच बलुतेदारी फवत होय.'
2. एन. एस. रेड्डी यांच्या मते, 'जे सेवा-संबंध वंशपरंपरागत फवतीने निर्धारित व निश्चित झालेले असतात त्यांना जजमान (यजमान)-परजन संबंध असे म्हणतात.'

मावगाडा या पुरतकात वि. ना. अत्रे यांनी बलुतेदारी फवतीचे विरलेषण केलेले आहे. त्यांच्या

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed Dist. Nanded



की, कुलुषाने मग कवितेने आणि काही कवितेही खरी, तथापि, त्याच वेळ पर मद्रासला व प्रवासी अनेक कामे साजरायला त्याला अद्यापत्या आतीपयले वेदाची मरज होती म्हणून कुलुषाने आपल्या बरेकरव मासाल अद्यापी अजिरे त्यात भविष्याने 'काव' व मरज 'नाम' असे काव व मरज काव (कवनात) ह्या मद्रासाकून तयार झाला आहे. ज्याची विद्या, कनक, किंवा मेहनत, कुलुषिकाला अद्याप कुलुषाना अत्यंत आनंददायक होती त्यांना काव अर्थात बनुतेदार असे म्हटले जाते. मरजाची, कावची मरजायला आनंददायक असा वेदा कवनात ती काव असती. तर ज्याच्या वेदायकून कुलुषाचे काव मरज नाही किंवा अजिरे मरजे असा वेदा कवनात ती मरज होय. कावला बनुतेदार किंवा बनुत्या आणि मरजा अलुतेदार किंवा अलुत्या म्हणतात.


मद्रासातील बनुतेदारी पध्दतीवर बी. एस्. विलर या मशहूरकाने प्रथमतः कार्य केलेली आहे. त्यांनी आपल्या 'जेम एकायट Jajmani System' या पुस्तकात मद्रासातील बनुतेदारी व्यवस्था कशी होती यावर सविस्तर विवेचन केलेले आहे. विलर यांच्या व्यतिरिक्त अँल्डर सॅडिन, अँप्ल सिंग, एस्. एस्. रेड्डी, मिल, एस्. जी. टुडे, सालीच काँचीन व श्रीनिवास यनीही मद्रासातील बनुतेदारी पध्दतीवर विमल संशोधन केलेले आहे.

बनुतेदारी पध्दतीचे स्वरूप

मद्रासाध्ययने काम ज्याच्यामुळे उडते म्हणजे ज्याच्या कोमल्यपूर्ण कार्यागतेची नित्य मरज पडते ते 'बनुतेदार' आणि ज्याची नित्य मरज नसते त्यांना 'अलुतेदार' असे म्हणतात. बनुतेदारी पध्दतीचे अस्तित्त्व संपूर्ण मद्रासवर असलेले दिसते. बनुतेदार बहुधा मुनिर्हान असतात. त्यांच्या कामाचा मरजाला म्हणून बनुतेदारना 'बनुते' आणि अलुतेदारना 'अलुते' मिळत होते. हे बनुते-अलुते त्यांना धान्य तरकपाल मिळत असते. त्यालाच 'बनुतेदारी' आणि 'अलुतेदारी' असे म्हणतात.

बनुतेदारची संख्या बरद तर अलुतेदाराची अट्टन ही संख्या असलेले दिसते. बरद बनुतेदारांमध्ये म्हाडर, सुदार, लोहार, बनार, कुमार, वयो, सोनार, ग्राम्बांयो, परोट, मुत्य, काँबो, मरम यांचा समावेश होता. काही मरगत मरम जातोपेय्यो चीमुला जातोया बनुतेदारांमध्ये समावेश होता. तर अट्टन अलुतेदारांमध्ये मळो, टेली, तांबळो, साळो, सपनर, शिपी, मोंधळो, ड्यरे, मरट, वळर, मंसापी, मुलाणा, वळर्री, छड्यो, कलायट, दरळ, मोडू, शिळलनार यांचा समावेश होता.

बनुत्याच्या आणि अलुत्याच्या मरजदल्याचे प्रमाण व्यावसायिक महत्त्वानुसार एतलेले असते. कावे बनुतेदार आणि काही अलुतेदार एमरर लघुरेकर व्यवसाय करतात. त्यांची वाप्यतह साकारेक अंशदायक घाललेली असते. दुष्काळ पडला तर त्या-त्या व्यक्ती बनुते मिळण्याची इच्छया नसते असा काळात बनुतेदार-अलुतेदार पूर्णपणे उद्धरत होतात. आर्थिक विपरमेतह त्यांची वयसमराली लोती शंटीसाटी आणि प्रपंचिक कामसाटी नित्य वपर्योगात वेणारे बनुतेदार प्रत्येक मरगात असतात. मरज सर्वेच बनुतेदार सर्वेच मरगात असतातच असे नाही.


PRINCIPAL
Swami Vivekananda Mahavidyalaya
Mukundpur Te. Mumbai Dist. Mumbai



RRI MAHARAJA 828055201070481
Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR
6.20

ISSN 0976-0377

Issue - 22, Vol. 19, July 2018 To Dec. 2019 39

जातीतील प्रत्येक कुटुंबास काही घरे वाटून दिलेची होती व विद्यार्थ्यांविषय नै त्यांची सेवा करत होते सेवा करण्याचा हा अधिकार मानवतेसारखा एक विधीकटून दुसऱ्या विधीला मिळत होता. विद्यार्थ्यां मृत्यूनंतर शेवचे अधिकार मुलांना मिळत होते. हिंसे वाटणीच्या वेळी यंत्रमन कुटुंबाची देखील वाटणी केली जात होती. एखाद्या कुटुंबास एकच मुलगी असल्यास ते अधिकार मुलीच्या फौस मिळत होते आपले बलुतेदारीचे अधिकार बलुतेदार विकू देखील शकत होता. अशा रीतीने सेवा करणे व सेवा घेणे हा अधिकार मानता जात होता. स्वतःच्या इच्छेनुसार बलुतेदार एखाद्या कुटुंबाची सेवा नाकारू शकत नव्हता किंवा बलुतेदारास काढू शकत नव्हता त्यावर जात पंचायतीचे नियंत्रण होते अशा रीतीने या प्रेने ग्रामीण क्षेत्रातील सहजाती परस्पर अधिकार कर्तव्याच्या जागिरेने एकमेकांही बंधल्या होत्या.

सामाजिक सुरक्षा उत्तरदायित्वपूर्ण सामाजिक बंधन, कमीत कमी व्यावसायिक स्पर्धा, सामाजिक नियंत्रणाचे प्रभावी साधन हे या प्रथेचे काही गुण सांगता येतात. परंतु परिवर्तनाच्या ओघात जेव्हा उच्च जातींना या प्रथेच्या नावाखाली कनिष्ठ जातीची पिढ्यणूक सुरू केली तेव्हा परस्पर सहकार्याच्या उद्देशाने सुरू झालेली ही प्रथा समाजात जापक ठरली. बदललेल्या सामाजिक परिस्थितीत तिचे प्रयोजनदेखील उरले नाही. त्यामुळे आज ही प्रथा जवळजवळ नष्ट पावल्यासारखीच आहे.

बलुतेदारी पध्दतीतील बदल

ग्रामीण अर्थव्यवस्थेस आधारभूत असलेली बलुतेदारीची ही पध्दत औद्योगिकीकरणाच्या व नागरीकरणाच्या प्रभावाखाली आता मोडकळीस आलेली दिसते. आपल्या वाढत्या गरजा व अपेक्षा भागविण्याकरिता सर्वांनाच शहराकडे धाव घ्यावी लागत असल्यामुळे खेड्यातील पूर्वीचे परस्परावलंबन कमी होत चालले आहे. पैशाच्या विनिमय-माध्यमांमुळेही या प्रथेवर परिणाम झाला आहे. बऱ्याच ठिकाणी १९३३ सालापासूनच महारांनी त्यांच्यातील नवजागृतीमुळे आपले यतनी हक्क आणि गावकीची कामे सोडून देण्यास सुरवात केली. या सर्व गोष्टींचा परिणाम ही पध्दत कमकुवत होण्यात झाला आहे.*

भारतात 19 व्या शतकात झालेल्या प्रबोधनात्मक चळवळी, समाज सुधारकांनी समाज सुधारनेचे प्रयत्न यामुळे अनेक जीर्ण परंपरा बंद झालेल्या आहेत. शिक्षणाचा झालेला प्रसार, दळणवळणाच्या साधनांचा झालेला विकास यामुळे शहरामध्ये स्थलांतरीत होण्याची प्राप्त झालेली संधी यासारख्या कारणांमुळे स्वातंत्र्यपूर्व काळातच बलुतेदारी पध्दती विघटीत होण्यास सुरुवात झाली होती. स्वजातीचा पारंपारिक व्यवसाय करण्याच्या सक्तीविरुद्ध अनेक ग्रामीण व्यक्तींनी बंड पुकारले होते. स्वातंत्र्योत्तर काळात व्यवसाय निवडीचे स्वातंत्र्य, समान संधीचा अधिकार प्रत्येक व्यक्तीला प्राप्त झाले.

औद्योगिकरण, यांत्रिकीकरण, आधुनिक जीवन पध्दती, बलुतेदारांमधील निस्वतंत्रता यामुळे बलुतेदारांवर मोठ्या प्रमाणात सामाजिक आर्थिक परिणाम झाला. दळणवळणाची साधने आल्याने बैलांवरून वाहतूक करणारा बंजारा देशोधडीला लागला, कापड गिरण्यांमुळे कोष्टी-साळ्याचा व्यवसाय गेला, तेलाच्या कंपन्यांमुळे तेलाचा व्यवसाय बुडाला, स्टील व प्लारस्टीकची भांडी आल्याने कुभाराचा व्यवसाय मंदावला.


PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Te. Mukhad. Dist. Nanded



www.bharatiya-rajya-vidyalaya.org
Intertek Research Analysis

भारतीय राज्या विद्यालय
 678

फोन 9276-9277
 मोबा-92 92 92 92 92 92 92 92 92 92

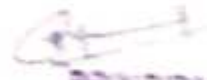


संश्लेषणे लक्षासाठी सामान्य परीक्षेतील प्रश्न सोडवणे हेमध्यम शिक्षितवर्गात आज उपलब्ध असलेले त्यांना सांख्यिक ज्ञान मिळे नसेल असे म्हणिले " असे नसू शकते "

भारतात एकही असा बहुतेकदा कल्पना नाही जी एखादा मासाला 20 ते 25 वर्षे वरिष्ठ असे स्तराने व्यवसायाच्या निमित्ताने त्याच्या स्वतंत्रता काढून घ्यावे. बहुतेकदा कल्पनेतून जो व्यवसायिक मिसरता दृष्टी असेल तो त्याची जाणून घ्यायला लागतो. अजूनही असे दिसते आहे की लोकांनी त्याची सुरक्षा घेऊन देवाला असे पूर्वी कृपा व्यवसायिक व्यवसाय करून घेतले होते असा आज काही काळासाठी मिळेल. आजच्या संदर्भात याकाळात आज कल्पनात्मकता ही काळजात आहे तीच बहुतेकांनी घेतलेल्या कल्पनेतून आजच्या संदर्भात देवाला काळजात आहे. सरकारातून घेतले प्रदत्त केले जाणारे कृपा व्यवसायिकांनी आज गृहसजायतीच्या कल्पने देवाला मिळेली कृपा केली कल्पना त्याची मर्यादा आहे " कल्पनात्मकता असा व्यवसायिकांनी काळजातून आजच्या संदर्भात घेतले जाणारे बहुतेक व्यवसायिकांनी काळजात घेतले दिसते तेव्हा शाक्यता असे म्हणता येईल

सारांश

भारतीय समाजाला जातीयवादातून पूर्णतः मुक्त करणे म्हणजे असे जातीयवादातून अंधारित बहुतेकदा घडवता ही भारतीय दृष्टीने कल्पनेतून घडवता येईल असे बहुतेकांनी कल्पित एका जातीयवादाकडून दुसऱ्या जातीयवादाकडे कट्टीने येत असे व त्या संदर्भात नेहमीच व्यवसायिकांनी घेतले जाते. प्राचीन काळात बहुतेकांनी व्यवसायातून दृष्टीने समाजात बदलून आणत आले होते. प्राचीन लोकांच्या गरजा साकारणे म्हणूनच आज होय. बहुतेकांनी व्यवसाय ही प्राचीन समाज जीवनाचा अंग आहे. स्वातंत्र्य काळात समाज परिवर्तनबरोबर बहुतेकांनी कल्पित आमुखात बदल घडवले दिसतात. परिवर्तनाच्या अंधारत काही वर्षे जातील व अंधारतून आमुखातून कल्पित जातीय विडम्बनाक सुरु केली होती. या काळात अनेक प्रकारचे प्रश्न होत आले होते. पुढे औद्योगिकरण, नागरिकरण, शिक्षणाचा प्रसार, व्यवसाय स्वातंत्र्य, जातीय अंधार होत आले. प्रत्येक बहुतेकांनी कल्पित हीच होत गेलेली दिसते. कल्पित बदललेल्या सामाजिक परिवर्तनात कल्पित व्यवसायातून उरलेले दिसत नाही. बहुतेकांनी कल्पित नवतेर होण्याच्या मार्गावर असताना मात्र बहुतेकांनी व्यवसायातून कोठल्या मार्गावर आणता नसे. या काळातूनच कोठल्यातून अजूनही अंधार असे म्हणता येईल


PRINCIPAL
 Sushmi Vivekanand Mahendrapalga
 Mahendrapalga To Mahendrapalga



संदर्भ सूची :-

1. बलुतेदार पृ विकिपिडिया, मुक्त ज्ञानकोशागून, <https://@ms-wikipedia-in@24/>
2. अत्रे, त्रि. मा. (1959) 'गावगाडा' ह. वि. मोटे प्रकाशन, औरंगाबाद, पुणे, पृ. क्र. 9
3. लोटे, रा. ज. (2002) 'ग्रामीण व नागरी समाजशास्त्र', भागदूरक विद्यापीठ छंद कं. औरंगाबाद, पृ. क्र. 80
4. शेख, जहारा ए. आर. व जोधळे ईश्वर, एन. (2013) 'ग्रामीण समाजशास्त्र औरंगाबादक जनरल प्रकाशन, पृ. क्र. 120
5. लोटे, रा. ज. (2002) उपरोक्त, पृ. क्र. 81
6. अत्रे, त्रि. मा. 'गावगाडा', निरागीध, प्रभाकार (संपा.) इस्लामपूरक भाग-आजंदा प्रकाशन, पृ. क्र. 39
7. शेख, जहारा ए. आर. व जोधळे ईश्वर, एन. (2013) उपरोक्त, पृ. क्र. 121
8. अलुते-बलुते <https://@mr-vikaspedia-in@social&welfare@>
9. कुरणे, विशाल. (2022) कुंभार समाज संस्कृती आणि वाटचाल पुणेक ज्ञानमंगल प्रकाशन, पृ. क्र. 09
10. लुतेकर, प्रल्हाद. (2009) गावगाडाचा शिल्पकार पुणेक स्वरूप प्रकाशन, पृ. क्र. 05
11. खोटे, अश्विनी. (2012) व्यथ कुंभार समाजाच्या, २ पुढारी 28 फेब्रुवारी, 2012
12. शिलेदार, दिनकर (संपा.) (2020) 'आपले छंद, बलुतेदारी कासवी आणि आजवी', संग्रहा दिवाळी अंक-2020. लुतेकर, प्रल्हाद. 'बलुतेदार स्थिती, गती बदलपास हवी', पुणेक दिनकर पब्लिकेशन, पृ. क्र. 12
13. कदम, विश्वास व गावंडे, गणेश . (2013). 'भारतीय अर्थव्यवस्था', औरंगाबादक कौत्स पब्लिकेशन, पृ. क्र. 29
14. शिलेदार, दिनकर (संपा.) (2020) उपरोक्त, पृ. क्र. 12
15. लुतेकर, प्रल्हाद. (2009) उपरोक्त, पृ. क्र. 30

(Signature)

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed, Dist. Nanded



P
Parishodh

PARISHODH JOURNAL

ISSN NUMBER: 2347-6648

UGC-CARE LIST - GROUP X

OPEN ACCESS JOURNAL

A PEER REVIEWED / REFERRED JOURNAL
(GALLERY/PARTSODH-THAOR-
TS1875530513.PHO)

A MONTHLY PUBLISHING JOURNAL

HOME () CALL FOR PAPERS (CALL-FOR-PAPERS/) GUIDELINES (GUIDELINES/) PROPOSAL (PROPOSAL/)

ARCHIVES (ARCHIVES/) EDITORIAL BOARD (EDITORIAL-BOARD/) CONTACT (CONTACT/)

Volume VIII-Issue-IX-September-2019

- 1. SMART PORTABLE COTTON PICKING MACHINE** (<https://app.box.com/s/toopfjqs8g1jfra33cwn6bs3wbjhb4>)
Swagata Sarkar, Sanjana R, Rajalakshmi S, Harini T J, Benita C, Sri Sairam Engineering College, Chennai
Page No: 1-4
DOI:09.0014.PARISHODH.2019.V8I9.0086781.56714 (<https://app.box.com/s/toopfjqs8g1jfra33cwn6bs3wbjhb4>)
- 2. AUTOMATIC BICYCLE FOR PHYSICALLY CHALLENGED (CYHKE)** (<https://app.box.com/s/0rpa88bqlr10dew7vc460458fw83ejdw>)
Madhana Mohan K, Balaji B, SatishKumar C, SuriyaPrasanna R, Sri Sairam Engineering College, Chennai
Page No: 5-13
DOI:09.0014.PARISHODH.2019.V8I9.0086781.56715 (<https://app.box.com/s/0rpa88bqlr10dew7vc460458fw83ejdw>)
- 3. HUMANS AND ROBOTS IDENTIFYING THE PERSON OR BIONIC PERSON THROUGH CHATBOT- DUSTING OFF THE TURING TEST**
(<https://app.box.com/s/4afjd4xtthgo0q7qacsztzkkysz0919>)
V Lalitha , Divya Dharshini A, DesuSavya , Divya B, Sri Sairam Engineering College, Chennai
Page No: 14-19
DOI:09.0014.PARISHODH.2019.V8I9.0086781.56716 (<https://app.box.com/s/4afjd4xtthgo0q7qacsztzkkysz0919>)
- 4. ML BASED VIRTUAL PERSONAL ASSISTANT** (<https://app.box.com/s/nu3ddvfy71vsaesm6gerkcg4nrewm>)
V Lalitha, A. Dinesh, J. Parameswaran, S. Dinesh Kumar, Sri Sairam Engineering College, Chennai
Page No: 20-26
DOI:09.0014.PARISHODH.2019.V8I9.0086781.56717 (<https://app.box.com/s/nu3ddvfy71vsaesm6gerkcg4nrewm>)
- 5. Artificial Intelligence - Smart Energy Distribution and Management System for small autonomous Photo-voltaic Systems**
(<https://app.box.com/s/yg21tp8hp2dxbnyroxbj4juf7kzy2oc>)
Dr. B. Meenakshi, Dr. T. Porselvi, C. R. Raja Vignesh, S. Venkataraju, S. Swaminathan, Sri Sairam Engineering College, Chennai
Page No: 27-33
DOI:09.0014.PARISHODH.2019.V8I9.0086781.56718 (<https://app.box.com/s/yg21tp8hp2dxbnyroxbj4juf7kzy2oc>)
- 6. Dual Tone Multi-Frequency Control Based Solar Crr - A Case Study** (<https://app.box.com/s/tvdbyhlg8v8egxgyf5z25oygnad7hvxm>)
Gayathri Devi Ramaraj, Dr Boorna Nagarajan, Kushal Kumar Sekhar, Ajay Ponkumar Murugan, Sivaraman Ravichandran, Sri Sairam Engineering College, Chennai
Page No: 34-38
DOI:09.0014.PARISHODH.2019.V8I9.0086781.56719 (<https://app.box.com/s/tvdbyhlg8v8egxgyf5z25oygnad7hvxm>)
- 7. Modeling and Simulation of Various Luo Converter Topologies fed BLDC Drive Using Solar PV Array**
(<https://app.box.com/s/zy1zaghboai9ve6pb7mezehsnwgq3cax>)
M Devi, New Prince Shri Bhavani College of Engineering and Technology, Chennai, India
B. Jayachandran, Thangavelu Engineering College, Chennai, India
Page No: 39-42
DOI:09.0014.PARISHODH.2019.V8I9.0086781.56720 (<https://app.box.com/s/zy1zaghboai9ve6pb7mezehsnwgq3cax>)
- 8. An Intelligent and Non Integer Order Coordinate Control for LFC of Multi Area Power System Integrated with EVs**
(<https://app.box.com/s/twib00e2k5fqny6el3n176343cyf1hkl>)
M Devi, New Prince Shri Bhavani College of Engineering and Technology, Chennai, India
B. Jayachandran, Thangavelu Engineering College, Chennai, India
Page No: 43-50
DOI:09.0014.PARISHODH.2019.V8I9.0086781.56721 (<https://app.box.com/s/twib00e2k5fqny6el3n176343cyf1hkl>)
- 9. PERFORMANCE UNIFIED POWER QUALITY CONDITIONER USING INSTANTANEOUS REACTIVE POWER THEORY**
(<https://app.box.com/s/7a1zcl69aeskalkmpetpcv98f0johnl>)
M Devi, New Prince Shri Bhavani College of Engineering and Technology, Chennai, India
B. Jayachandran, Thangavelu Engineering College, Chennai, India
Page No: 51-54
DOI:09.0014.PARISHODH.2019.V8I9.0086781.56722 (<https://app.box.com/s/7a1zcl69aeskalkmpetpcv98f0johnl>)
- 10. ESTIMATION OF FECUNDITY RATE OF AN AIR BREATHING FISH Channa gachua IN LANTIC WATER BODIES OF WEST CHAMPARAN, BIHAR** (<https://app.box.com/s/k85gj47gs5bi0n91auqr6bjcbwnpzg2e>)
Mandip Kumar Roy, Amresh Kumar Dco, TP Varma College Narkataganj West Champaran Bihar (India)
Page No: 55-61
DOI:09.0014.PARISHODH.2019.V8I9.0086781.56723 (<https://app.box.com/s/k85gj47gs5bi0n91auqr6bjcbwnpzg2e>)

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramahad To Mukhed, Dist. Nanded

- 1. **Introduction**
This report is a study of the...
Page 1 of 10
- 2. **Methodology**
The data was collected through...
Page 2 of 10
- 3. **Results**
The findings of the study are...
Page 3 of 10
- 4. **Discussion**
The results indicate that...
Page 4 of 10
- 5. **Conclusion**
In conclusion, the study...
Page 5 of 10
- 6. **References**
The following sources were used...
Page 6 of 10
- 7. **Appendix**
Detailed data tables are provided...
Page 7 of 10
- 8. **Summary**
This report summarizes the...
Page 8 of 10
- 9. **Final Remarks**
Further research is needed...
Page 9 of 10
- 10. **Index**
A list of topics and page numbers...
Page 10 of 10

Handwritten text at the top left, possibly a signature or header, including a checkmark and some illegible characters.



Small text or a stamp located in the lower right quadrant of the page.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukherjee Nagar, New Delhi



मराठी भाषेचा सगम - एक अभ्यास

डॉ. बालाजी परबतराव खराबे
मराठी विभागप्रमुख,
स्वामीविवेकानंद महाविद्यालय,
मुकामबाद ता. मुल्हेड जि. नांदेड
फोन. ०४०३९७२६२०.

संत ज्ञानेश्वर मराठी भाषेची महती सांगतांना असे लिहतात की, भाड्या म-हाटाची बोलु कौतुकी तरी अमृताते पैजा जिणे ऐसी अक्षरे रसिके गेन यावरून मराठी भाषेची महती आणि महत्त्व कळते बोलणीभाषेत तर मराठी गोड आहे, परंतु लिखाण/लिपी मध्ये पण ही अत्यंत ऊत्तमदार व सुंदर आहे. एवढेच नाही तर मराठी भाषा ही श्रीमंत आणि समृद्ध आहे. भाषेचे महत्त्व मानवी जीवनात अत्यंत मोलाचे आहे. समाजप्रिय म्हणून ओळखल्या जाणा-या मानवी प्राण्याला, संप्रेषणासाठी भाषेचा उपयोग हा करावा लागतो. म्हणतात ना "गरज ही संशोधनाची जननी आहे." त्याच प्रमाणे संप्रेषणाच्या गरजेपोटी मानवाने भाषेची निर्मिती केली. याची व्याख्या विचारवंतांनी, "विचार व्यक्त करण्याचे एक साधन म्हणजे भाषा" अशी केली आहे.

मराठी भाषेचा इतिहास अभ्यासला, तर आपणाला असे लक्षात येईल की मराठी ही इंडो-युरोपियन कुळातील भाषा आहे. याहीपुढे जाऊन, काही विचारवंतांच्या मते संस्कृत भाषा ही मराठीची जननी आहे. भाषेच्या इतिहास अभ्यासात असताना असे सापडते की कोणत्याही भाषेचा एखादा ग्रंथ अथवा लिखित पुरावा जेव्हा सापडतो, तेव्हा हे ही पुराव्यानीशी सिद्ध होते की ती भाषा सातशे ते एक हजार वर्षांपूर्वी तयार झालेली असावी. मराठी भाषेत ऐतिहासिक पुरावे शिलालेख, ताम्रपट, भूर्जपत्र च्या स्वरूपात सापडले आहेत आणि ब-याच ग्रंथांमध्ये याचा समावेश आहे पण आपणाला दिसून येते. या सर्व

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukambad Tal. Mulshed Dist. Nanded

पुनर्जागरण आघाताने असे नृणांतून इतकत नाही की जगातपास एक ते दोन हजार
अधिक भाषा इतिहास मराठी भाषेला लागला आहे.

मुले मराठी अशीत मराठी म्हणून गवानी म्हणतात

लागले आम्हाला मग मराठी मराठी

जावली खरेच वगैरे ऐकता मराठी

या मराठीच भाषेच स्वतः कला ज्ञान हे ही जणून घेणे म्हत्वाचे
मराठी भाषेच स्वतः

मराठी भाषा ही आर्यांची भाषा समजली जाते. या भाषेच स्वतः उत्पत्तीचे ज्ञान
असे मानतात. उत्तरेच्या सातपुडा पर्वत संघातून ते कावेरीच्या बसिन्नेकडील प्रतापपर्वत
तक दनागडून ते दक्षिणेच्या गोव्याच्या सिन्धु-गार्गात पोचला आहे. दनागड मराठीच्या
दक्षिण भागात ही भाषा विकसित झाली आणि महाराष्ट्रात स्थिरावली. मराठी भाषेक
मराठी म्हणून अभिमानाने मानतात.

सर्वोपरी मराठीच्या शब्दात समावेश झाले तर

नव मराठी। तुडिया पायी नां तर, मर धन बाहियलं

तुडिया नानी, तुडिया धानी अखंड सुनि रहिरं

कस्तानमलां तुडीच गोडीं वाखायची मर आई

मला आवडे तुजा विचाया, तुडीच निर अवाई?

वरित इतिहासानुसार महाराष्ट्रात विकासाच्या मराठी भाषेचा विकास झाल्याने
होत गेला. मादनावात मराठी भाषा वेगवेगळ्या पद्धतीने बोलली जाऊ लागली अनेक
पेट-भाषा मराठीत निर्माण झाल्या. मराठी भाषेचे टपे :



पूरुवैदिक



वैदिक



पाली



प्राकृत



संस्कृत

असे वेगवेगळे विकासाचे टप्पे इस 500-700 वर्षांपासून बनले. संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम जनाबाई, संत मुक्ताबाई अशा अनेक महान संतांची मुनी टरली. नायबोली मराठी असलेली महाराष्ट्राची भूमी वि. न. कुडकर्णी सासल्या कवीनी मराठी भाषेची थोरवी मराठीतील कवितेतच पुढीलप्रमाणे गायली आहे.

माझ्या मराठीची गोडी, नला वाटले अशीट

माझ्या मराठीचा छंद नना नित्य मोहवीत

ज्ञानोबाची तुक्यांची मुक्तेशांची जनाईची

माझ्या मराठीची चोखडी रामदास - शिवाजीची

या रे या रे अवघे जन

हाक माय मराठीची

बंध खळाळा गळाले

साक्ष भीमेच्या पाण्याची ३ *

संत ज्ञानेश्वरापासून ते रामदास स्वामी पर्यंत अनेक संत महात्म्यांना जन्म देणारी महाराष्ट्राची भूमी आणि या भूमीत रिथरावलेली मराठी भाषा यांचे वर्णन कुळकर्णी यांना वरिल प्रमाणे सुंदर मराठी शब्दरचनेत केलेली आपणांस, मराठी गद्य साहित्यात आढळते. कवी कूसुमाग्रज यांनी मराठी भाषा 'ज्ञानभाषा' व्हावी यासाठी अथक परिश्रम घेतले. त्यांचे महाराष्ट्राच्या सांस्कृतिक इतिहासात मोलाचे स्थान आहे. त्यांचे मराठी भाषेवर प्रेम त्यांच्या काव्यातूनही आपणास दिसून येते ते म्हणतात.

माझ्या मराठी मातीचा लावा ललाहास टीळा,

हिच्या संगाने जागल्या द-याखो-यातील शिळा,

हिच्या संगाने जागल्या द-याखो-यातील शिळा,

हिच्या कुशीत जन्मले काळे कणखर हात

ज्यांच्या दुर्दम धीराने, केली मृत्यूवरी मात

माझ्या मराठी मातीला नका म्हणू हीन-दीन

स्वर्गलोकाहून थोर, मला हिचे महिमान्

रत्नजडित अभंग, ओवी अमृताची सखी

चारी वर्णांतून फिरे, सरस्वतीची पालखी। ४*



संतांचे संस्कार व भक्ती युक्त अर्भंग जणूकाही रत्नजडीत आहेत, मराठी, ओव्यांमधून अमृतधारा जणु वाहतात, विद्येची देवी माता सरस्वतीची जणु पालखी. यातून आपणास भारतेतूंतकी थोर माझी गाय मराठी आहे. असे माननारे कवी कुरुमाग्रज त्यांना मराठी भाषेला एक आगळेवेगळे स्थान मिळवून देण्याचा प्रयत्न केला आणि त्यामुळे मराठी भाषेला अगिजात भाषेचा दर्जा मिळाला. म्हणूनच कवी कुरुमाग्रजांचा जन्मदिवस 25 फेब्रुवारी हा जगभरात "मराठी भाषा दिन" म्हणून साजरा केला जातो.

आधुनिक महाराष्ट्रातील सुरेश भट्ट, कवी कुरुमाग्रज सारख्या अनेक कवींनी आपल्या सुंदर काव्यरचनेच्या माध्यमातून 'मराठी' भाषेची महती गायली आहे. तर धर्मभाषा मानणा-या महानुभाव पंथातील आचार्य श्री चक्रधर स्वामींच्या लिळाचरित्रात काऊळ्याच्या कथा लहान मुलांना आजही घरात सांगितल्या जातात आणि या चिऊकाऊच्या गोष्टींचे वर्णन लिळाचरित्रात सापडते, ते असे,

काऊळ्याचे घर शेणाचे

साळीचे मेणाचे

पाऊसाळ्या काऊळ्याचे घर पुरे जावा । १०

इ. स. 1200 च्या आसपास लिहलेल्या लिळाचरित्रात मराठी भाषेत लिहलेली चिऊकाऊची गोष्ट आज पण लहान मुलांनी सांगितली जाते ती अशी,

एक होती चिमणी एक होता कावळा

कावळ्याचे घर होते शेणाचे

चिमणीचे घर होने मेणाचे।'

PRINCIPAL

**Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukrambad Tal. Mukand. Dist. Nanded**

當欲求其始，必先求其終，然則其始與終，豈有異乎？
夫始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。
始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。
始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。

夫始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。
始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。
始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。
始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。

夫始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。
始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。
始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。
始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。
始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。
始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。
始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。

夫始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。

始與終，豈有異乎？始者，終之始也；終者，始之終也。



हारा, हेरा, संजनु। कॅसी.....

ऐसे प्रतिभाषे वेगळाले । घट असती नामधिले ।

एके संस्कृते सर्व कळे । ऐसे कैसेन ?

महाराष्ट्र गाथा पृ. 29

संताच्या याकाळात मराठी लिपीचे दोन वेगवेगळे प्रकार असलेले आढळते

1. बालबोध / देवनागरी लिपी
2. मोडी लिपी

मराठी भाषा केवळ महाराष्ट्रातच नव्हे, तर इतर परकीय भाषेतही प्रभुत्व असलेली जाणवते ज्या काळात ख्रिस्ती धर्मप्रसारक विद्वान धर्मज्ञांच्या प्रचार आणि प्रसारासाठी भारतात आले होते, तेव्हा त्यांनी महाराष्ट्रात धर्मप्रसारासाठी मराठी भाषेचा वापर केलेला आढळतो त्यांना मराठी लोकांनी महाराष्ट्रातील विद्वान धर्मज्ञा पुरस्कार करावा यासाठी जे प्रयत्न केले, त्याचा एक भाग म्हणून त्यांनी नव्याने ख्रिस्ती होणा-या लोकांकरिता त्यांच्याच भाषेतून धार्मिक पुस्तके पुरविली होती. ह्यासाठी त्यांनी मराठी भाषेत लिखाण केले. महाराष्ट्रात धर्मप्रसारासाठी येणा-या त्यांच्या धर्मबांधवांना भाषा शिकता यावी यासाठी त्यांनी मराठीविषयी त्यांच्या भाषेत रचना केल्या. याचाच एक भाग म्हणजे

इ.स. 1916 मध्ये रायतूरला छापले गेलेले "ख्रिस्तपुराण" (रोमी) रोमन लिपीत सापडेल हे फादर स्टीफन्स यांनी मराठीत ओवीबद्ध पद्धतीन मांडलेले आहे. याच्या मद्य प्रस्तावनेत फादर स्टीफन्स म्हणतात-

"हे सर्व मराठी भासेन लिहिले आहे. हेआ देसिंचेआ ही भास परमेश्वराचेया

वस्तु निरोपुसि योग्य एसी दिसली म्हणउन" - मातासे पृ. 42

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Muzumdar Road, Mumbai-400 001, Dist. Mumbai

पुणे अदर्याच्या शहरात ब्रिटिशशासनातील शहरात कार्यवाहातसाठी आलेल्या कंपनी, इंग्रज धर्मीयपदेशकाने कोलकात्या पासून उदरगती १७ मैल अंतर अगदीच्या श्रीगंगापूर येथे मिशन आणि मुद्रणालय स्थापन केले होते. त्याच मार्च १७८६ मध्ये देवनागरी नावाच्या पंडिताच्या साहाय्याने मराठी भाषेतील देवनागरी लिपीतील पहिले मुद्रित पुस्तक कापले जावे नाव होते, "मराठी भाषेचे व्याकरण" हाच १७८७ साली मुद्रित कापलेले पहिले पुस्तक ठरले ते अमेरिकन मिशनरीचे "भाषाशिकूल सुवर्णमान" हाच मिशनरींनी पुढे मराठी आणि गुजराती भाषा शिकविण्या-या शाळा मुद्रित शहरात स्थापन केल्या.

शिक्षणाचे दोन प्रकार पदव्यात - औपचारिक आणि अौपचारिक इंग्रजींनी भारतावर अनेक वर्षे राज्य केले त्यात काही यशस्वी कामेही केली त्यांनी औपचारिक शिक्षण पद्धती भारतात सुरु केली. "मुद्रित देवनागरी आणि शाळापुस्तक मंडळी" नावाची संस्था इंग्रजांच्या मुद्रित देवनागरीच्या पहिल्या सर्वेकार ठर मार्केट स्ट्रुअर्ट एलिफिन्स्टन याने दिनांक २१ ऑगस्ट १८२२ रोजी स्थापन केली. यासाठी त्याने सपानिक पुढील देवनागरी शंकरशेट धाकजी दादाजी, मरुवा इंग्रजींचे साह्य घेतले या मंडळींनी १८२६ पर्यंत अनेक शालेय उपयोगी ग्रंथ मराठीत तयार केले- उदा- मोल्नरच्या मराठीकोश दादाबा पांदूरंगाचा महाराष्ट्र भाषेचे व्याकरण आणि इंग्रज पुढे सुरु झाला मराठी मद्रास इंग्रजी अवतार मराठी भाषेवर इंग्रजी भाषेवर प्रमुक्त दिसून येवू लागले. महानुभाव पत्रात काही मौजक्या विरामविन्हावा वापर होता ब्रिटिशशासनात मराठी औपचारिक शिक्षणामध्येही इंग्रजीच्या अनेक विराम विन्हावा वापर केला जावू लागला दि. २६ मार्च १८४३ रोजी नावाच्या नियतकारिकांतील अंकाचा पुढील उतरा याचे उदाहरण होय -

"पुण्यासारख्या शहरात विद्याशाळा ४-५च आहेत. पन्नु ग्रंथ वाचण्याचे जाणा अद्याप लोकांस मर्हीत नव्हती व विद्या लयांग कोणा नेटव्ह लोकांस मर्हीत नव्हता



परंतु सांप्रतचे गवर्नर साहेब सर जॉर्ज क्लार्क यांनी लोकांचे सुधारणेकडे लक्ष देऊन जजसाहेब हेनरी ब्रोन यास सुचविले की, पुण्यात लायब्ररी स्थापन्याचा वेत करावा. यासंदर्भात केवळ () याच एका विरामचिन्हाचा वापर झालेला दिसतो- (संदर्भ-8 तर संदर्भ 9 मध्ये () () () अशा वेगवेगळ्या इंग्रजी विरामचिन्हांचा वापर झालेला आढळतो यावरून आपणारा हे लक्षात येते की मराठी भाषेच्या विकारात इंग्रजीचा प्रभाव अधिक प्रमाणात आढळतो- तो वेगवेगळ्या विराम चिन्हाच्या वापराच्या माध्यमातून.

औपचारिक शिक्षण पद्धतीमध्ये उच्चशिक्षणात मराठीचा समावेश सर्वप्रथम मुंबई विद्यापिठात झाला सन 1857 ला मुंबई विद्यापिठाची स्थापना झाली, तेव्हा "मराठी" हा विषय वैकल्पिक म्हणून मॅट्रिक ते एम.ए या सर्व परिक्षांना घेता येवू लागले परंतु परत 1864 पारून मराठीच उच्च शिक्षणातून उच्चाटन झाले. (पाटणकर 1984 पृ 9-14)

पुढे अनेक महान प्रेमीकांच्या प्रयत्नाने आणि चळवळीने "मराठी" भाषा ज्ञानभाषा असावी यासाठी प्रयत्न झाले. शिवकालापारून मराठी ला महाराष्ट्राची राजभाषा हा दर्जा प्राप्त झाला. प्रशासनिक सर्व व्यवहारात मराठीचा अनिवार्य वापर सुरु झाला. महाराष्ट्राचे पहिले मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण यांच्या पुढाकाराने अनेक व्यवस्था अस्तित्वात आल्या "भाषा मंडळ", "भाषा सल्लागार मंडळ" देश संस्था स्थापन करून इंग्रजीतून चालणारा राज्यकारभार मराठीतून सुरु झाला. तसेच विविध शासकीय कार्यालयात कार्यालयीन अधिकार व पदनाम यांना इंग्रजी संज्ञाचे मराठी पर्याय मिळवून देणारा 'पदनामकोश' प्रकाशित झाला शासन व्यवहार कोश इ.स. 1973 ला प्रकाशित झाला. पुढे ज्ञान, विज्ञान शाखांना मराठी पर्याय शब्दांचे अनेक शब्दकोश तयार झाले. तसेच व-हाडी, अहाराणी इत्यादी अनेक मराठी भाषेच्या विविध बोलींची देवान घेवाण महाराष्ट्रात व

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed Dist. Nanded




तसेच मराठीवर इंग्रजी भाषेच्या परिणाम म्हणून ब्रिटिश राजवटीच्या काळात कादंबरी, लघुकथा, शौकालिका, नाटक, आत्मचरित्र इ. अनेक नव्य साहित्य प्रकार मराठीत उगम पावले पुढे कविद्वय केशवसुतांसारखे आधुनिक कवितेचे प्रवर्तक जन्मला आले. नंतर आधुनिक काळात अनेक मराठी साहित्यकारांनी मराठी भाषेचा लिखाणाच्या माध्यमातून उच्च स्थान प्राप्त करून दिले. तसेच मराठी भाषेच्या शास्त्रगुढ व्याकरणानुळे मराठी भाषेतील पद्य व गद्य साहित्य साकार झाले आणि महात्मा फुले, दि.वा. मिसबादकर, प्र. कं. अत्रे, पु.ल. देशपांडे, वि.वि. जोशी, कवी कुसुमाग्रज, न. दि. नाडगुडकर, सुरेश भट, वि. स. खांडेकर, बहिणाबाई चौधरी, ना. सि. फडके, इ. अनेक मराठी साहित्यकारांनी तत्वज्ञान, कथा कादंबरी, नाटक, संगीत, कविता इ. या माध्यमातून आपले योगदान दिले. अशाप्रकारे मराठी भाषेच्या विकासाचा एक प्रगल्भ प्रवास सुरू झाला.

अशाप्रकारे, एका प्रगल्भ प्रवासाच्या माध्यमातून महाराष्ट्रात मराठी भाषेची नवी वैचारिक संपदा निर्माण झाली. विविध लोककला (लावणी, मारुड, गोंधळ, पंवाळा इ.) नाटक, कथा, कविता, ग्रंथ, सनिष्ठा इत्यादी उत्तम साहित्य लिहाले गेले अनेक साहित्यकारांनी ही वैचारिक संपदा जपण्यासाठी तसेच वाढविण्यासाठी प्रयत्न केले. आधुनिक युग हे तांत्रिक युग आहे. प्रगतीचा आढावा म्हणून अनेक भाषा संशोधकांच्या माध्यमात उपलब्ध आहेत. त्यात मराठी भाषेचा पण समावेश आहे. तसेच विविध विज्ञान शाखांचे ज्ञान सुद्धा मराठी भाषेत उपलब्ध आहेत. आज मराठी राजभाषा म्हणून प्रचलित आहे. तसेच शाळा, महाविद्यालये आणि शासकीय कार्यालयात मराठी राजभाषा दिन साजरा केला जातो. बहिणाबाईच्या शब्दात सांगायचे झाले तर-

' माजी माय सरसोती मने शिकविने बोली

लेक बहिणाच्या मनी किती गुपित पेरली ।'


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukambad Tal. Mukhad. Dist. Nanded

संदर्भ

1. महाराष्ट्र आणि मराठी भाषा- जोगळेकर व.न. दलित साहित्य
2. मराठी भाषा आणि शैली- अश्विनी सखेरा वोगडे, सखेरा वामन वोगडे, दलित साहित्य
3. मराठी भाषा उच्चारण आणि लेखन- वंदनास जोशी शैक्षणिक
4. प्राचीन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास- डॉ. मोहन गळक, कैलास पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद.
5. प्राचीन मराठी वाङ्मयाचे स्वरूप - प्र. ह. श्री. शंभोलीकर.
6. मराठी भाषेचा इतिहास (मुद्रक)- लेखक व.न. जोगळेकर (इतिहासिक)
7. आधुनिक भाषाविज्ञान आणि मराठी भाषा - डॉ. दादा मोरे, कैलास पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद.
8. वादकालीन मराठी भाषा- तुळपुके श. मा. समीक्षा.
9. मराठी भाषा अध्यापनातील क्षेत्र प्रयोग- सांख्ये सखेरा व. समीक्षा.
10. मराठी भाषा वाढ आणि बिघाड - औरंगाबाद श्री. क. समीक्षा.
11. मराठी भाषा भाषाशास्त्र आणि व्याकरण- इनके विषय समीक्षा.
12. मराठी भाषा व्यवस्था व अध्यापन- इंदोपूरकर शं. द. समीक्षा.
13. मराठी भाषा उदय व विकास- लेखक कुलकर्णी कृ. पा. (समीक्षा)
14. मराठी भाषेचे नूतन - समीक्षा श्री. खेरे दिपनाथ
15. द्रविड महाराष्ट्र - समीक्षा श्री. खेरे दिपनाथ

श्री. वीरेंद्रसिंह खंडारे

21 Feb. To 24 Feb. 2020



United Nations
Educational, Scientific and
Cultural Organization

Under the patronage of the
Indian
National Commission
for Cooperation with UNESCO



International conference on Intangible cultural Heritage

MCIMSD 2020

Volume I

Virendrasinh Khandare

Editor in chief



Indian Institute of Social Sciences and Folklore Research, Parbhani

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mahamadnagar, Parbhani



MCIMSD 2020 (Volume I) :

(A collection of articles, essays and research papers submitted to International conference on Intangible cultural Heritage, MCIMSD 2020 held at Pune on 21 to 24 February, 2020)

ISBN978-81-89730-35-2

Publisher:

Lokvidya Prakashan

Indian Institute of Social Sciences and Folklore Research,
Shivram Nagar, Parbhani 431 401

First edition:

21 February, 2020

All rights are reserved

Printer:

Pranav Printers

Sadashiv Peth, Pune

Price:

500 INR

No one should use any part of this book for any purpose without the prior permission of the editor.

The text contained in this book are articles, essays, research papers by various researchers, authors submitted to the International conference on Intangible cultural Heritage, MCIMSD 2020 held at Pune on 21 to 24 February, 2020. Editor does not necessarily agree with the thoughts and opinions of the authors involved in this book. The author will solely responsible for his / her writing.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded



69 श्री स्वामी अणभवने
रावेर गुरु

| | | | |
|-----|---------------------------|--|-----|
| 71. | बलवंत बलंग पवार | महाराष्ट्राचे कुलदेवता देवकीचा संतोष | 314 |
| 72. | श्री. योगेश्वर ठाकरे | श्री. कर्ण मंदिर आणि, मिरात महाराष्ट्र | 317 |
| 73. | श्री. प्रो. एच. ए. गंगोले | शिरी मठाकडेला | 322 |
| 74. | श्री. सुरेश शिंदे | महाराष्ट्राच्या लोकभेदातील मठ व लोकभाव विकास | 325 |
| 75. | श्री. बालाजी धारगे | शेरा आणि साधनांकुटी | 332 |
| 76. | श्री. बालू बापट | लोकसहित्य आणि इंग्लंडतील लोकभाव | 335 |
| 77. | श्री. ज्योती तुभजे | विशालता प्रोबोरीतील मंदिरक प्रतिष्ठा | 340 |
| 78. | श्यामली जयदेव | राजकीय देवळाची लोकभावणी | 344 |
| 79. | श्री. मकराण गी | राष्ट्रियोत्थी विद्यापीठातील इंग्लंडोत्थी | 350 |
| 80. | श्री. सुधाश देवना राठोड | सांघीय संवेदन्य कुलीन राष्ट्रीय विकास | 354 |
| 81. | श्री. भगवान कुंभेकर | दंडाणव्याची लोकभावणी | 358 |
| 82. | श्री. विठ्ठल वामरे | शेराकोठी, मकराण-विशेष | 361 |
| 83. | श्री. प्रतापराव गुरु | शिंदू धर्मोत्थी विविध मठ-साधनांचे | 365 |
| 84. | श्री. पार्वी रंगल गुरु | कैलासपुत्री या कृष्ण गुरु जीव व कार्य | 369 |
| 85. | श्री. मठा गुरु | गुरु महाकाची पूर्वोत्थीका आणि स्वतंत्र पूर्वकाळ आणि स्वातंत्र्यातीलची महत्त्विली | 373 |
| 86. | श्री. बालाजी शिरोळे | शुद्ध रावणी महाराष्ट्रातील दुर्लभित गुरु समाज | 378 |
| 87. | श्री. रा. ज. धारगे | पाटव काठीर श्री. अर्धरात्री संस्था मंदिर वेळापूर | 381 |
| 88. | श्री. शार जे. मेड्या | सोदाय सण, समृद्धी व समाजविकास | 385 |
| 89. | श्री. अर्चना बापट | मठाकाठी लोकभाव | 391 |
| 90. | श्री. रामदेव गवळी | छटी मठ लोकभावणीतील प्रयोगात्मकता | 395 |
| 91. | श्री. हनुमंत साठुके | अनुभवाची शिंदेची लोकभाव | 402 |
| 92. | श्री. प्रकाश बापट | मठाकाठी लोकभावणीतील सामाजिक व सांस्कृतिक लोकभावना | 406 |
| 93. | श्री. महादेव दिवकर इकर | आदिवासी ठाकर जगातीची समृद्धी व परंपरा एक अभ्यास | 409 |
| 94. | श्री. जयसिंग सिंगल | बकाय दिवाळी व होळी सण व उत्सव | 413 |
| 95. | | भाष्यदेशातील वेदकाळ धर्मन सभावाचे लोकभाव : गडीदोल (कैलास) | 418 |
| | | राजपूत भाषणा जगातीतील विवाह पद्धत | 422 |


PRINCIPAL
 Swami Vivekananda Mahavidyalaya
 Mukramabad To Mukramabad East, Nanded



स्त्रियांच्या ओवीतील मौखिक आविष्कार

डॉ. बाळाजी खराबे

मराठी विभाग प्रमुख

स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मुकामवाड, जि. नांदेड

प्रस्तावना:

कथा, गीत, म्हणी, उखाणे, लोकगंध, ओवी, आविष्कारणे, इत्यादी लोकसाहित्यातील शब्दसाहित्य बहुधा मौखिक परंपरेने आलेले आहे. काही वेळेस ते लिपिबद्ध झाले असले तरी त्याचे प्रचलन प्रायः मौखिक आविष्काराचेच गहिले आहे. वाङ्मय लोकसाहित्य वाङ्मय निर्मितीच्या प्रवाहातील थोड्यासा वेगळ्या असा वाङ्मय प्रवाह या प्रवाहाचा कोणी एक कर्ता नाही. अमुक एका विशिष्ट कालखंडात लिहिले गेले, असा निश्चित स्वभावाचा कालखंड नाही. निश्चित अशा स्वरूपाची लिखित किंवा मुद्रित गहिता नाही तर लोकजीवनात मौखिक परंपरेने चालत आलेला, कोणत्याही एका व्यक्तीची नाममुद्रा भेऊन उभा नसलेल्या समाजाच्या सर्व घटकाने प्रतिनिधीत्व करणारा श्रम करताना विधी कार्ये करताना राण-उत्सव साजरे करताना, लोकांकडून लोक भाषेत उत्स्फूर्तपणे छंदोबद्ध, गेय अथवा कथात्मक, कथनात्मक, नाटकात्मक अशा विविध रगनारूपात ओवीचा वैशिष्ट्यपूर्ण पध्दतीने आविष्कृत होणारा हा लोकविष्कार आहे. लोकसाहित्य हे गेल्या कित्येक शतके इथल्या मातीत रुढ आहे. लोकसाहित्याच्या या प्राचीन परंपरेचा शोभ मौखिक परंपरेच्या आधारे घेता येतो. या संदर्भात अलेक्झांडर क्रॉप म्हणतात की, 'The Folk song is a song i.e. a lyric poem with a melody, which originated anonymously, among unlettered folk in times past and which remained in currency for a considerable time, as a rule for centuries'¹ म्हणजेच अलेक्झांडर क्रॉपच्या मतानुसार लोकगीत किंवा ओवी गीत हे भावगीत असून लोकगीताचा उगम व ओवी गीतांचा उगम हा निरक्षरात होऊन त्यांचा कर्ता अनामीक असतो म्हणजेच ओवी गीतांची निर्माती भूतकाळातील असून कित्येक शतकांची परंपरा या ओवी गीतांना आहे म्हणून स्त्रियांतील ओवी हा गीतांचा मौखिक आविष्कार महत्त्वाचा आहे

विषयाचा अनुबंध:

मराठी लोकगीतात स्त्री गीते विपुल आहेत. त्यातल्या त्यात ओवी गीतांची संख्या कितीतरी आहे जात्याला ईश्वर मानून त्यांच्या साक्षीने गावीलेल्या ओव्या आशय आणि अभिव्यक्तीच्या दृष्टीने वैशिष्ट्यपूर्ण आहेत स्त्री जीवनातील अनेक घटना प्रसंग आणि भावबुभवांची एक चित्रमालीकाच त्यातून प्रत्यक्षात येते. त्यामुळे या गीतांना वेगळेपण आलेले आहे. आंतरीच्या उमाळ्यातून जीवीच्या जिद्दळाळातून या ओव्यांची निर्माती झालेली असल्यामुळे त्या भावस्पर्शी झालेल्या आहेत. ओवीचा अनुबंध स्पष्ट करताना डॉ. तारा भवाळकर म्हणतात की, 'आशयाच्या दृष्टीने ओवीगीतात विविधता पाहावयास मिळते. देवदेवता पुराणातील व्यक्ती, घटना-प्रसंग याबरोबरच कौटुंबिक जीवनातील अनेक प्रसंगावर आधारित ओव्याची रचना झालेली आहे.'² म्हणजेच आशयाच्या दृष्टीने ओवीचा मौखिक आविष्कार पाहायला मिळतो. ओवी हा छंद अक्षरसंख्या असून दोन रूपात आज तो आपल्याला पाहायला व ऐकायला मिळतो, ग्रंथनिविष्ट व मौखिक अशी ही दोन रूपे, संत ज्ञानेश्वर, एकनाथ, मुक्तेश्वर यांच्या ओव्यांना ग्रंथनिविष्ट रूप प्राप्त झालेले आहे. तर स्त्रियांच्या तोंडीच्या ओव्या आहेत त्यांचे मौखिक रूपाने संकलन होत आहे. ओवीची रचना अत्यंत सुलभ व लवचीक असल्यामुळे सर्वसामान्य, अशिक्षित लोकांना आपले विचार व भावना या रचनाबंधातून सहजपणे व्यक्त करता येतात स्त्रियांनी आपल्या भावभावनांना वाट मोकळी करण्यासाठी ओवी छंदाने प्राध्यान्याने वापर केलेला



आहे. चवथ्या पावल्या शतकात निर्मिती झाली असावी असे वाटते' या संदर्भात डॉ. माहेव खंदारे म्हणतात की, 'ओवी ही तीन पदांची प्रामुख्य रचना असते तिची चरणाने शेवटी एकच असते. चौथा चरण पुन्हा फोडून म्हणावयाचा असतो आजच्याही गीतातील बहुसंख्या ओवींची रचना ही प्रेरणाधीन असते पण त्या चरणासोबत चौथाही एक चरण येतो तो बहुधा नातेवाचक असतो. म्हणजेच स्त्री ओवीगीतांच फक्त चौथा चरण हा नातेवाचक असतो.

मौखिक ओवींच्या संदर्भात डॉ. प्रभाकर मांडे म्हणतात की 'ओवींची रचना अगदी साधीसुपी स्वभाविक आणि मूक्त कृष्णी चार ओळींच्या कडव्याची सोपी पण मळगावर मोड वाटणारी वांगणी जात्यावर सुरवातीला ओल्या म्हणतात. सुख दुःखाच्या संसाराच्या ओल्या हलक्या नेमळ्या लयीवर बाचकर म्हणतांना, सक्ताळी उडून आंधोलीनंतरच्या तजेलदारपणी दळण संताणाच्या निवळ दुःखाच्या मृत्यूच्या ओल्या फारच कठोरपणे लयीत म्हणतात. चाली बदलून फक्त त्यातून त्या त्या ओवीतील कठोरपण, जडता, भयानकता, जाणवत राहिल. आज खेड्यापाड्यात पिठाच्या गिरण्या आल्या तरी जात बहुसंख्य घरातून गेलेल नाही ते श्रद्धेच भावनांचे ठाण आहे.' म्हणजेच ओव्या ह्या फक्त कठोरपणे, दुःखपूर्ण असतात असा समज होण्याचा संभव आहे; परंतु आपल्या असे लक्षात येते की, देवादिकावरील ओव्या सामाजिक, कौटुंबिक आशयाच्या ओव्या तसेच राजकीय, ऐतिहासिक आशयाच्याही ओव्यांचा रचनाबद्ध असतो साधारण पणे ओवी गीतांचे आपल्याला दोन प्रकार करता येतो. १ स्फुट ओवी २ कथात्म ओवी, स्फुट ओवीमध्ये दोन चरणी, तीन चरणी, साडेतीन चरणी, चार चरणी असे पुन्हा उपप्रकार आहेत. याशिवाय ओवीगीतांचा रचनाबद्ध मुक्तछंद असतो. या संदर्भात डॉ. प्रभाकर मांडे म्हणतात की, 'स्त्रीगीतांमध्ये कथात्म-ओवी गीतांचे प्रमाणही विपुल आहे. या कथात्म ओवीगीतांनाच ओवी-आख्यान असेही म्हटले जाते. कारण अनेक सुट्या ओव्यांमधून एक मलग मालिका ह्या दोन असते. फेसावरच्या गीतांमध्ये ही कथात्म-ओवींची रचना आढळते.' म्हणजेच ओवी विविध प्रसंगी मायिली जाते. जात्यावरची ओवी, झोपळगावरची ओवी, विविध विधीच्यावेळी म्हटली जाणारी ओवी आपल्याला ऐकावयास मिळते, स्त्रियांच्या ओवीतील मौखिक आविष्कार ओवीगीत हा प्रकार प्राचीन काळापासून अस्तित्वात आहे. ओवींचा उल्लेख प्राचीन काळापासून आढळतो दळण-काडणे प्रसंगी स्त्रिया ओव्या म्हणत असत. असा उल्लेख जैनांच्या बृहत्कल्प सूत्र भाष्यत आलेला असून ११ व्या शतकातील 'अभिलाषितार्थ-गितांमणी' या ग्रंथात सोमदेवाने स्त्रियांच्या ओवीगीतांचा उल्लेख केला आहे. ११ व्या १२ व्या शतकांमधील सोमशेखर नृपतींच्या 'मानसोल्लास' या ग्रंथात लोकगीतांमधील ओवींचा उल्लेख आलेला दिसतो. म्हणजेच ओवी व स्त्री यांच्यातील मौखिक आविष्कार ओवी मधून प्रकट होतो.

ग्रामीण भागात जीवन जगणारी स्त्री भल्या सक्ताळी ती जात्यावर बसायची दळण टळायची आपल्या मनात दाटलेल्या सर्व भावनिक आविष्कार ती जात्याजवळ व्यक्त करायची जाते हे भाव भावना व्यक्त करण्याचे प्रभावी माध्यम होते ती स्त्री जात्याला ईश्वर म्हणते या संदर्भात डॉ. तारा भवाळकर म्हणतात की,

'जात्या तू इसवर । नको मल जड जावू

बयाच्या दुधाचा । सया पाहतात आनुभवु '

म्हणजेच जात्याला ग्रामीण भागातील स्त्री ही ईश्वर प्रमाणे समजते. या संदर्भात डॉ. तारा भवाळकर म्हणतात की,

'पोरीचा जलन जसा बोरी बाभळीचा पाला

वार्या वावटळान गेला, धनी कोणाचा कोण झाला '

समावेश:

स्त्री ज्या कुटुंबात राहते, वाढते जेणे लहानाची भोटी होते त्या कुटुंबातील अनेक जागेसकंध तिच्याशी जोडले जातात. कौटुंबिक वातावातील भावसंबंधाने अत्यंत हळूवारपणे केलेले विचार हा या ओवीगीतेचा एक महत्त्वाचा विशेष आहे. या स्वरूपाची प्रत्येक ओवी अतिशय भावनेने ओपवलेली आहे. या प्रकारच्या ओवीगीतातून आई वडील, वडील भाऊ, मामू मामी, वणद जाण, मामा भागे, मावशी आण्णा, मनी मनी, हळण्णी कौटुंबिक वातावातील वेगवेगळी उकतापणा भावपूर्ण प्रपण केलेला असतो. समासातील सुख दुःखाचा उत्कट भौतिक आविष्कारही या ओवीगीतातून झालेला आहे.

ज्या भौतिक वादुमणात शिर्षाची आपला आत्मा मरुपूर्णपणे ओतला आहे असे वादुमण म्हणजे भौतिक ओवी वादुमण होय. जाणताना दळताना, पाळणा हलकिताना, मृत्ताना मोपटताना, झोपाळकाचा झोक घेताना या ओव्या महजमपूर्ण रचल्या गेल्या आहेत. या ओव्यातील अकृत्रिम सद्गता अपूर्व आहे. या ओव्या सचलतेचा सिंधु आहे. मराठी लोकगीताचा ओवीचा ओवी गीतांमधी संख्या विपुल आहे. ओवीची भाषा स्त्री जीवनातील असून ओपवती आहे. स्त्री मनातील भव आविष्कार समर्थपणे व्यक्त करण्याचे सामर्थ्य ओवीच्या भाषेत आहे.

ओवीचा प्रत्येक शब्दाचा स्त्री जीवनाप्रवासाचा स्पर्श स्तभलेला आहे. त्यामुळे शब्दाचा एक प्रकारचा जिवंतपणा झालेला आहे. ओवी हे एक भौतिक स्त्री भव आहे. समतुल्यता अशिक्षित समजल्या जाणाऱ्या शिर्षाची हे भव जीवागाद जपले आहे. अकृत्रिम स्वभाविक आणि सहज मरुर्त अशी ओवीगीते मराठी भौतिक आविष्कारातील अग्रेसर असा देवा आहे. ओवीगीतातील भाव मसला गुंगवतो. स्त्रीमनातील भाव भावना, सुख दुःख यांचे दर्शन स्त्री गीतातून आपल्या पर्यंत येते. ओवीगीतातील भावदर्शनामुळे ओवीगीतांनी मराठी मनावर एक भूगळ टाकली आहे. मानवी मनाची घटकन पकड घेणाऱ्या ह्या गीतामध्य स्त्री जीवनाचा व स्त्री जीवनाशी संकधी असलेल्या एकुणच अनुभवाचा महजपणे भौतिक आविष्कार झालेला आहे. शिर्षी संवेदनशीलता व तिचे दलके मन ह्या दोन्हीचे देणे निरसर्गपण आहे. या मनातील अनेक अनुभवांचा भावभावनांचा परिणाम तिच्यावर झालेला दिसतो. या मधून तिच्या मनाची घाटणी झालेली असते. संदर्भग्रंथ

सूची

१. व्यवहारे शब्द, लोकसाहित्य संकल्पना स्वरूप, तिरुपती प्रकाशन, परभणी, २००४, पृष्ठ क्र. ११
२. भवाळकर तारा, लोकसाहित्य, राजहम प्रकाशन, पुणे १९८९, पृष्ठ क्र. २८
३. खटारे माहेव, लोकसाहित्य, संकलन आणि शोध, संपन्न प्रकाशन, नांदेड, २००६, पृष्ठ क्र. १०५
४. माहे प्रभाकर, लोकसाहित्याचे स्वरूप, गोदावरी प्रकाशन, औरंगाबाद, २०१०, पृष्ठ क्र. ३४
५. किला पृष्ठ क्र. ३५
६. भवाळकर तारा, लोकपरंपरा आणि स्त्री प्रतिभा, लोकवादमय गृह पुणे, २०१० पृष्ठ क्र. १७५
७. किला पृष्ठ क्र. १८०
८. किला पृष्ठ क्र. १९०
९. बाबर सरोजिनी, जा माझ्या माहेर, भवाळकर लोकसाहित्यशाळा पुणे यांचे पृष्ठ क्र. १२
१०. किला पृष्ठ क्र. १३
११. किला पृष्ठ क्र. १४
१२. व्यवहारे शब्द, लोकसाहित्य संकल्पना स्वरूप, तिरुपती प्रकाशन, परभणी, पृष्ठ क्र. १०७



2019-20



IMPACT FACTOR
5.90

ISSN 2347-6834

International Registered & Recognized Research
Journal Related to Higher Education for All Subjects

INDO GLOBAL RESEARCHERS

UGC APPROVED, REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XIII, Vol. V
Year- VII, Bi-Annual (Half Yearly)
(Nov. 2019 To April 2020)

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Website
www.irasg.com

Contact : - 02382 - 241913
09423346913/09637935252
09503814000/07276301000

E-mail :
visiongroup1994@gmail.com
interlinkresearch@rediffmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Published by :
Indo Asian Publication,
Latur, Dist. Latur - 413531 (M.S.) India

Price : ₹ 200/-

EDITOR IN CHIEF

Dr. Balaji Kamble
Professor, Research guide & Head,
Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya,
Latur, Dist. Latur (M.S.) India

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Sachin Napta
Dept. of Mahagement
Indira Business School,
Pune, Dist. Pune (M.S.)

Dr. Nilam Chhangani
Head, Dept. of Economics,
S. K. N. G. College,
Karanja Lad, Dist. Washim (M.S.)

DEPUTY EDITOR

Dr. Dileep S. Arjune
Head, Dept. of Economics,
J. E. S. College,
Jalna, Dist. Jalna (M. S.)

Dr. Allabaksh H. Jamadar
Chairman, BOS, Hindi,
S.R.T.M. University,
Nanded, Dist. Nanded (M.S.)

CO-EDITOR

Dr. Arun R. Kumbhar
Head, Dept. of Economics,
Arts & Comm. College,
Nesri, Dist. Kolhapur (M.S.)

Dr. Eknath J. Helge
Head, Dept. of Commerce,
Jijamata Mahavidyalaya,
Buldhana, Dist. Buldhana (M. S.)

MEMBER OF EDITORIAL BOARD

Dr. Mohmmad T. Rahaman
Dept. of Biomedical Science,
International Islamic University,
Mahkola (Malasiya)

Dr. Suresh Dhake
Head, Dept. of Economics,
S.N.D.T. College,
Dongar katore, Dist. Jalgaon (M.S.)

Dr. Sivappa Rasapali
Dept. of Chemistry,
UMASS, Dartmouth,
MA (United States)

Dr. Dilip R. Jagtap
Dept. of Economics,
G. T. Patil College,
Nandurbar, Dist. Nandurbar (M.S.)

Dr. Satyen Kumar P. Sitapara
Principal
Commerce & BBA College,
Amreli, Dist. Amreli (Gujrat)

Dr. Nana Wankhede
Dept. of History,
Shivaji College,
Akola, Dist. Akola (M.S.)

P. M. Band
Dept. of Dept. of Chemistry,
College of Eng. & Technology,
Babhulgaon, Dist. Akola (M. S.)

Dr. O. V. Shahapurkar
Head, Dept. of Geography,
Rajarshi Shahu College,
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Arun Farfat
Head, Dept. of History,
Shri. S.G. M. College,
Borgaon Manju, Dist. Akola (M.S.)

Arun U. Patil
Dept. of Economics,
Arts & Comm. College,
Akkalkuwa, Dist. Nandurbar (M.S.)

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed, Dist. Nanded



INDEX

| Sr. No | Title for Research Paper | Page No |
|--------|--|---------|
| 1 | A Study of Consumer Behavior Regarding e-Commerce Portals in India Dr. Kanhaiya B. Patode, Suryakant R. Walke | 1 |
| 2 | Insight of Organized Retail formats Dr. Gajendra S. Washank | 6 |
| 3 | Thematic Techniques in the Novels of Raja Rao Madhuri J. Dhiware | 12 |
| 4 | Library Networks Strategic Planning V. N. Hangargekar | 16 |
| 5 | Buddhism and Democratic Value Dr. S. L. Sakure | 21 |
| 6 | Impact of Organophosphate Pesticide on D.N.A. in Fresh Water Fish Channa Punctatus Dr. Smt. S. S. Dange | 27 |
| 7 | Circadian Variation in Heart Rate Respiratory Rate and Vital Capacity of Football Players Dr. W. Kenedi Sing | 32 |
| 8 | 'कविरा खडा बाजार में निर्मिता और मान्यता की व्याख्या' अभिव्यक्ति उनाकांत ए. विरादार | 37 |
| 9 | ए. नानसैन जोशी : मराठी मस्ती संगीत संतोष नारायण दादगे | 41 |
| 10 | शिशुपालकथ : श्रीकृष्ण मस्तीचा आविष्कार डॉ. संजय दादोजी जगताप | 44 |
| 11 | दुष्काळ निवारणासाठी महाराज सयाजीराव नायकदाड यांचे योगदान डॉ. सविता ज्ञानेश्वर कादरे | 50 |



Buddhism and Democratic Value

Dr. S. L. Saknure
Dept. of Political Science,
Swami Vivekanand Mahavidyalaya,
Mukramabad, Dist. Nanded

ABSTRACT

Buddhism is only and only alternative which can secure the democracy. the policies implemented in the last decade of the past century have aggravated an economic inequality which, in many countries, has prevented the creation of a social citizenship that makes possible full societal participation in political and state life. Democracy was unable to effectively improve the living conditions of the disadvantaged, who had fervently hoped it would be able to satisfy their most urgent needs. According to Dr. Babasaheb Ambedkar, Buddhism is not only the way of the life but the set of democratic society. If anybody sees a man who can show you what is to be avoided, who can administer reproof, and proves himself to be intelligent, certainly can follow the wise man who is instinctive with his all hidden treasure of knowledge.

Keywords: Buddhism, Democracy, Democratic Values, Civil Society,

Introduction:

While thinking about Buddhism and Democratic Values one can easily understand the relationship of Buddhism with Democracy, Buddhism has been established on

account of the principles of freedom, equality, fraternity and justice. We have understood now the values of democracy but the major section of the society has forgotten the relationship of Buddhism with democracy. Why? The reason has

Ir
twec
the ir
xople
the p
in
mon
st do
ecor
is pre
at m
olitic

requa
gion
ould
ate a
stiti
agme
stiti
agme
verg
laris
/hy
conor
ve th
icom
xpula

xores
opul
bori
ith
Indo



Indo Global Researchers (IGR)

between the richest and the poorest has grown. "The income gap between the fifth of the world's people living in the richest countries and the fifth in the poorest was 74 to 1 in 1997, up from 60 to 1 in 1990, and 30 to 1 in 1960 "This demonstrates that the policies implemented in the last decade of the past century have aggravated an economic inequality which, in many countries, has prevented the creation of a social citizenship that makes possible full societal participation in political and state life.

With so much poverty and social inequality, is political stability possible in the region? Or, if we are to continue in this fashion, should we expect a period of weakening of the state and delegitimation of politics and of its institutional actors, with greater social fragmentation, antagonistic politics and of its institutional actors, with greater social fragmentation, antagonistic polarisation among divergent social fragmentation, and antagonistic polarisation among divergent national sectors? Why is democracy unable to handle our economies more efficiently and why does it not have the capacity to ensure fairer distribution of income among the various classes of the population?

We have reached a point at which the poorest and most marginalised sectors of the population, the indigenous peoples, or "aboriginals," and peasant labours do not identify with "neoliberal democracy" or with the current

party system. This has increased distrust of those in power of representational mechanisms such as the national parliament, local deliberative bodies and the political class, all of which are instruments that have proven to be incapable of meeting the demands of employment, productive investment and social inclusion. The perception of the citizenry is that democracy has not solved its problems. The political parties those were able to articulate a utopia of freedom during the dictatorship to garner approval from a large part of the population thus gaining significant support and political legitimacy, have not turned out to be very creative. They were too limited the demands of international organizational, and lacked the conviction to create an alternative discourse with greater social content and national vision. It would seem that through globalization, "the power to make decisions regarding the directions of economic political development has been effectively transferred from countries to detached, distant and undemocratic multilateral bodies such as the IMF, WB and WTO."

Both the pro-government parties and the opposition parties have been trapped in the in the labyrinth of power and the absence of creative intellectual debate. They have been bereft of new ideologies and values to make the politics attractive, which should serve to restore, at the least, a mobilizing centrality to political matters - a centrality which would make it possible to

...the capacity to affect, positively or negatively, the future of nations, economic, social, political and cultural.

People begin to identify the political system and their power with large economic organizations and "national economies" which bring out national resources, create new jobs, and so on; government, stable or well-paid employment. In addition to the benefits of national economic returns, some in the development of a nation: country which increases the work force opportunities, bring new technology and infrastructure of education, health, production, housing, communication, electricity, water, roads, bridges, etc., and the development of national infrastructure, particularly "water engineering projects."

The region of social and national problems and the creation of private and public organizations that the development of public policy - especially in relation to the legitimacy of government programmes and widening the ability to control the economic, commercial and financial conditions of the national organization - began to be developed with democracy. This does not mean, according to the report on democracy in Latin America prepared by the

United Nations Development Programme, 1974, supported democracy in Mexico and Central America, 44% in the MEXICOCENTRO region of South America, and 17% in the Andean region. These percentages showed the correlation between the development of democracy and the economy according to geographical region. Great increases in the number of democratic elections in effect. Many countries in the Latin American region (Venezuela, Colombia, Ecuador, Peru and Bolivia) have had open elections of the democratic system. In addition to the economic issues and the economic previously mentioned, there were also the major problems regarding the national independence and political and economic freedom, policy and international cooperation, and the political and social issues, all of which were led by the national government management and growing economic development.

Several national governments in the late 1960s in political and social terms were in progress and made changes in various countries. Venezuela, Ecuador and Bolivia were the overwhelming victory of candidates committed to the people and progress came to be considered as representing the change in the economic and political life. The so-called "democratic" and "progressive" movements, which were brought to the position of Latin America's



Indo Global Researchers (IGR)

References :-

1. Ashwini Rao, "Democracy and Human Right". Pacific Publication 1993.
2. Cho, Young-Wum, The Korean National Human Rights Commission: Law, Reality, and its Future tasks, National Human Rights Institutions in the Asia Pacific Human Rights Network (APHRN), Nov. 2002.
3. Dr. A. H. Sahu, "sevasaama BaUmepu-a: gasOtama bavw" laakayata pa kaBana saatzara, 2007.
4. Dr. B. R. Ambedkar, "The Buddha And His Dhamma" Bombay Siddhanta Publication, (First published in 1957, the present edition 1994)
5. Dr. B. L. Bhole, "AaJainak Baatzaralla rajakhya ivachar" ipaMpaLapuro A'MD KM paiblaSana-, magpaUr, 2003

1

PRINCIPAL

Swami Vivekananda Mahavidyalaya
Mumbai

18 2018-19 2018-19
ISSN - 2348-7148

Impact Factor - 6.261



INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Issue - 114 (B)

Recent Trends in Research

Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,

Assist. Prof. (Marathi)

MGV'S Arts & Commerce College,

Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :

Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)

Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)

Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhosawal (Marathi)

Dr. Rajay Pawar, Goa [Konkani]



This Journal is Indexed In :

- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmo Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukarnabat To Mahad Dist Nanded

I
N
T
E
R
N
A
T
I
O
N
A
L

R
E
S
E
A
R
C
H

F
E
L
L
O
W
S

A
S
S
O
C
I
A
T
I
O
N



INDEX

| No. | Title of the Paper | Author's Name | Page No. |
|--------------------|---|---------------------------------|----------|
| हिंदी विभाग | | | |
| 1 | अहिंसावादी चिन्तक के रूप में गांधी जी के विचारों की पारंगणिकता : एक अध्ययन | डॉ. शिवा जैन | 06 |
| 2 | बाबामाहब का भारतीय पत्रकारिता में योगदान | डॉ. सुनिष चक्रवर्ती | 11 |
| 3 | कवि अजय एवं वा.सो. भट्टकर (मराठा) क काव्य में मानवतावाद | डा. मानव बवं | 17 |
| 4 | पंचमियों के माध्य समाज कावे : एक उभरता हुआ समाज कावे क्षेत्र | संजीव कुमार | 20 |
| 5 | हिंदी में अनुदीन पशु -प्रातिकार्यक नाटक | डॉ. सीमा कुबेकर, राजेश शनकर | 26 |
| 6 | सैनेस गरीबानीकृत 'बोरिवनी से बोरिवंदर तक' उपन्यास में महानगर - बोध | डॉ. संजय शेरने | 31 |
| 7 | कैलाशचंद्र शर्मा के उपन्यासों में पश्यगवर्गीय परिवार का जीवन संघर्ष | डॉ. महेंद्र सपुवंशी | 34 |
| 8 | नौकर की कमीज में व्यक्त निम्न मध्यमवर्ग | डॉ. परमेश्वर काकडे | 37 |
| 9 | हिंदी काव्यानुवाद की समस्याओं एवं समाधान | डॉ. संजय भट्टे | 40 |
| 10 | हिंदी अनुवाद का स्वरूप और रोजगार के अवसर | डॉ. शरद कोनते | 43 |
| 11 | आधुनिक कविता में दलित विमर्श | प्रा. मारुती नायक | 46 |
| 12 | हिंदी उपन्यासों का दृष्टता स्वरूप | प्रा. सुशांती सुटे | 52 |
| 13 | गिरुपमा नेमली के कहानियों में चित्रित बिद्रोही नारी | डॉ. राहुन भराणे | 55 |
| 14 | पंत का प्रगतीवदी दृष्टिकोण | डॉ. शोभा रावत | 58 |
| 15 | 'दूर एवं पार' उपन्यास में चित्रित पर्यावरण दूषण मुद्दों में यशस्वीनी का योगदान | डॉ. के. वी. बागुन | 62 |
| 16 | आधुनिक राजनीतिक चिंतक : पंडित जवाहरलाल नेहरू | डॉ. सुनिष चक्रवर्ती | 65 |
| 17 | 'मुक्तीपर्व' उपन्यास में दलित चेतना | डॉ. श्रीरंग वट्टमवार | 68 |
| 18 | नरगोन जिले में ताल मिर्च व्यवसाय में कार्यशील पुंजी का विधेयणात्मक अध्ययन | डॉ. दिनेश अग्रवाल | 70 |
| 19 | 'श्रीमद्भागवत पुराण' में वाणित 'गजद माध' का महत्व | नातू वाला | 74 |
| 20 | अमता प्रीतम के उपन्यासों में नारी एवं मानवाधिकार | डॉ. शोभा रावत | 78 |
| 21 | मानव-जीवन के परिप्रेक्ष्य में दर्शनशास्त्र की महत्ता | शम्भू राणी | 82 |
| 22 | नई गरी के साहित्य को गुग्गिनग लेखकों की देन | शाजीया दलीर | 85 |
| 23 | रामकृष्ण वर्मा के एकान्तियों में निहित नौद्व गुण | डॉ. श्रीरंग शेट्टे | 89 |
| 24 | शिवानी की कहानियों में स्त्रियों का सामाजिक-जीवन | प्रा. शेष गणी | 94 |
| 25 | हिंदी की प्रमुख स्त्री कहानियों में स्त्री-जीवन | डॉ. चांजी एन. के. | 98 |
| 26 | हिंदी साहित्य का फिल्मोतरण | किशोर ओहोळ | 102 |
| मराठी विभाग | | | |
| 27 | सापब्र हल्ले, राष्ट्रीय सुरक्षेत आच्छात | प्रा. उषेंद्र धगधगे | 107 |
| 28 | महाराष्ट्र राज्य क्रीडा धोरण २०१२ ची विज्ञापित व महाविद्यालयीन स्तरावरील अंमलबजावणी व त्याच्या परिणामांचा चिकित्मक अभ्यास | प्रा. आर. एस. देवकाते, शरद आहरे | 112 |
| 29 | साहित्य काहनूर : अण्णाभाऊ साठे | डा. राजद सागळ | 120 |
| 30 | मराठा सायाज्याचे म्हैमुरकरांसोबत संबंध (विशेष संदर्भ तह) | प्रा. आंबादास बाकरे | 124 |



मनु के अर्थात् दुखी शिकने को खींच देते हुए उनके इन अंग्रेज और साठस पैंस अफ़सनाम नाम भी ने कहा है कि "देखो गौर बेन, मनुष्य को तरह से जीव है, एक धुलकर, एक लफ़्फ़ा, हम नहीं चाहते कि तुम धुलकर किसी दुर्बे लफ़्फ़ा जीव है, खूब निम्नो और उली ग्यारी में अपने दुख निम्न को मोड़ने को सदा बंगल से पकड़ी गई नई-नई नौगम सामर्थी गौर बेन बिना खोने रिजो में बंद रखोगी तो टकन खोने ही टन भोगी उसे गौर बेन बगल मनुष्य सीमा" गुबरात में बनी, बंगल में पटी और उतराष्ट्र में ग्यारी गई बहुराजिद शिकने भी की बर्दानि की टनी की एक लकी बरिबक बहुराजिद धारण से नूरी है। शिकने का अन्वय गौर है वह उतराष्ट्र के परिपूर्ण समान से प्राणिक समान तक और टोलन धारा से बंगल तक के गौर-अंग्रे, गौर-बहुराजि, उरते-बर्दानि, लफ़्फ़ा, अफ़, गैर, निम्नन के गौरम दरबदा हुए भोग, निम्नो, बर खीनारी, पटे और बगली सब शिकने के निरुत बग निरु से खाली है। इस तरह शिकने का सामर्थिक जीवन बरिबकताओं से भरा हुआ जीवन है। उनका यही अन्वय, यही सामर्थिक जीवन उनको रचनकों में लेनक की तरह उभरा है।

सामर्थिक बर्दानिसे उन बर्दानिसे को कहा जाता है किन्हीं सामर्थिक कर्णों को उदाहरित कर अफ़सनाम पाकबोध तथा कुबोध को उनके विद्वान अर्थव्यवस्था करने का प्रयत्न किया जाता है। शिकने ने अनेक शिकने को लेकर बर्दानिसे निम्नो है किन्तु अर्थव्यवस्था उनको बर्दानिसे में नगी पावन प्रथम बर्दानिसे दिखाने है। शिकने भी ने नगी के संपूर्ण जीवन को रेखांकित करने का प्रयत्न किया है। नगी मन को सृजन कर्मों से शिकने ने संबन्ध किया है। मन को गुरुिधरे, सौ को पारमारी, मन का मोर, प्यार, पावनगों आदि सौम्यत के सिद्ध को अपने बर्दानिसे में समेटा है। शिकने ने संकटों बर्दानिसे निम्नो है, जो समान के हर पदनों को कृती है। शिकने का संपूर्ण जीवन समान से नूतन उनको अपने संकट में समेटने में ग्य है। शिकने को सामर्थिकता का अर्थ करते हुए ट. कृष्ण श्रीवस्तव कहते है कि "शिकने को हर बर्दानिसे नगी को समान में सम्मिलित करने के लिए प्रयत्नगोन है। यह बर्दानिसे किन्हीं बर्दानिसे की भी हो धरन प्रथम अन्वय बहुराजि प्रथम उनमें नगियों को बहुराजिसे भी समान के समान प्रस्तुत किया है।" शिकने को प्रसिद्ध बर्दानिसे 'स्वयंसेवा' है। स्वयंसेवा बर्दानिसे की नगिबक माध्वी है, जिसका सिद्ध तन हुआ है। सिद्ध से पूर्व ही उसे एक राक्षस नामक लड़के का घर प्राप्त होता है वे माध्वी से कहते है कि तू निम्नसे शर्दी का खो है, वह उनका प्रेमी है। इसलिए तू उससे निकल मत का। परिवारवालों ने सिद्ध समान पर कर दिया परंतु उनको सुगमता पर राक्षस पहुंच नाते है। माध्वी जो नई नकेली दुन्दुभ है उसे अपने पति का घर छोड़ने के लिए बहुराजि हो नाते है। पति का घर छोड़ माध्वी सिद्ध के घर लौटते है तं पति भी उसे अपने घर से निकल देते है क्योंकि उनके पति बर्दानिसेकी और कर्मों से। इस क्षण को एक नगी को मनस्थिति को व्यक्त करते हुए शिकने ने माध्वी के माध्यम से कहा है। माध्वी के सिद्ध कहते है कि "निकल जा बहुराजि अब से न तू मेरी प्यारे, न मैं तेरा पति, अपने में को घर में निम्न माध्वी ने देखा भी नहीं था उसका खल मन में लकर माध्वी संकती है कि अब उनको में बौकल होते, तो क्या उसे बहुराजि लेनकर बहुराजि बंद कर देते।" पति के घर से तं निकलने से पर पति के घर से भी निकलने ग्य माध्वी किन्हीं तरह अपने मोसों के घर नैम्नल पहुंच नाते है। मोसों भी उसे आर पिन तने देते खते है। वे उसे खते को तू कुन्नांसने है, खर में तेरा बहुराजि पंटा न खर है, तूने हमको समान में नक करवा से आदि माध्वी को वह सब मिन खं भी निम्न उनमें कोई अगण नहीं किया था किन्हीं तरह माध्वी अपने खोनें रचन हटन नं मद्रम में खते से उनके धन पहुंच नाते है। रचन के सिद्ध उतरकरी से माध्वी को उनमें रचन के सदा लफ़्फ़ांनी बना दिया। माध्वी पिन से ही अन्वय बर्दानिसेको से खूब पद निम्नकर वह बड़ी अफ़सर बन नाते है। इसी दौरान माध्वी के जीवन का एक लंबा अंशकम मुक्त नाते है। कर्मों-कर्मों उसे अपने सिद्ध और परिवर्तों का संदेश मिन नाते। एक दिन बहुराजि पति का उसे सा मिनत है कि उसका पति कोस्तुम मृदुल्य पर है। वे घर में निकले है कि "जाते जाते परिवर्तों सुख, खान्नांसनी, अब कोस्तुम मृदुल्य पर है। इसी से तुम्हारे कर्तव्य से, तुम्हें अन्वयत बन अपना भी कर्तव्य सम्पन्न है।" पति के घर को

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukherjee Te Mukherjee, Dak. Vardha



Bharat Shikshan Prasarak Mandal, Latur's
**Jaikranti Arts And Commerce
Senior College, Latur**
(NAAC Accredited 'B' Grade)

ORGANIZES

One Day
NATIONAL SEMINAR
ON
Present Scenario of Geographical Perspectives
on Enviroment & Sustainable Development
Date : 20th Sept. 2019

Organized by

Department of Geography (UG and PG)
and Internal Quality Assurance Cell
Collaboration With
Marathwada Association Of Geographers, Latur
And
Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded

CHIEF ORGANIZER

Dr. P. N. Sagar
Principal, Jaikranti Arts And Commerce Sr. College, Latur
Senate Member, S.R.T.M.U. Nanded

CONVENER
Dr. R. D. Khakre

CO-CONVENER
Dr. M. P. Sarwade
Dr. S. G. Ghar

PATRONS

Mr. Balaji Ambaji Ghar
President B.S.P.M. Latur

Prof. Govindrao Ambaji Ghar
Secretary, B.S.P.M. Latur

Dr. P. N. Sagar
Principal, Jaikranti Arts And Commerce Sr.College , Latur
And Senate Member , SRTMU Nanded

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramgad Tal. Mukand Dist. Nanded



| <p style="text-align: center;">KARNATAKA STATE UNIVERSITY BANGALORE</p> | | | |
|---|----------------------|---|------------|
| 70 | Dr. S. S. Srinivasan | Impact of Rainwater Harvesting on Groundwater in India | 231 To 236 |
| 71 | Dr. S. S. Srinivasan | Use and Utilization of Surface and Groundwater | 237 To 238 |
| 72 | Dr. S. S. Srinivasan | A Geographical Study of Groundwater in the Development of Lake Talwar Catchment | 239 To 240 |
| 73 | Dr. S. S. Srinivasan | Pattern of Population Density in Groundwater District | 241 To 242 |
| 74 | Dr. S. S. Srinivasan | Integrating Remote Sensing and GIS for Identification of Artificial Recharge Sites and Sustainable Water Development of Water Catchment | 243 To 244 |
| 75 | Dr. S. S. Srinivasan | Demarcation of Groundwater District of Solapur, Govt. of Maharashtra | 245 To 246 |
| 76 | Dr. S. S. Srinivasan | The Groundwater Resources in India: A Review | 247 To 248 |
| 77 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 249 To 250 |
| 78 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 251 To 252 |
| 79 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 253 To 254 |
| 80 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 255 To 256 |
| 81 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 257 To 258 |
| 82 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 259 To 260 |
| 83 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 261 To 262 |
| 84 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 263 To 264 |
| 85 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 265 To 266 |
| 86 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 267 To 268 |
| 87 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 269 To 270 |
| 88 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 271 To 272 |
| 89 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 273 To 274 |
| 90 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 275 To 276 |
| 91 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 277 To 278 |
| 92 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 279 To 280 |
| 93 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 281 To 282 |
| 94 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 283 To 284 |
| 95 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 285 To 286 |
| 96 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 287 To 288 |
| 97 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 289 To 290 |
| 98 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 291 To 292 |
| 99 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 293 To 294 |
| 100 | Dr. S. S. Srinivasan | Groundwater Resources in Karnataka | 295 To 296 |

Dr. S. S. Srinivasan
Principal, K. S. S. University
Bangalore



Use And Utilization Of Surface And Ground Water

Dr. Madale R. N.
Asst. Prof. Geography
J V College, Mukramabad

Water is the basic need of all life forms on the globe. Due to rapid growth, of population, expansion of industries and agriculture have the demand of water. The rate of consumption of water varies in the different countries. The maximum amount of water i.e. about 70% is utilized for agricultural uses. Only 1.1% is used for domestic and municipal purpose. The remaining water is used for other purposes.

Objectives :

- To study the use of water
- To study the problems due to over utilization of water.
- To study the conservation of water and water management.

Database Methodology

The present research work is entirely based on secondary sources of data collected from journals, Books, research articles, etc.

Use of water : Following are the main uses of water.

- Domestic use :** drinking for all living-beings, washing, cooking, sanitation and cleaning, out of total water use, about 7% water is use for domestic purposes.
- Agricultural use :** water irrigation, dairy processes, for livestock. Out of the total use about 70% water is used for agriculture.
- Municipal use :** cleaning, hospitals, schools, fire fighting.
- Industrial use :** Steam generation, cooling, processing industrial waste.
- Accommodation:** Living medium for fishes and aquatic animals.
- Transportation:** Inland water ways and sea or ocean water ways, navigation.
- Power Generation :** For Hydel power (Hydroelectricity) in a form of running or stored water and tidal waves.
- Aesthetic and Recreational Use :** Swimming fountains, musical & colourful fountains, garden lawns and gardens, navigation.

Types of water : As per sources, water can be classified into two groups

- Surface water, ii) ground water

i) Surface water :

The water in lakes, ponds, rivers streams or artificial reservoirs is called as 'surface water'. When the water of precipitation (rainfall, snowfall) does not percolate down into ground or does not evaporate, assumes the form of stream river, pond or lake.

A lot of surface water is used for irrigation domestic, industrial and navigational purposes. The remaining water is released into seas or ocean through rivers. The development of a country depends on its rivers.

ii) Ground water :

Ground water is the water which penetrates the soil reaches the water table. It is available in wells or tube-wells. Some ground water is derived directly from rain fall. Other sources are due to percolation from surface water, including lakes and rivers. The soil and rocks through which ground water passes, act as natural filters. Under the right condition, this filtering system cleans the water. If the soil or rock surface contains naturally toxic element, the ground water also contains naturally toxic element, the ground water also contains toxic material by these natural processes. Most often, the ground water dissolves a mixture of minerals and some gases which become nuisances to human uses e.g. calcium carbonate creates hardness of water, hydrogen sulphide produces a 'rotten egg' odour.



Problem due to over utilization of water :

1. **Lowering water table** : Over use of ground water for drinking, irrigation and domestic purposes has lowered the water table in various regions.
2. **Quadrupled consumption** : Due to over exploitation of water, the world is heading towards a water crisis. Between 1950 and 1970, the world's population doubled. As it also increased the per capita consumption of water. So in the recent years, the use of water has quadrupled in the world.
3. **Shortage of water** : Due to increasing population there is the shortage of water in some parts of the world, Rajasthan, Gujarat, Madhya Pradesh, Orissa etc. are in the grip of a serious shortage of water. It is estimated that by 2014, two-third of population of the world would suffer from water shortage.
4. **Conflicts over sharing river**: water because of the shortage of water, there are frequent river sharing of river water between i) Haryana and Delhi- for Yamuna river water. ii) Tamil Nadu and Karnataka - for Cauvery river water.
5. **Water logging** : Excessive irrigation leads to water logging and salinity problems. Excess irrigation in arid and semi-arid areas can cause salt accumulation in soils which may reduce the productivity of soil.
6. **Infiltration of salt** : Over pumping of ground water (with salt pipe-wells) near the coastal areas, leads to infiltration (passing into or soil) of sea water into fresh water.
7. **Waste-water effects** : Much the water used for industrial and domestic purposes, much is the degradation of water by adding suspended solids, oils, bacteria and toxic pollutants. Waste water causes the pollution of surface water because ultimately rivers intercept, ground water is contaminated.

Conservation And Water management

Following are the important methods for conservation of water

- 1) Modern and efficient systems of irrigation like sprinkler and drip irrigation should be adopted so that water wastage through traditional method can be reduced.
- 2) There should be more awareness about water pollution.
- 3) Urban refuse and industrial disposal must be controlled by proper treatment plants.
- 4) Town and urban planning must give the top priority to maintaining water quality in surrounding areas.
- 5) The government must bring in more effective laws for water pollution control measure.
- 6) Recycling of waste water in industry must be done.
- 7) Harvesting of rain water can be done by means of rain water and recharging ground water.
- 8) Dams and water reservoirs must be constructed at suitable places to control floods.
- 9) Deforestation must be controlled.
- 10) The people having orthodox religious faiths must be educated properly to understand the nature of water pollution and its adverse effects on human health.

Reference :

1. S.T.Jogle et. Al, Environmental studies, Prachant Publications, Jalgaon-425061
2. Sinde et. Al, Environmental Studies, Sheth Publishers Pvt.Ltd, Mumbai
3. Editors, Nandkumar Sawant et. Al, Globalization : Issues and Challenges for India, Published by Dept. of Geography, Smt Parvati Bai Chowgale college Margao- Goa
4. Editors, N.M.Rathod Water management and Sustainable development, 02 Jan 2015, Nation Conference organized by Dept. Geography, Shri Panditguru Parfekar Mahavidyalaya, Sirsala
5. Editors, Nagrao Kumbhar, S.T.Shete, Geographical perspectives on Environmental sustainable development, Nation Conference organized by Dept. of Geography, M.B.college, Latur



- Anil Kumar, K.S., Priya C.P and Narasimha Prasad, N.B. (2015) Study on Saline Water intrusion into the Shallow Coastal Aquifers of Periyar River Basin, Kerala using Hydrochemical and Electrical Resistivity Methods. *Aquatic Procedia* 4, pp.37-40
- Appelo, C. A. J. (1994) Cation and proton exchange, pH variations and carbonate reactions in a freshening aquifer. *Water Resour. Res.*, 30, pp. 2793-2805.
- Appelo, C. A. J. (1996) Multicomponent ion exchange and chromatography in natural systems. *Rev Mineral.*, 34, pp. 195-227
- Barchiesi, F., Marini, C., Cabret, E. and Derou, L. (2008) Hydrochemical and isotopic characterization of the Buthunan and Bueonan coastal aquifer of the Cote area (southern France). *Appl Geochem*, 15, pp. 791-805.
- Babuckiev, A. (2003) Resistivity Sounding Interpretation. ITCWIN Version 3.0.1 a 700 07 Moscow State Univ
- Capozzoni, B., Mariani, D., Carnella, P. and Liu, D. (2005) Saline intrusion and reflecting in a multilayer coastal aquifer in the Catania Plain (Sicily, Southern Italy): dynamics of degradation processes according to hydrochemical characteristics of groundwaters. *J Hydrol*, 307, pp. 1-16.
- CGWB (2010) Groundwater Information Booklet, North Goa district, Goa, pp. 27
- CGWB (2017) Aquifer Systems of Goa, pp.75
- Chachadi, A. G. (2005) Seawater intrusion mapping using modified GALDET Indicator model-case study in Goa. *Jahnyant Samskaha*, Vol. 20, pp.30-45.
- Chachadi, A. G. (2015) New Indicator Based Method SALDET for Delineation of Natural Groundwater Recharge Areas. *Aquatic Procedia*, vol. 4, pp. 649-659.
- Datta, A. G. (2011) The Geology of Goa Group. *Revisited*, Jour Geol Soc India, Vol. 78, pp. 233-242.
- Di Sisto, E., Galgani, A. and Zappi, G. M. (2006) New geophysical knowledge of groundwater systems in Venice estuarine environment. *Estuar Coast Shelf Sci*, 66, pp. 6-12.
- Freeze, R. A. and Cherry, J. A. (1979) Groundwater, Prentice Hall, NJ, pp. 604
- Gattacceca, J.C., Vallet-Coulomb, C., Meyer, A., Radakovitch, O., Corchitto, E., Sonzogni, C., Claude, C. and Hamelin, B. (2007) Isotopic characterization of saline intrusion into the aquifers of a coastal zone: case study of the southern Venice Lagoon, Italy. A New Focus on Groundwater-Seawater Interactions (Proceedings of Symposium HS1001 at IUGG2007, Perugia, July 2007). *IAHS Publ.* 312, pp.212-218.



Abstract:

Abstract text describing the study's objectives and findings. The text is mostly illegible due to heavy noise and blurring.

Keywords: Agriculture, Soil Science, Assiut University

Introduction:

Introduction text providing background information on the research topic. The text is mostly illegible due to heavy noise and blurring.

Objectives:

Objectives text describing the goals of the study.

Materials & Methods:

Materials & Methods text describing the experimental procedures.

The Government of Assiut:

The Government of Assiut text providing information about the local government context.

Conclusion:

Conclusion text summarizing the main findings of the study.

Additional text block, possibly a continuation of the conclusion or a separate section, mostly illegible.

Additional text block, possibly a continuation of the conclusion or a separate section, mostly illegible.

Additional text block, possibly a continuation of the conclusion or a separate section, mostly illegible.

Additional text block, possibly a continuation of the conclusion or a separate section, mostly illegible.

Handwritten notes and signatures at the bottom right of the page.



Irrigation:

Irrigation can lead to a number of problems among some of these problems is the depletion of underground aquifers through over drafting. Soil can be over irrigated because of poor distribution uniformity or management wastes water, chemicals, and may lead to water pollution. Over-irrigation can cause deep drainage from rising water tables that can lead to problems of irrigation salinity requiring watertable control by some form of subsurface land drainage. However, if the soil is under irrigated, it gives poor soil salinity control which leads to increased soil salinity with consequent buildup of toxic salts on soil surface in areas with high evaporation. This requires either leaching to remove these salts and a method of drainage to carry the salts away irrigation with saline or high-sodium water may damage soil structure owing to the formation of alkaline soil.

Pollutants:

Synthetic pesticides such as 'Malathion', 'Rogor', 'Kelthane' and 'Confidor' are the most widespread method of controlling pests in agriculture. Pesticides can leach through the soil and enter the groundwater, as well as linger in food products and result in death in humans and non-targeted wildlife. A wide range of agricultural chemicals are used and some become pollutants through use, misuse, or ignorance. The erosion of topsoil, which can contain chemicals such as herbicides and pesticides, can be carried away from farms to other places. Pesticides can be found in streams and ground water. Atrazine is a herbicide used to control weeds that grow among crops. This herbicide can disrupt endocrine production which can cause reproductive problems in mammals, amphibians and fish that have been exposed. Pollutants from agriculture have a huge effect on water quality. Agricultural nonpoint source (NPS) solution impacts lakes, rivers, wetlands, estuaries, and groundwater. Agricultural NPS can be caused by poorly managed animal feeding operations, overgrazing, plowing, fertilizer, and improper, excessive, or badly timed use of pesticides. Pollutants from farming include sediments, nutrients, pathogens, pesticides, metal and salts. Animal agriculture can also cause pollutants to enter the environment. Bacteria and pathogens in manure can make their way into streams and groundwater if grazing storing manure in lagoons and applying manure to fields is not properly managed.

Soil degradation:

Soil degradation is the decline in soil quality that can be caused by many factors, especially from agriculture. Soil hold the majority of the world's biodiversity and healthy soils are essential for food production and an adequate water supply. Common attributes of soil degradation can be salting, water logging, compaction, pesticide contamination, decline in soil structure quality, loss of fertility, changes in soil acidity, alkalinity, salinity, and erosion. Soil erosion is the wearing away of topsoil is very fertile, which makes it valuable to farmers growing crops. Soil degradation, which affects the microbial community of the soil and can alter nutrient cycling, pest and disease control, and chemical transformation properties of the soil.

Waste:

Plasticulture is the use of plastic mulch in agriculture. Farmers use plastic sheets as mulch to cover 50-70% of the soil and allows them to use drip irrigation systems to have better control over soil nutrients and moisture. Rain is not required in this system, and farms that use plasticulture are built to encourage the fastest run off of rain. The use of pesticides with plasticulture allows pesticides to be transported easies in the surface runoff towards wetlands or tidal creeks. The runoff from pesticides and chemicals in the plastic can cause serious deformations and death in shellfish as the runoff carries the chemicals towards the oceans.

Deforestation:

Deforestation is clearing the Earth's forests on a large scale world wise and resulting in many land damages. One of the causes of deforestation is to clear land for pasture or crops. According to British environmentalist Norman Myers, 5% of deforestation is due to cattle ranching, 19% due to over-heavy logging, 22% due to the growing sector of palm oil plantations, and 54% due to slash and burn farming.

Deforestation causes the loss of habitat for millions of species, and is also a driver of climate change. Trees act as a carbon sink : that is, they absorb carbon dioxide, an unwanted greenhouse gas, out of the atmosphere. Removing trees releases carbon dioxide into the atmosphere and leaves behind fewer trees to absorb the increasing amount of carbon dioxide in the air. In this way, deforestation exacerbates climate change. When trees are removed from forests, the soils tend to dry out because there is no longer shade, and there are not enough trees to assist in the water cycle by returning water vapor back to the environment with no tree, landscapes that were once forests can potentially of trees also causes extreme fluctuations in temperature.

Genetic Engineering:

Genetic engineered crops are herbicide-tolerant and their overuse has created herbicide resistant super weeds, which may ultimately increase the use of herbicides seed contamination is another problem of genetic engineering; it can occur from wind or bee pollination that is below from genetically-engineered crops to normal crops.



About 50% of corn and soyabean samples were found to be contaminated by Monsanto's (genetic engineering company) genes. This accidental contamination can cause organic farmers to lose a lot of money.

Conclusion:

Current agricultural practices involve deliberately maintaining ecosystem in a highly simplified, disturbed, and nutrient-rich state. To maximize crop yields, crop plant varieties are carefully selected to match local growing conditions. Limiting factors, especially water, mineral nitrogen, and mineral phosphate, are supplied in excess, and pests are actively controlled. These three features of modern agriculture-control of crops and their genetics, of soil fertility via chemical fertilization and irrigation and pests (seeds, insects, and pathogens) via chemical pesticides are the hallmarks of the green revolution. They have caused for once rare plants (barly, maize, rice and wheat) to become the dominant plants on earth as humans become the dominant animal. Indeed, these four annual grasses now occupy, respectively, 67 million hectares, 140 million hectares, 151 million hectares and 230 million hectares each, worldwide, which is 39.8% of global cropland. For comparison, the total forested area of the United State, including Alaska is 298 million hectares. Entire regions of the world now are dominated by virtual monocultures of a given crop. These monocultures have replaced natural eco-systems that once contained hundreds to even thousands of plant species, and man species of vertebrates. Thus, agriculture has caused a significant simplification and homogenization of the world's ecosystems.

Reference:

1. ^abc van der warf, Hayo; Petit, Jean (December 2002). 'Evaluation of the environmental impact of agriculture at the farm level : a comparison and analysis of 12 indicator-based methods'. *Agriculture Eco-system and Environment* 93 (1-3) : 131-142. 2015.
2. ^Hanu, Jeremy (May 15, 2012). 'Tropical deforestation is one of the worst crises since we came out of our caves'. *Mongabay.com/A place out of Time : Tropical Rainforests and the Perils They Face*. Achieved from the original on May 29, 2012.
3. ^abc 'Soil Erosion-causes and effects'. www.omfra.gov.on.ca Retrieved 2015-04-10
4. ^'Agricultural Nonpoint Source Pollution'. *United States Environmental Protection Agency*. EPA. 2015-02-20. Retrieved 22 April 2015.
5. *Impact of Climate Change in Agriculture*, UGC Approved International Research Referred Journal for all subjects and all languages. ISSN: 2349-638x.
6. *Geographical Perspectives on Environmental and Sustainable Development*, National Seminar 10th - 11th Aug. 2012 organized by Dept. of Geography, M.B. College
7. <https://en.m.wikipedia.org/wiki/Ervin>



(Signature)

PRINCIPAL
 Swami Vivekanand Mahavidyalaya
 Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Nanded

[Redacted text]

[Redacted text]

[Redacted text]

[Redacted text]

[Redacted text]

[Redacted text]

[Redacted text]

[Redacted text]

[Redacted text]

[Redacted text]

[Redacted text]

[Redacted text]

[Redacted text]

[Redacted text]



07

CONSERVATION OF NATURAL RESOURCES

Dr. R. B. Madale

Asst Prof Geography,

Swami Vivekanand College Mukramabad,
Tq Mukhed, Dist. Nanded

Abstract

Nature has provided man a lot of valuable resources for his survival. The gifts of nature like forest, water, soil, food, minerals and energy resources etc. play an important role in the development not only of man but also his nation. But by reckless use and over exploitation of most of the natural resources, man has disturbed the environmental balance. He himself has to face all the problems created by himself. Our modern society is creating fast depletion of valuable natural resources and several related problems. Unless, we feel a strong need to conserve all those resources, the mankind will not flourish in future.

Keywords: meaning, classification, conservation

Introduction

The natural resources of the world fall into two main groups. The one, presented by the products of agriculture and forestry, may be renewed, either annually or at longer intervals, by cultivation, and may be consumed as income, while the other, including mineral wealth, must be regarded as capital, and once consumed is not renewed. Soils should perhaps form a third category, for while they may be maintained in fertility for thousands of years, as in China, they are only too easily ruined by careless or greed exploitation, leading to exhaustion and erosion, or by mining operations which may cause subsidence as in parts of England, or burial

under debris through hydraulic mining as in California

We need to conserve natural resources because there isn't an evidence that these resources are going to last for a long time, considering man's usual consumption of these resources. There will come a time that there are some natural resources that will be gone (especially non-renewable one and ones that are in high demand) and humans have to thrive in order to find alternative resources for the ones that have been lost. And that specific task is not an easy one because there may be a possibility of unavailability or scarcity of it. Conserving natural resources reduces the rapid depletion of biodiversity and it maintains the balance of the undisturbed ecology

Objectives

- i) To study the natural resources.
- ii) To study the conservation of natural resources.

Methodology

The present research paper is based on the secondary sources. The secondary sources used for this article are various journals, the reports of the Govt. of India and Book's of natural resources.

Natural Resources

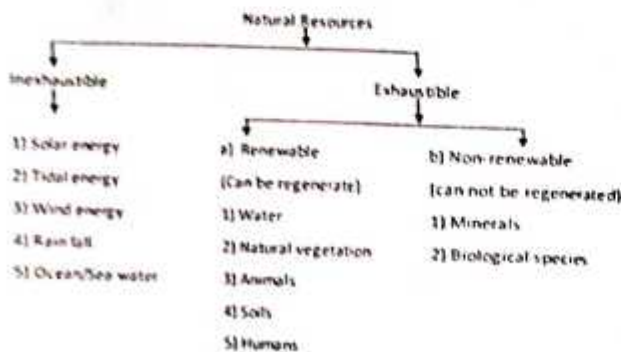
The surrounding of men is full of natural and man-made environment. All the life forms are related with a large number things including physical, chemical, biological and social factors. All the things are available in the environment of man and can be utilized by man for his survival are called as 'Natural Resources'. Thus, water, air, minerals, soils, forests, coals, wild life etc. are some of the examples of natural resources.

The term 'Resource' means Re + source. Re-means again and source means any natural element which can provide the need of man. "Resource is a feature of environment that is of value to man in one form or another." - Jackie Smith

"Resources may be defined as all the freely given material phenomenon of nature within the zone of human activity." – Ginsburg and Norton

Classification of Natural Resources

The distribution of natural resources is very uneven on the Earth. For examples, certain types of forests are found only in particular areas of the world. As per their nature, natural resources are of two types :



Basic types of Natural Resources with main examples

1) Inexhaustible Resources

These are freely available in the nature. They can not be exhausted by human activities. But some of these resources may be affected by human acts e.g. The quality of water or air can be changed at certain places. Solar energy, wind power, tidal power, rainfall etc. are the examples of inexhaustible resources.

2) Exhaustible Resources

The storage of these resources are limited and may be exhausted by human activities.

They can be classified into two types a) Renewable resources and b) Non-renewable resources.

a) Renewable Resources : These are in exhaustive and can be regenerated or reappear by recycling, reproduction and replacement with in a given period in the nature. Forest, water, living beings like plants, animals and micro-organisms etc. are renewable resources. Solar energy is also renewable resource which is

inexhaustible in nature. When the rate of consumption of these resources is beyond the limit they may be exhausted totally.

b) Non-renewable Resources : These resources can not be regenerated. Once they are used, they are finished forever. E.g. Fossil fuel like petroleum, coal gas etc. After unlimited use, the fossil fuels will definitely be exhausted. Some biotic resources are also non-renewable. Such biological species which have evolved in the course of millions years, are non-renewable but can not be created again.

So it is very important to protect and conserve our natural resources. They should be used in such a way so that they should be available for our future generations. It does not mean that we should stop using of the natural resources.

Conservation of Natural Resources

Nature has provided man a lot of valuable resources for his survival. The gifts of nature like forest, water, soil, food, minerals and energy resources etc. play an important role in the development not only of man but also his nation. But by reckless use and over exploitation of most of the natural resources, man has disturbed the environmental balance. He himself has to face all the problems created by himself.

Our modern society is creating fast depletion of valuable natural resources and several related problems. Unless, we fell a strong need to conserve all those resources, the mankind will not flourish in future.

Conservation efforts are being done on National as well as International levels by giving awareness through education or law enforcement. It is very essential to develop individual interests for conservation of all natural resource because environment belongs to each one. So it is every one's responsibility to contribute the efforts for conservation natural resources. Thus the individual efforts must play a vital role.

The following efforts must be done individually.

- 1) Avoid the reckless use of natural



- resources.
- 2) Build rain water harvesting systems to meet.
 - 3) Use drip irrigation or sprinkling systems to increase agricultural production and reduce evaporation.
 - 4) Plant more trees wherever necessary on open space and conserve them.
 - 5) Use organic fertilizers instead of chemical fertilizers.
 - 6) Use biopesticides or insecticides rather than chemical and toxic pesticides.
 - 7) Use renewable energy resources like solar energy, wind energy etc.
 - 8) Drive less and use public transportations whenever possible.
 - 9) Use mixed cropping patterns to avoid the loss of soil nutrients.
 - 10) Avoid over grazing.
 - 11) Avoid use the plastic goods.

Conclusion

Today, most of the people are finding many ways for conserving natural resources. One of the great notion before is hydro-power and solar power. Power can be generated from these sources and these are the best ways for natural resource conservation like fossil fuel. There is also way to conserve natural resource like trees. It can be conserve through recycling process. Many products come from the tree like paper, cuts, cardboard and envelopes. By recycling these products you can reduce the number of trees cut down a year. One should make the most use of these paper products without being wasteful and then recycle them. This is one great way for conserving natural resource.

References

- 1) Gaurish A. and Gaurish a.p., (2014), Perspective in Environmental Studies, New Age International Publishers, New Delhi
- 2) Frank A. Ward (2005), Environmental and Natural Resource Economics

- 3) Pashua S. Kishu P., Editors (2014), Environmental Studies, Narayana Publications, Madurai
- 4) Singh Samendra (2012), Environmental Geography, Prang Pustak Bhawan, Allahabad
- 5) Tulel and S. (2003), Environmental Science, 2nd Edition, Southern College Publishing, New York.
- 6) "Earth's natural wealth: an audit" Science.org on May 23, 2007
- 7) <http://www.nationalgeographic.org/>



PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Marambaez Tal. Marambaez Dist. Namakkal



CURRENG GLOBAL REVIEWER International Multidisciplinary Research Journal

Impact Factor - (Sif) - 7.139

Special Issue -100

Dec. 2019



CURRENT GLOBAL REVIEWER

Impact Factor – 7.139

ISSN – 2319-8648

Multidisciplinary International Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

‘Water Resource Management for Sustainable Development’

Saturday, 28th December 2019

Special Issue - 100

Chief Editor

Mr. Arun B. Godam

Guest Editors

I/C Principal Dr. H. M. Bhopale

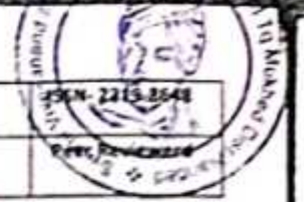
Chief Organizer, Shankarrao Chavan Mahavidyalaya, Ardhapur Dist. Nanded.

Dr. R. B. Kotalwar

Convener & Head Department of Geography

PRINCIPAL

**Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed, Dist. Nanded**

**जलसाक्षरता व जल व्यवस्थापन काळाची गरज****प्रा.डॉ.आर.बी. मारडे**

भूगोल विभाग, स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मुकुम्बाबाद ता. मुखेंड जि. नांदेड

प्रस्तावना

एकविसाव्या शतकात जगातील एक महत्वाची समस्या म्हणून पाण्याकडे पाहिले जाते. पाण्याशिवाय मनुष्य सजीवसृष्टी ही अदुर्ग आहे. पाण्याचे महत्त्व हे वनस्पती व इतर जीवांसाठी जेवढे महत्त्वाचे आहे तेवढेच ते मानवासाठी अत्यंत उपयोगी आहे. म्हणून पाणी म्हणजेच जीवन मानले जाते. भारतात मूलभूत सोयी सुविधांची मोठ्या प्रमाणात कमतरता आहे. त्यातच पाण्यासारख्या अत्यावश्यक घटकांची देण्या १० वर्षांत खूप मोठ्या प्रमाणात टंचाई घासणार असल्याचे सादर करण्यात आलेल्या भारतीय जल विभागाच्या सर्वेक्षणानुसार समोर आले आहे.

भारतात सरासरी पावसाचे प्रमाणही घांगले आहे. परंतु ह्या पडणाऱ्या पाण्याचे योग्य नियोजन न केल्यामुळे हे पाणी जमिनीवर पडून वाहून जाते. ते अडवले जात नसल्यामुळे व त्याचे नियोजन करीत नसल्यामुळे ते पाणी घंट समुद्राला जाऊन मिळते. उपलब्ध पाणी मोठ्याच शेती आणि उद्योगासाठी पाण्याचा बेसुमार वापर होत आहे. उरसा योग्य प्रकारे होत आहे. परंतु धरणे, कालवे, विहिरी याला पाण्याचे पुनर्भरण होत नाही ते वाढविणे आवश्यक आहे. त्यासाठी जनमानसात जाऊन लोकांचे प्रबोधन करणे गरजेचे आहे. पाण्याचा उरसा आवश्यक तेवढा करून पाणी वापरण्याबद्दल कठोर कायदे करून त्याची अंमलबजावणी होणे आवश्यक आहे. अगोदरच राज्यातल्या पाणी प्रश्न घटला आहे. छान्या पाण्याला पिण्यायोग्य बनविण्याचे प्रयत्न आज सुरू आहेत परंतु ते फार खर्चिक असल्याने आरम्भाने परवडणार नाही. म्हणून उपलब्ध पाण्याचा वापर योग्य प्रकारे करणे गरजेचे असल्याने जलसाक्षरता आणि जलव्यवस्थापन करताना काय करावे लागेल याचा आढावा प्रस्तुत शोधनिबंधात घेण्याचा प्रयत्न केलेला आहे.

जलसाक्षरता व जलव्यवस्थापन कसे करावे हे प्रमुख उद्दिष्ट समोर ठेवून प्रस्तुत शोधनिबंध तयार केलेला आहे. प्रस्तुत शोधनिबंध तयार करताना दुय्यम स्त्रोतांचा आधार घेण्यात आलेला आहे.

जलसाक्षरता व जलव्यवस्थापन

निसर्ग आणि मानव यांच्यामधील परस्पर सामंजस्य दिवसेंदिवस कमी होत चालले आहे. औद्योगिक क्रांतीनंतर हा संघर्ष अधिक तीव्र होत गेला. पर्यावरण साक्षरतेची गरज औद्योगिक क्रांतीनंतर जलसाक्षरतेच्या क्षेत्रात फार महत्त्वाची समजली जाऊ लागली. कारण सहयोग व सहकार्याऐवजी विनाशाकडे जाणाऱ्या संघर्षाने पृथ्वीतलावरील जिवंतपणाच वंशंस धरला आहे. पाण्यामुळे झालेले मानवी जीवन विनाशाच्या अत्यंत धोकादायक वळणावर येऊन थांबले आहे. पाण्याचे संग्रणे म्हणजे मानवी जीवनाचा अंत होणे होय. भारतात लोकसंख्येबाहेरबरोबर पाण्याचा वापरही मोठ्या प्रमाणात वाढला आहे. या वाढत्या लोकसंख्येला स्वच्छ व शुद्ध पिण्याच्या पाण्याचा पुरवठा करणे अवघड झाले आहे. मानवां शरीराला दररोज पाच लिटर पाण्याची आवश्यकता असते. तसेच एका व्यक्तीला दररोज सरासरी चाटोस लिटर पाणी वगवेगळ्या कामासाठी लागते. त्यामध्ये स्वयंपाकासाठी, धार्मिक कार्यासाठी, भांडे धुण्यासाठी, कपडे धुण्यासाठी, शौचालयासाठी, स्नानासाठी इ. कामासाठी मानवास दररोज पाणी लागते.

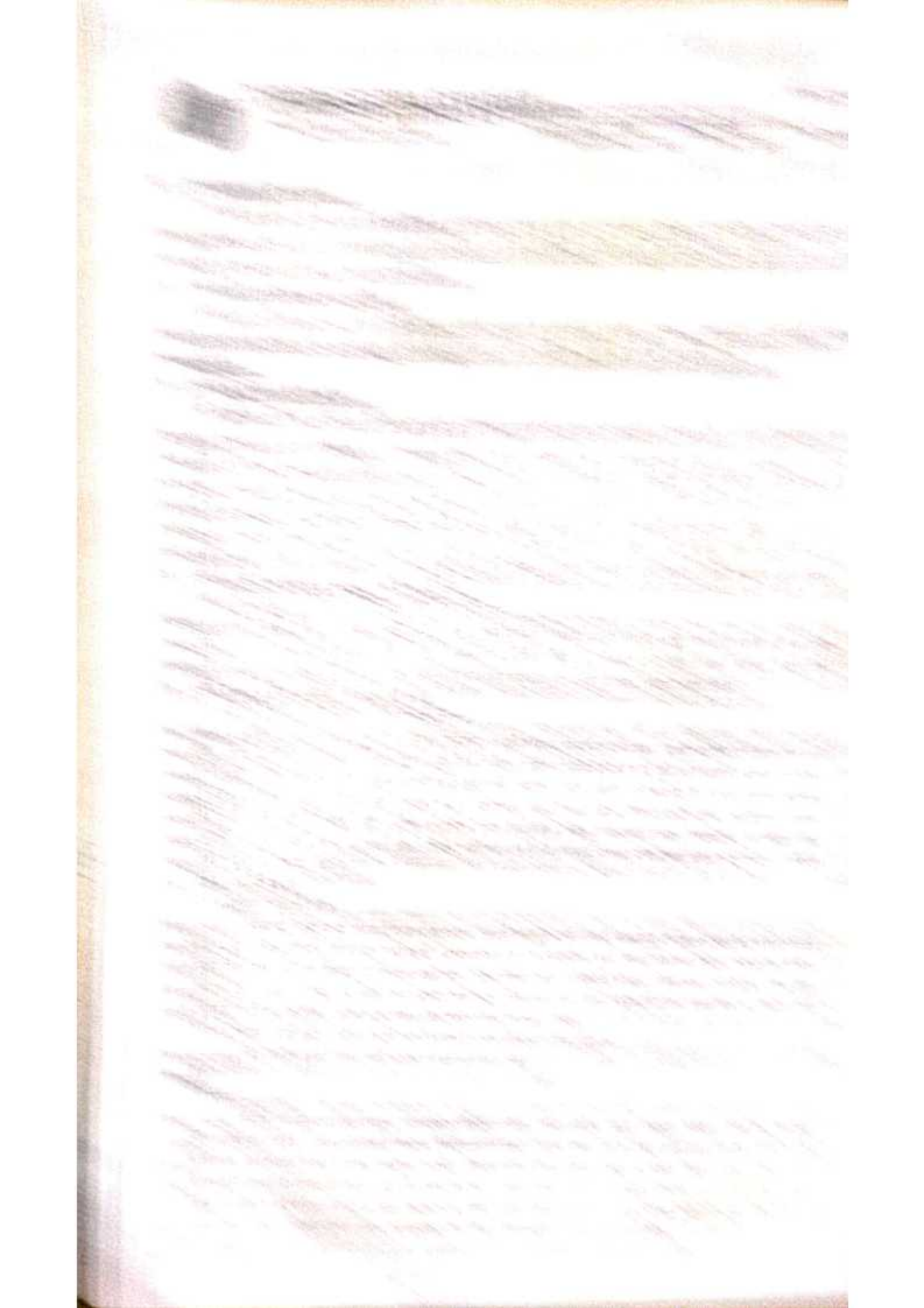
पाणी समस्या ही फक्त एक जिल्हाची, राज्याची अथवा देशाची समस्या राहिली नाही तर तिला जागतिक स्वरूप प्राप्त झाले आहे. पृथ्वीवर भरपूर पाणीसाठी आहेत, ते कधीही कमी पडणार नाहीत असे सर्वांना वाटत होते, परंतु जसजसा औद्योगिक विकास होऊ लागला, वाढत्या लोकसंख्येमुळे पाण्याचा वापर होऊ लागला तसा मुबलक पाण्याबद्दलचा गोड गैरसमज दूर झाला. तसे पाहिले असता पाण्याचा सर्वाधिक वापर शीतीसाठी केला जातो. त्यानंतर कारखाने आणि घरगुती वापर जलविद्युत निर्मितीसाठीही पाणी मोठ्या प्रमाणात लागते. आपल्या राज्याचा विचार केला तर एकूण पावसाचे प्रमाण पुरेसे आहे. पण विभागनिहाय पडणारे पाणी साठवून ते अधिकाधिक क्षेत्राला पुरवता आले पाहिजे, हे आपल्याला अजूनही पाण्याचे महत्त्व म्हणावे तसे पटलेले दिसत नाही.

जलसाक्षरता**१) पावसाच्या पाण्याचे नियोजन**

पावसाच्या पाण्याचे नियोजन करणे हे आजच्या काळाची गरज आहे. माघा ते पायघा या उपचार पद्धतींवर आधारित पाणलोट व्यवस्थापनाचे शास्त्र आणि तंत्र सर्वसामान्यांना अगदी अशिक्षितांसाठी समजावे असे आहे. डोंगरमाथ्यावर पाऊस पडल्यानंतर पावसाचे पाणी पायघापर्यंत कसे वाहत येते त्याचे योग्य नियोजन म्हणजे अनघड दगडी बांध, सलग समतल घर, गंधियन बंधारा, वळण बंधारा, कोल्हापुरी बंधारा, सिमेंट नाली बंधारा, वनवाई बंधारा, मातीनाला अशा विविध प्रकारच्या पाणलोट उपचार पद्धतीने पावसाच्या पाण्याचे नियोजन केले जाते.

२) पाण्याचा ताळेबंद अर्थात घोंटर बजेटिंग

पाण्याचा ताळेबंद ठेवणे आता अनिवार्य झाले आहे. पडणाऱ्या पावसाचे पाणी तसेच भूगर्भातील उपलब्ध पाणी ही खाजगी व नदी पात्रे शासनाच्या नियमांचा ताळेबंद मांडून पाणी वापरता नियोजन करावे. यासाठी पुढील विषयांचे जागरण आवश्यक आहे. पाण्याचा ताळेबंद या घटकांचा अंतर्भाव करणे



Impact Factor - 6.293



2019-20



Aayushi
International Interdisciplinary
Research Journal (AIIRJ)

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

Special Issue No.75

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि एकविसावे शतक

Editor

Dr. Lahu Waghmare

Executive Editor

Dr. Anil Singare

Dr. Arvind Kadam

Co- Editor

Dr. Omshiva Ligade

Prof. Amol Pagar

IMPACT FACTOR

SJIF 6.293

For details Visit our website

www.aiirjournal.com

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukambud Tal. Akkhol Dist. Nashik



~~Copyright of this Special Issue will be transferred to the publisher, who will be responsible for all aspects of the journal, including printing, copying, scanning, etc. All rights reserved. Without prior permission.~~

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal

ISSN 2548-6386

Special Issue No. 5

Chief Editor : Pramod P. Damilak

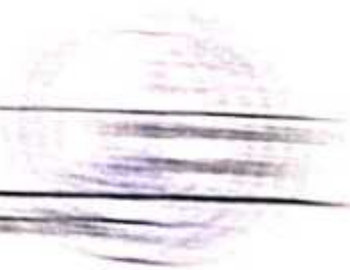
Disclaimer

Research papers published in the Special Issue are the sole responsibility of the authors. Authors are solely responsible for their publications. The publisher and the editor of this special issue are not responsible for any error.

[Faint, illegible text or signature at the bottom right of the page.]



| Sr.No. | Name Of Author | Title Of Paper | Page No. |
|--------|-------------------------------|---|----------|
| 19 | डॉ. आर.बी. माडळे | भारतीय लोकशाहीरता अद्वितीयकरून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचार | 79 |
| 20 | डॉ. कैनास पाळणे | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे विचार आणि आजचा तसण | 84 |
| 21 | डॉ. सुदाम फड | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक कार्य | 87 |
| 22 | गोतमकुमार नामनाथराव कांबळे | 21 वे शतक आणि भारतीय संविधान | 89 |
| 23 | डॉ. विष्णु एकनाथ गुमटकर | 21 वे शतक व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे अर्थिक विचार - एक अध्ययन | 94 |
| 24 | डॉ. हरी साधु वाघमारे | टागोर यांचे प्रकल्प : एक पाउती निर्माव | 99 |
| 25 | हर्षवर्धन संदिपान कोल्हापुरे | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे राजकीय विचार | 105 |
| 26 | श्रीमती जनाबाई देवराव धुते | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शिवाग्रविषयक कार्य व विचार | 109 |
| 27 | डॉ. किसन रामराव पालके | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे परकाशितेतील योगदान | 111 |
| 28 | कु. क्षितीजा तहू वाघमारे | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शिक्षणविषयक विचार आणि २१व्या शतकातील वास्तव | 114 |
| 29 | सीमा बाताजी चव्हाण | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्त्री सुधारणाविषयक विचार व कार्य | 117 |
| 30 | प्रा. मधुबाला गंगाधर हुडगे | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : सर्वोन्मुखी विषयक विचारांचा प्रासंगिकता | 121 |
| 31 | डॉ. प्रकाश काशिनाथराव मोरखंडे | 21 वे शतक आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शिक्षणविषयक विचार आणि कार्य | 124 |
| 32 | प्रा. पांडुरंग भिवाजी गोरे | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : सामाजिक व धार्मिक विचारांचा मागोवा | 130 |
| 33 | प्रा. एस. आर. हावळे | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि ओबीसींचे आरक्षण | 134 |
| 34 | डॉ. बी. व्ही. पुन्सागोर | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कालीन सामाजिक परिस्थिती ते धर्मपरिवर्तन | 137 |
| 35 | प्रा. राजेंद्र मुंडे | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा शिक्षण विचार | 140 |
| 36 | डॉ. रत्नाबाई देवराव पालकर | २१ वे शतक आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचार | 144 |
| 37 | डॉ. संबोधी एम. देशपांडे | २१व्या शतकातील स्त्रीयांची प्रगती व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान | 148 |



Several lines of text at the top of the page, which are heavily blurred and mostly illegible.

The main body of the page contains a large block of text that is extremely blurry and illegible. The text appears to be organized into several paragraphs, but the individual words and sentences cannot be discerned.





Handwritten text at the top of the page, possibly a header or title.

Handwritten text in the upper middle section of the page.

Handwritten text in the middle section of the page.

Handwritten text in the lower middle section of the page.

Handwritten text in the lower section of the page.

Handwritten text in the lower section of the page.

Handwritten text in the lower section of the page.

Handwritten text in the lower section of the page.

Handwritten text at the bottom of the page, possibly a signature or footer.



जातीव्यवस्था काशी संपत्ति येईल ?

पहिला अडथळा म्हणजे जातिव्यवस्थेचा प्राण असलेली श्रेणीबद्ध विषमता होय. जेव्हा लोक उच्च आणि निम्न अशा दोन वर्गांत विभागलेले असतात तेव्हा वरच्या वर्गाशी संघर्ष करण्याच्या उद्देशाने निम्न वर्गाला संघटीत होणे सोपे जाते. परंतु येथे निम्न जातीचा एकच वर्ग नाही हा वर्ग निम्न आणि अतिनिम्नांचा असतो. हे अतिनिम्नांसोबत संघटीत होऊ शकत नाही. निम्नांना अशी भीती वाटत असते की जर तो अतिनिम्नांचा स्तर उंचाविण्यात यशस्वी झाला तर त्याला आणि त्याच्या जातीला समाजात असलेले वरचे स्थान गमवावे लागेल.

दुसरा अडथळा असा की आपले समाजहित कशात आहे हे ओळखता न आल्यामुळे एकत्रितपणे कृती करण्याच्या प्रसंगी भारतीय समाज पंगु ठरतो. प्लेटोने म्हणूनल्याप्रमाणे सामाजिक संघटन अंतिमतः जीवित सादऱ्यांच्या जाणीवेवर अवलंबून असते. जर आपण आपल्या सादऱ्याबद्दल अनभिज्ञ अरू, आपले हित कशांत आहे हे जर आपणास माहित नसेल तर सर्व बाबींसाठी आकस्मिकता आणि लहरीपणा यांच्या कृपेवर अवलंबून राहावे लागेल. जोपर्यंत आपल्याजवळ सुपरिणामाबाबत बुद्धिवादी निर्णयाचे निकष नसतील कोणत्या शक्यतांना आपण चालना द्यावी हे आपल्याला ठरविता येणार नाही. प्रश्न असा आहे की न्याय आणि एकजिनसी समाज निर्माण करण्याच्या ध्येय प्राप्तीच्या मार्गातील जातीबद्ध रचनेचा अनुलंघनीय अडथळा दूर केल्याशिवाय भारतीय समाज हे ध्येय सध्या करू शकेल काय ? जातीबद्ध समाजरचना अस्तित्वात असतांना एकजिनसी समाज निर्माण होणे शक्य आहे काय ? चुकीचे मूल्यमापन आणि चुकीचे वास्तवदर्शन यामुळे सर्व भारतीयंच्या मनात गोंधळ उठलेला आहे आणि त्यांना चुकीच्या दिशेने नेले आहे असंघटीत आणि खंडित समाज विविध प्रकारचे प्रारूपे आणि प्रमाण निर्धारित करतो. अशा परिस्थितीत जातीच्या प्रश्नामुळे प्रत्येक भारतीयाला मनाची सुसंगतता प्राप्त करणे अशक्यप्राय झाले आहे.

शिक्षणामुळे जातीचा विध्वंस होऊ शकतो काय ?

याचे उत्तर होय त्याचप्रमाणे नाही असे आहे. आज जे शिक्षण दिले जाते तेच जर दिले जाणार असेल तर त्या शिक्षांचा जातीवर काहीच परिणाम होणार नाही. ती ज्या स्वरूपात आहे त्याच स्वरूपात राहिल. ब्राम्हण जात याचे ज्वलंत उदाहरण आहे. तिच्यातील शतप्रतिशत शिकलेले आहेत, नव्हे तिच्यातील बहुसंख्य उच्चशिक्षित आहेत, असे असतानाही एकही ब्राम्हण जातीविरुद्ध असल्याचे दिसत नाही. वास्तविकता अशी आहे की वरच्या जातीतील शिक्षण घेतलेल्यांना व जातीव्यवस्था टिकून राहावी असे प्रकर्षाने वाटत असते. कारण हेच शिक्षण त्याला मोठे पद उपलब्ध होण्याची अधिकची संधी देत असल्यामुळे जातीव्यवस्था कायम ठेवण्यासाठी तो अधिक रची घ्यायला लागतो. या दृष्टीने पाहता जातीव्यवस्था समाप्त करण्यासाठी शिक्षण उपयुक्त साधन थरत नाही. ही झाली शिक्षणाची नकारात्मक बाजू. भारतीय समाजाच्या खालच्या स्तरातील लोकांना शिक्षण दिले तर हे शिक्षण जातीव्यवस्थेला विरघळून टाकेल ते त्यांच्यात बंडखोरीची प्रवृत्ती निर्माण करील त्यांच्या सद्यः परिस्थितीतील अज्ञानामुळे ते जातीव्यवस्थेचे समर्थक बनलेले आहेत. एकदा त्यांचे डोळे उघडले तर ते जातीव्यवस्था नष्ट करण्यासाठी उद्युक्त होतील.

वर्तमान घोरणातील प्रमुख दोष असा की शिक्षण हे मोठ्या प्रमाणावर दिले जात असले तरी भारतीय समाजाच्या वाजवी वर्गातील लोकांना दिल्या जात नाही. भारतीय समाजातील ज्या लोकांच्या जातीव्यवस्थेत विहित स्वार्थ दडलेला आहे आणि जिच्यामुळे त्यांना फायदा होतो त्याच स्तरातील लोकांना जर तुम्ही शिक्षण

दिले तर जातीयवस्था अधिक मजबूत होईल, असे न करता भारतीय समाजाच्या खासच्या स्तरातील जातीयवस्था उध्वस्त करू इच्छितात त्यांना जर शिक्षण दिले तर जातीयवस्था निश्चितच उध्वस्त होईल. प्रत्येक वेळी कोणतेही तारतम्य न पाळण्याचे भारत सरकार आणि अमेरिकन फाउंडेशनचे शिक्षणालय नष्ट करण्याचे धोरण, जातीयवस्था मजबूत करित आहे. श्रीमंताला अधिक श्रीमंत आणि गरिबाला अधिक गरिब करणे हा काही दारिद्र्य नष्ट करण्याचा मार्ग नाही. जातीयवस्था नष्ट करण्यासाठी शिक्षणाचा साधन म्हणून उपभोग करण्याच्या धोरणाला ही गोष्ट लागू होते. जातीयवस्था कायम ठेवू इच्छिणाऱ्यांना शिक्षण देण्यामुळे भारतीय लोकशाहीचे भवितव्य उज्ज्वल होणार तर नाहीच, उलट हे धोरण भारतीय लोकशाहीला मोठ्या संकटात टाकेल.

निष्कर्ष :-

भारतीय लोकशाहीच्या पुढे अनेक प्रकारची आव्हाने होती. डॉ. बाबासाहेबांनी त्यांच्या वैयक्तिक जीवनात प्रत्यक्ष अनुभवली. भारतीय समाजव्यवस्था ही जातीयतेने बरबटलेली होती आणि अशा समाजव्यवस्थेचे स्वरूप किती भयंकर होते. याचा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी अगदी जवळून अभ्यास केला आणि भारतीय संविधानाद्वारे सर्वांना समान अधिकार प्राप्त करून देण्याचे महान कार्य केले. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर सत्याच्या मार्गावर चालणारे खरे मार्गदर्शक होते. श्रष्टाचार, अनीती, अत्याचार, अन्यायास त्यांचा प्रखर विरोध होता. जातिभेदाच्या ते विरोधात होते. जातिभेद म्हणजे समाजाला लागलेली कीड असे ते मानत. ही सामाजिक कीड नष्ट केल्याशिवाय समाज एकसंध होणार नाही असे ते समजत. डॉ. आंबेडकर म्हणजे तळागाळतील लोकांना बौद्धिक व सामाजिक गुलामगिरीतून मुक्त करून त्यांना मंत्र देणारे एक पथदर्शक होते. शिकल्याशिवाय आपल्यावरील न्याय, अन्याय, आपले हक्क ही आपल्याला कळत नाहीत अशा प्रकारे त्यांनी सामाजिक क्रांतीचे रणशिंग समाजात फुंकले व समाजपरिवर्तन केले. भारतीय लोकशाहीच्या भविष्याबद्दल डॉ. बाबासाहेबांनी जो भूमिका मांडली ती अतिशय प्रखर व सत्य स्वरूपाची होती. भविष्यात त्यांनी भारतीय संविधान लिहिताना स्वतंत्र, समता, व बंधुतेचा पुरस्कार केला व आज समाज चांगले जीवन जगत असल्याचे दिसून येते.

संदर्भ ग्रंथ :-

- 1) धनंजय कीर, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई
- 2) गर्ग स.मा., डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे व्यक्तिमत्व आणि विचार, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर गौरवग्रंथ, प्रचार प्रकाशन कोल्हापूर
- 3) डॉ. डी.एम.तंगलवाड आणि डॉ. रवी एन.सरोदे, युगपुरुष डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, शिवानी प्रकाशन, नांदेड.
- 4) विश्वरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या १२५व्या जयंतीनिमित्त संपादित, महामानवाचा महाग्रंथ, संपा. डॉ. दुष्मन्त मनोहर कटारे, यशोदीप पब्लिकेशन्स, २१७ नारायण पेठ, पुणे ४११०३०
- 5) कसबे रावसाहेब (२००१), डॉ. आंबेडकर आणि भारतीय राज्यघटना, सुगावा प्रकाशन, पुणे
- 6) राऊत अनंत (२०१०), भारतीयांचा पवित्र आचारग्रंथ भारताचे संविधान, रचना प्रकाशन, नांदेड.
- 7) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा विद्यार्थी व युवकांना संदेश, प्रकाशक, आंबेडकरवादी मिशन : विद्यार्थी व युवक संघ आंबेडकरवादी प्रकाशन, नांदेड.
- 8) drambedkarivichar.blogspot.com
- 9) <https://mr.m.wikiquote.org/>



2019-2020

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Volume: 08(1) | Issue: 01 | 2019
ISSN: 2349-5963 | E-ISSN: 2349-5971

Current Global Reviewer

UGC Approved International Research
Reference/Interdisciplinary Journal

Editor-in-Chief
Dr. Anil K. Mishra

Volume 08, Issue 01 | 2019
Published on April 2019

| Editorial Office Address: | EXECUTIVE EDITORS | |
|--|---|---|
| Sri Lanka Institute of Advanced Technological Education, Colombo | Dr. Chittaranjan Prasad Professor of English Bhambhani College, Jamshedpur Jharkhand, India | Dr. J. S. Jayaram Professor of English K. J. Somaiya Institute of Management, Mumbai, India |
| Contact: 011-26107770 Email: currentglobalreviewer@gmail.com | Dr. H. G. Ganesan Senior Lecturer Sri Lanka Open University Colombo, Sri Lanka | Dr. Prasad Kumar Senior Lecturer Sri Lanka Open University Colombo, Sri Lanka |
|  | Dr. Anand Kumar Senior Lecturer Sri Lanka Open University Colombo, Sri Lanka | Dr. P. S. Prasad Senior Lecturer Sri Lanka Open University Colombo, Sri Lanka |
| Publisher Sri Lanka Publication K. J. Somaiya Institute Contact: 011-26107770 | Dr. V. S. S. S. S. Senior Lecturer Sri Lanka Open University Colombo, Sri Lanka | Dr. S. S. S. S. Senior Lecturer Sri Lanka Open University Colombo, Sri Lanka |
| Rs. 400/- | Dr. Anand Kumar Senior Lecturer Sri Lanka Open University Colombo, Sri Lanka | Dr. S. S. S. S. Senior Lecturer Sri Lanka Open University Colombo, Sri Lanka |

www.rjournals.co.in



CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly
Issue XII

April 2020

Peer Reviewed
Indexed (SJIF)ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

Index

| Sr. No. | Article Title | Author | Page No. |
|---------|--|---|----------|
| 1 | Regular Exercise: A Need of Time | Dr. Nirajkumar N. Uplanchwar | 1 |
| 2 | Synthesis and characterization of Schiff base complex of d-block transition metal icon | Dr. J. H. Deshmukh ¹ , Vitthal K. Jadhav ² | 4 |
| 3 | खरगोन जिल्हे लत्रल निर्व्यवसाय मे कार्यशील पूंजी काविरलेवगात्मक अभ्यसन | विष्णुप्रसादबैसवार डॉ दिनेश्वरराव | 7 |
| 4 | स्त्री सबलीकरण काळाची गरज | डॉ. एस. पी. गावकवाड | 11 |
| 5 | पेशवेकालीन न्यायमुर्ती राम शास्त्री प्रभुने | डॉ. एन. जी. भद्रे | 15 |
| 6 | आयसीटी साधनसामुग्री जॉर्टस्, कॉमर्स आणि सायन्स कॉलेज- कराड आणि पाटण तातुका: एक अभ्यास | प्रा. अनित शिवाजीपाटील | 18 |
| 7 | स्वातंत्र्याचा जाहिरनामा : केसमुत्तिसुत | डॉ. बाळाजी मा. गडाडे | 20 |
| 8 | मनोरंजन | डॉ. सतीश नारायण लोमटे | 24 |
| 9 | मुळभूत हक्काच्या संरक्षणात सर्वोच्च न्यायालयाची भूमिका | प्रा. रविंद्र बाबुराव बायीसकर | 37 |
| 10 | आधुनिक स्त्री की रास्तान- "चाक" | डॉ. सुभाष इंगळे | 39 |
| 11 | भारतातील वाढती जाती धर्माधता : अतर्गत सुरक्षी समोरीत एक आख्यान | प्रा. डॉ. गुलाब हरि निकुम | 41 |

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tc. Mukhambar Dist. Nanded



मुलभूत हक्काच्या संरक्षणात सर्वांच्च न्यायालयाची भूमिका

डा. रविंद्र बाबुराव बावीसकर

विभाग प्रमुख संरक्षणशास्त्र, स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मुकामबाद, ता. मुल्होद, जि. नांदेड

संशोधना :

आधुनिक लोकशाही राज्यांमध्ये न्यायालयाच्या अधिकाराने आहे. याला हे एक संशोधन असून राज्याचे हक्क अबाधित राहणे या दृष्टीने काही अधिकार हक्कांच्या न्यायालयाच्या मध्ये आहेत. राजकीय शास्त्रज्ञांनी संशोधन करून घेतलेल्या शिनेच्या मुलभूत हक्कांचे संरक्षण करण्याचे काम न्यायालय करते. नोंद घेऊनच या कोणत्याही राज्याचे क्षेत्रच न्यायालयाच्या तैकी न्यायालयाच्या तैकी निवृत्तता या कामांसाठी फ्रेड कामेरी कोणत्याही यदी यानु या प्रस्ताव संशोधन संशोधन यत्नांच्या मुलभूत हक्कांच्या संरक्षणार्थ सर्वांच्च न्यायालयाची पुढील विचार करण्याची साठी

प्रस्तावना :

संस्थापक शासकांच्या आधारभूत घटकांसाठी सर्वांच्च न्यायालय हा एक महत्त्वाची घटक असून संविधानाच्या ३२ व्या कलमनुसार सर्वांच्च न्यायालय मुलभूत अधिकारांचे संरक्षक आहे. संशोधन, घटकांच्या अन्वये कोणत्याही संस्था अगर व्यक्ती यांच्याकडून मुलभूत अधिकारांचा अतिक्रम होणार नाही हे यत्नांचे कार्य सर्वांच्च न्यायालयाचे आहे. व मुलभूत सर्वांच्च न्यायालयाच्या उद्देशानेच विचार घेऊन करताना यालाच यदीने यत्नांच्यासाठी कोणत्याही संरक्षण यदी संशोधने करी, सर्वांच्च न्यायालयाच्या न्यायालयाच्या मुलभूत अधिकारांचे संरक्षण करण्याचे कार्य यदीने आहे. व त्याच बरोबर समाजाचे अधिकार आणि राज्याच्या मुक्तिसाठी हे मुलभूत अधिकार विस्तार ठरवा आहे हे यत्नांची जबाबदारी सर्वांच्च न्यायालयाच्या पर पाहणे लागणार आहे. मुलभूत अधिकारांचे संरक्षण करतानाच बरोबरच संरक्षण, परमादेश, प्रतिबंध, अज्ञेता, अधिकारांच्च अने रिट्स काढण्याचे अधिकार सर्वांच्च न्यायालयाचे आहे. तसेच १३९ अन्वये सर्वांच्च न्यायालयाचे रिट मंजूर करण्याचे अधिकार आहे. सर्वांच्च न्यायालयाचे सरळ न्यायालयाचे हा अधिकार न्यायालयाचे यत्नांच्च असायामुळे काढण्याचे आहे. व सर्वांच्च न्यायालयाच्या प्रारंभिक अधिकारांच्चचाय भाग मानव्यास करत नाही. परंतु याला एक महत्त्व मुलभूत संरक्षण यत्नांच्च आहे. सर्वांच्च न्यायालयाचे अधिकारांच्च यत्नांच्च यदीने आहे की या अधिकार होणाने सर्वांच्च न्यायालय मुलभूत अधिकारांच्च भाग मानव्यास संबंधित अन्वये यत्नांच्च यत्नांच्च यत्नांच्च यत्नांच्च यत्नांच्च यत्नांच्च यत्नांच्च संबंधिताला मुलभूत अधिकारांची अंमलबजावणी करण्याचे हक्क अन्वये अदेश देवून मुलभूत अधिकारांच्च संरक्षणाची जबाबदारी घार पाहणे. व आतापर्यंतची काही मुलभूत हक्कांच्या संरक्षणाची सर्वांच्च न्यायालयाची भूमिका पुढीलप्रमाणे.

संशोधन पेपरची उद्दिष्टे :

- १. मुलभूत हक्कांच्या बाबत सर्वांच्च न्यायालयाचे अधिकार क्षेत्र अभ्यासणे.
- २. सर्वांच्च न्यायालयाने मुलभूत हक्कांच्या संरक्षणार्थ बजावलेल्या भूमिकेचा अभ्यास करणे.
- ३. सर्वांच्च न्यायालयाने मुलभूत हक्कांच्या बाबत दिलेल्या निर्णयांचा अभ्यास करणे.

मुलभूत हक्कांच्या संरक्षणात सर्वांच्च न्यायालयाची भूमिका :

ओरिजनच्या मते, 'नागरीक व अल्पसंख्यकांच्या अधिकारांच्या संरक्षणार्थे कार्ये देवून सामाजिक कांतीच्या संरक्षणाची जबाबदारीच न्यायालयावर सोपवलेली आहे.' कलम ३२ च्या अधिकारांमार्फत सर्वांच्च न्यायालयाने निवारक विरोध अधिनियम (चह १४) अन्वये ठरविला होला. तसेच घटका कलम १९ व ३१ च्या विरोधी केंद्र सरकारने केलेले अनेक कार्ये घटकाबाध ठरविले होते. विंगभुषण विरूद्ध दिल्ली राज्यसरकार हा घटकांमुळे न्यायालयाने घेतलेल्या स्वातंत्र्याच्या बाबत निर्णय दिला. त्यावेळीचे मुख्य राज्य विरूद्ध मुख्य शिक्षण समान हा घटकांमुळे अल्पसंख्यकांचे

[The page contains approximately 30 lines of text that has been completely obscured by heavy black horizontal scribbles. The text is illegible.]

[A small, illegible scribble at the bottom center of the page, possibly a signature or initials.]